सर्वमनोकामना पूर्ति विशेषांक
अक्टूबर-2020
मूल्य – 40/-
वर्ष 11
अंक-1
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
दरिद्रता विनाशक प्रयोग
धन्वन्तरी साधना
सौन्दर्य पारिजात साधना
दीपावली–
ऐश्वर्य महालक्ष्मी पूजन विधान

धनाध्यक्ष कुबेर प्रयोग

धन त्रयोदशी का दिन अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त करने,
लक्ष्मी का अक्षय भंडार प्राप्त करने हेतु,

लक्ष्मी के प्रिय तथा देव कोषाध्यक्ष कुबेर की साधना करने का है,

इस दिन जो कुबेर साधना विधि सहित सम्पन्न करता है,
उस पर कुबेर की धन रूपी अमृत वर्षा निरंतर होती रहती है।

इस विशेष मुहूर्त में तो कुबेर मंत्र की ग्यारह माला जप करने से ही मंत्र सिद्ध हो जाता है, इसमें साधक प्रात: जल्दी उठ कर स्नान कर, शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर पूर्व की ओर मुँह कर बैठे, अपने सामने मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'कुबेर यंत्र' स्थापित करें, तत्पश्चात् एक घी का दीपक और अगरबत्ती लगाएं, यंत्र की पूजा अक्षत, पुष्प से करें और गुड़ का नैवेद्य चढ़ाएं, तत्पश्चात् कमल गट्टे की माला से कुबेर मंत्र का पांच अथवा ग्यारह माला मंत्र जप करें।

मंत्र

।। ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्यादि
पतये धन धान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा।।

अब मंत्र जप के पश्चात् लक्ष्मी आरती सम्पन्न कर यंत्र के सामने चढ़ाया हुआ नैवेद्य ग्रहण करें, यंत्र को उसी स्थान पर स्थापित रखें।

साधना सामग्री : 450/-

आनो भ्रद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः॥

ज्ञान, यश, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए : सरस्वती सिद्धि प्रयोग

यौवन एवं सौन्दर्य प्राप्ति को साकार करें: सौन्दर्य पारिजात सा.

लक्ष्मी का अक्षय भंडार प्राप्त करने हेतु : धनाध्यक्ष कुबेर प्रयोग

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

स्तोत्र

दीपावली

योग

आयुर्वेद
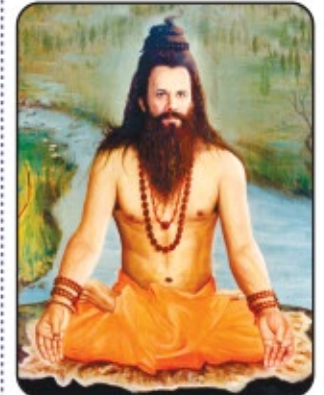
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
दीवान पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड
A-6/1, मायापुरी, फेस-1,
नई दिल्ली-110064
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय
हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति	40/-
वार्षिक	405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन नं. : 011-79675768, 79675769, 27354368

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : **http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org** E-mail : **nmsv@siddhashram.me**

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

॥ ॐ चत्वारित्वा यहिर्नेवदे वद वदं सहितवैं क्षणत्वं सह:॥

हे गुरुदेव! आप कुछ ऐसा प्रदान करें कि मैं निरन्तर आपके सम्पर्क में रह सकूं, आपको देख सकूं, आपका पथ-प्रदर्शन पा सकूं।

सेवाधर्म: परमगहन: योगिनामप्यगम्य:

बहुत ही धीर-गम्भीर मुद्रा में बैठे हुए थे 'ऋषि शौनिक' और सामने बैठा था विशाल शिष्य-वृन्द। सभी के मन में एक कौतूहल था कि अकस्मात् गुरुदेव ने हम सभी को क्यों एकत्र किया है यहाँ? आज तक तो शिक्षा प्रदान करने के अतिरिक्त कभी इस तरह सभा का आयोजन नहीं हुआ था... तभी ऋषि शौनिक की ओजस्वी वाणी गूंजी–'मेरा इस पृथ्वी लोक से प्रस्थान करने का समय सन्निकट है, अत: कल मैं अपने उत्तराधिकारी का चयन करूंगा, जिससे भविष्य में भी निर्बाध इस आश्रम का संचालन होता रहे।' गुरुदेव के इन शब्दों को सुनकर समस्त शिष्य स्तब्ध हो गये, उनकी स्तब्धता को भंग करते हुए गुरुदेव ने पुन: कहा–'मैं श्यामपट्ट पर एक वाक्य लिख रहा हूं, जो इसका अर्थ स्पष्ट कर देगा, वही मेरा उत्तराधिकारी होगा।' श्यामपट्ट पर लिखे वाक्य को एक-एक कर सभी शिष्यों ने पढ़ा, लेकिन उसका अर्थ समझने में असमर्थ रहे।

आश्रम के एक कोने में बैठा हुआ एक युवक, जो पिछले पन्द्रह वर्षों से लगातार धान कूटने का कार्य कर रहा था, क्योंकि जिस दिन वह आश्रम में आया था, उसे गुरुदेव ने आज्ञा दी थी कि, 'तुम उस कोने में बैठकर भण्डारे के लिए धान कूटोगे, जब मैं आवश्यक समझूंगा, तुम्हें बुला लूंगा।' जब उसे पता चला कि गुरुदेव ने परलोक गमन की घोषणा की है, तो उससे रहा नहीं गया, लेकिन गुरु-आज्ञा में बंधा हुआ... बेबस...आंसु बहाता धान कूटता जा रहा था। तभी उसको लगा–गुरुदेव उसे पुकार रहे हैं... और सारे काम छोड़ कर दौड़ पड़ा गुरु से मिलने के लिए... लेकिन रोक दिया गया... कारण पूछा, तो पता चला कि वहां लिखे वाक्य का अर्थ जो समझ सकेगा, गुरुदेव उसी से मिलेंगे। उत्सुकता से भरा वह श्यामपट्ट के पास पहुंचा और जैसे ही उसने वाक्य को पढ़ा मदमस्त हो कर नृत्य करने लगा, हंसने लगा, उछलने लगा... दो चार शिष्य उसे पकड़ कर ऋषि के पास ले गये और विनती की–'इस नासमझ को क्षमा करें, आपके द्वारा लिखे वाक्य को पढ़कर यह ऐसी क्रियाएं करने लगा है।' ऋषि शौनिक ने उसे अपने पास बुलाया और समस्त शिष्यों के सामने घोषणा की–'सही अर्थों में मेरे लिखे वाक्य को इसी ने समझा है, क्योंकि गुरु के वचन अर्थान्वेषण के लिए नहीं, हृदयंगम करने के लिए होते हैं, जैसा कि इसने किया है, अत: मैं अपनी समस्त तपस्या व ज्ञान की चेतना ऊर्ध्वपात के माध्यम से इसे प्रदान कर अपना उत्तराधिकारी घोषित करता हूँ।' सेवा कोई आवश्यक नहीं, कि गुरु के पास रहकर ही की जाय, मीलों दूर रहकर, गुरुत्व का चिन्तन करते हुए भी सेवा की जा सकती है, जिसमें न तो प्रदर्शन हो, न ही स्वार्थ सम्वेदन; अपने आप को समर्पित कर किया हुआ कोई भी कार्य गुरु सेवा होती है... और तब गुरु की प्रसन्नता स्वत: प्राप्त हो जाती है।
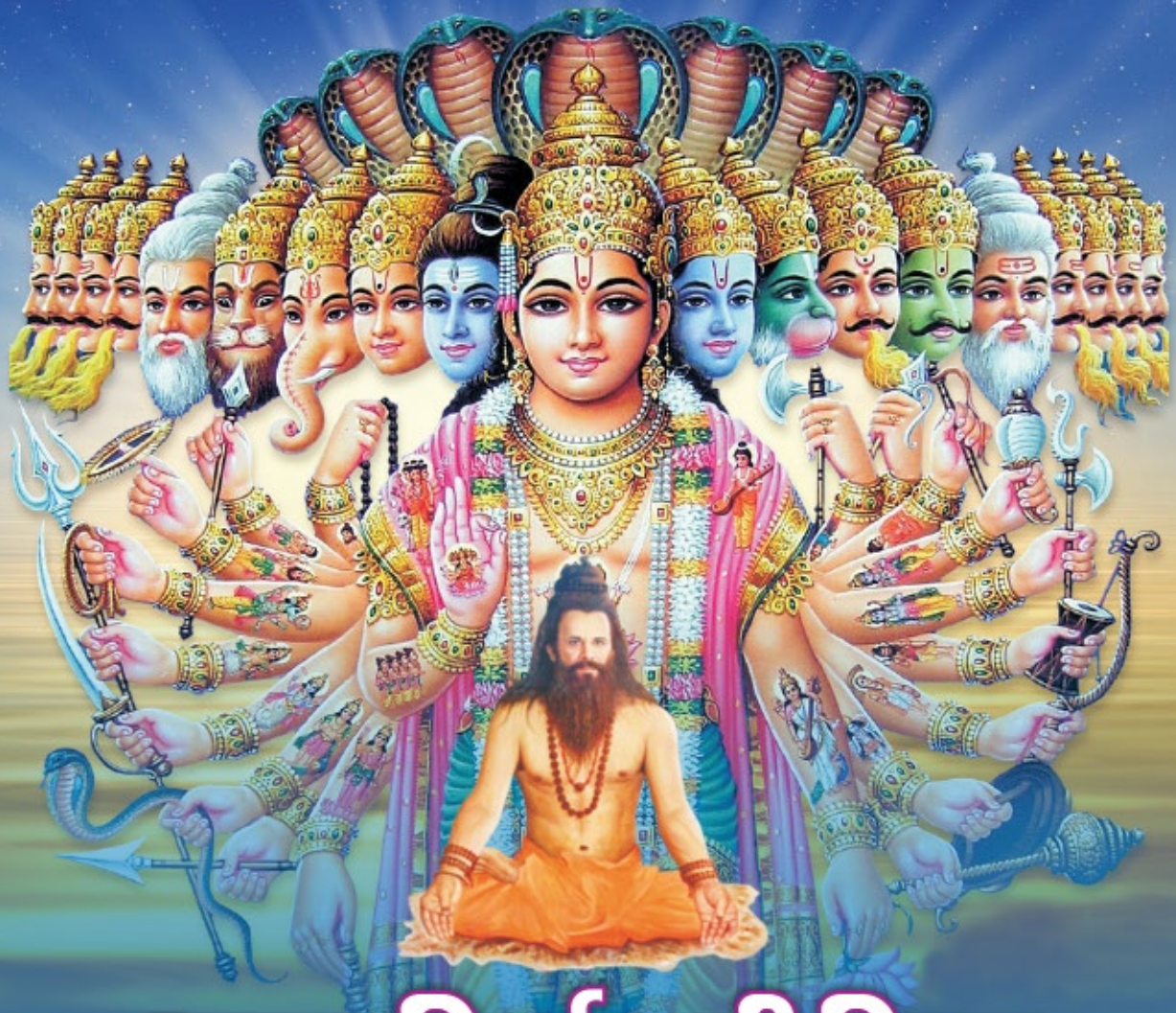
अणु परिवर्तन की क्रिया

साधना जहां परिवर्तन की एक धीमी क्रिया है वहीं दीक्षा तत्काल साधक के जीवन में ज्ञान अणु परिवर्तित कर देने की क्रिया है। जिसने अपने आप को गुरु के भीतर समाहित कर लिया, वही शिष्य एकाकार होकर देवत्व प्राप्त कर सकता है, इन्हीं ओजस्वी भावों के साथ सद्गुरुदेव का यह विशिष्ट प्रवचन. . .

निर्भीक वै पर्वतां पर मंजुल दोयं मंजुल पदाम सै वदाम सहितं
सदैवः दीर्घोप्रसन्नतां भव नेत्र रूपं निर्भीक मपरं शत्रुवै सदान्यं

कृष्ण यह श्लोक कह रहे हैं। जब भीष्म हाथ जोड़ कर खड़े हो गए और उन्होंने कहा कि ये कौरव और पांडव आपको नहीं समझ पाए, किसी ने आपको मित्र कहा, किसी ने शत्रु कहा, दुर्योधन ने आपको शत्रु कहा, अर्जुन ने सारथी कहा, युधिष्ठर ने आपको मित्र कहा, द्रौपदी ने आपको सखा कहा। मगर आप इन सबसे परे हैं। आपका जो वास्तविक रूप है वह मैं कुछ-कुछ अंश एहसास कर रहा हूं।

ये यथा मां प्रपजस्ते ते तथाव्यं भाजाम्यं

जो जिस ढंग से मुझे देखता है मैं उसी ढंग से उसके साथ हो जाता हूं। यदि कोई मुझे प्रेमी के रूप में देखता है तो मैं उसका प्रेमी हो जाता हूं। कोई मुझे शत्रु के रूप में देखता है तो मैं उसका शत्रु हूं, घोर शत्रु हूं। कोई मुझे मित्र के रूप में देखता है तो मैं उसका पूर्ण मित्र हूं, कोई सहायक के रूप में देखता है तो मैं सहायक हूं, जो जिस रूप में देखता है जो जिस रूप में मुझे भजता है, मैं उसी रूप में उसके साथ हो जाता हूं। तुमने मुझे देवत्व रूप में देखा है क्योंकि तुम्हारे ज्ञान नेत्र खुले हैं, इसलिए मैं तुम्हारे सामने साकार विराट रूप में हूं। अर्जुन ने मुझे सारथी के रूप में देखा है तो मैं सारथी हूं, दुर्योधन ने मुझे शत्रु के रूप में देखा है तो मैं शत्रु हूं। ठीक वही स्थिति जो गीता में कही कि ये यथा मां, प्रपजस्ते... जो जैसा मुझे देखता है, जैसी आंखों से, जिस चिंतन से, जिस विचार से, वह मुझसे वैसी ही उपलब्धि प्राप्त कर सकेगा।

अगर आप कहेंगे कि गुरुजी सामान्य ही हैं, तो आपको सामान्यता ही मिल पाएगी। यदि आप विशिष्टता देख पाएंगे तो आपको विशिष्टता मिल पाएगी। यदि आप प्रेम देख पाएंगे तो आपको प्रेम मिल पाएगा। आप कुछ नहीं देख पाएंगे तो आपको कुछ नहीं मिल पाएगा।

मैं तो उसी जगह खड़ा हूं, आप किस रूप में मुझे देखते हैं वह आप पर निर्भर है और कोई रूप अपने आप में गलत नहीं होता। शत्रु रूप भी अपने आप में सही है, मित्र रूप भी सही है, प्रेम रूप भी सही है। हर चीज अपनी जगह सही है। आंख की जगह आंख सही है, पैर की जगह पैर सही है। आप कैसा चिंतन करते हैं उस पर सब निर्भर है।

कृष्ण ने भीष्म से कहा – यह महाभारत युद्ध जब मैंने प्रारंभ कराया तो हजारों आलोचनाएं हुई, मगर मैंने इसलिए करवाया क्योंकि पाप बहुत बढ़ गया था और उस समय युद्ध शुरू करवाया जब ग्रहण काल आरंभ हुआ, जिससे विजय पांडवों की ही हो।

ग्रहण काल का इतना महत्व है। मगर हम कितने विपरीत जा रहे हैं। ग्रहण काल में बैठ जाते हैं हाथ पर हाथ रखकर कि ग्रहण है अभी कुछ नहीं करना चाहिए। पानी भी नहीं पीना चाहिए, खाना भी नहीं खाना चाहिए, खाना पकाते नहीं है। लोग कुछ करते नहीं और घर में बंद होकर बैठ जाते हैं।

शब्द तो है ग्रहण – यानि स्वीकार करना और हमने उसे त्याज्य बना दिया, छोड़ दिया। बिल्कुल विपरीत ध्रुव पर हम चले गए। हमें ज्ञान ही नहीं रहा। इसलिए नहीं रहा कि बीच में कोई गुरु की कड़ी मिली नहीं जो समझा सके कि यह ग्रहण है, यह त्याज्य नहीं है।

राम जब युद्ध करते करते थक गए, पसीना आ गया तो उन्होंने मुड़कर के पीछे देखा, तो वहां गुरु विश्वामित्र खड़े थे। राम ने कहा कि मैं इस रावण

को तो मार नहीं सकता। मैं मारता हूं तो फिर से खड़ा हो जाता है।

विश्वामित्र ने कहा – तुम एक घड़ी ठहर जाओ। एक घड़ी का अर्थ है छत्तीस मिनट। एक घड़ी ठहर जाओ। ग्रहण काल प्रारंभ होने वाला है। उस समय ठीक नाभि में तीर तुम चलाओगे और शत्रु समाप्त हो जाएगा। छत्तीस मिनट तुम्हें ज्यों त्यों व्यतीत करने हैं। क्योंकि ग्रहण काल में ही तुम विजय ग्रहण कर पाओगे।

आप विश्वामित्र संहिता को पढ़ें और राम ने राजतिलक से पहले वशिष्ठ को प्रणाम नहीं किया। विश्वामित्र को प्रणाम किया कि आपने मुझे सही समय का ज्ञान दिया और यह समझाया कि ग्रहण अपने आपमें बहुत उपलब्धि परक चीज है, सब कुछ प्राप्त करने की क्रिया है, छोड़ने की क्रिया नहीं है।

और वास्तव में ग्रहण काल सब कुछ प्राप्त कर लेने का अद्भुत समय है, ऐसा समय जहां पराजय होती ही नहीं। मगर आप पर निर्भर है कि आप किस प्रकार से उन क्षणों का प्रयोग करते हैं। अब उस समय में आप आलोचनाओं को ग्रहण करना चाहें तो आलोचनाओं को ग्रहण कर लें। मन में शंकाएं होंगी तो आपको शंकाएं ही प्राप्त हो पाएंगी, ज्ञान प्राप्त करेंगे तो ज्ञान प्राप्त हो पाएगा।

श्री कृष्ण ने कहा कि मैं बार-बार जन्म लेना चाहता हूं और मनुष्य जीवन लेना चाहता हूं, गर्भ से जन्म लेना चाहता हूं, फिर नटखट बालक बनना चाहता हूं और मुस्कुराते हुए, हंसते हुए, खिलखिलाते हुए और वीरता से शत्रुओं को समाप्त करना चाहता हूं।

और मैं भी आपको ज्ञान देना चाहता हूं। मगर इसमें बहुत परिश्रम है बहुत, एक प्रकार का जूझना है। आप कुनैन लेंगे नहीं, इसलिए शक्कर में घोल करके मैं आपको कुनैन देने का प्रयास कर रहा हूं। मगर दूंगा जरूर जिससे कि आप सफलता प्राप्त कर लें।

आदमी का अर्थ समाप्त होने की क्रिया है। जब पैदा होता है तो पैदा होते ही वह कुछ मृत्यु की ओर सरक जाता है। किसी की उम्र मान लो साठ साल है तो ज्यों ही पैदा हुआ तो पांच मिनट बाद उस साठ साल में पांच मिनट कम हो गए। यानि वह सरकने लग गया मृत्यु की ओर। जीवन की ओर नहीं सरक पाया और एक दिन ऐसा आएगा कि वह मर जाएगा और एक दिन ऐसा भी आएगा कि लोग उसे भूल जाएंगे।

और भूलने के लिए हम पैदा हुए नहीं हैं और हम भूल गए तो हमारा जीव बेकार, आपके गुरु भी बेकार, आपका शिष्य बनना भी बेकार और मैं भी बेकार फिर। इसलिए कुछ ऐसा करें कि लोग याद रखें, आने वाली पीढ़ियां याद रख सकें।

और ऐसा तब हो सकता है जब आप देवत्व बन सकें। मनुष्य हों पर ऐसे मनुष्य हों जिसमें पौरुष हो, ताकत हो, जोश हो, जिसमें हिम्मत और साहस हो।

आपने पढ़ा होगा या सुना होगा कि राजस्थान में खाटु स्थान है। वहां श्याम कृष्ण की मूर्ति है। वहां पर हर वर्ष 2 लाख लोग एकत्र होते हैं। मगर वह कृष्ण की मूर्ति है ही नहीं। वह बब्रुवाहन की मूर्ति है। भीम का पुत्र घटोत्कच, घटोत्कच का पुत्र बब्रुवाहन या बरबरीक।

कृष्ण जानते थे कि बब्रुवाहन जैसा वीर संसार में है ही नहीं। अर्जुन तो इसके सामने तिनके की तरह है। उड़ जाएगा एक क्षण में और मुझे अर्जुन को विजय दिलानी है। अब कूटनीति मुझे क्या चलनी चाहिए?

उन्होंने बब्रुवाहन को बुलाया और कहा – तुम कैसे वीर हो? तुम वीर हो भी?

उसने कहा – मैं अभी आपको प्रमाण दे देता हूं।

उसने तीर उठाया और पीपल के बिखरे हुए पत्ते थे इक्कीस। एक तीर से इक्कीस पत्तों को छेद दिया और इक्कीसवां पत्ता कृष्ण के पैर के नीचे था। बब्रुवाहन ने कहा – श्री कृष्ण अपना पैर हटा लीजिए वरना आपका पैर भी छिद जाएगा। उसने इतने उड़ते हुए पत्तों को एक तीर से छेद दिया।

कृष्ण ने सोचा – पांडव नहीं टिक सकते इस बब्रुवाहन के सामने। संभव ही नहीं है क्योंकि यह कौरवों की तरफ है।

कृष्ण ने कहा – या तो तुम शत्रु बन जाओ या एक वरदान दो। दोनों में से एक काम कर लो।

बब्रुवाहन ने कहा – आप जो भी चाहें वह मैं कर लूंगा। आप चाहें तो मैं सबको अकेला समाप्त कर सकता हूं। इतनी ताकत मुझमें है और आप अगर कुछ मांगें मुझसे तो मैं देने को तैयार हूं। आप कृष्ण हैं और मैं जानता हूं कि आप क्या हैं। आप वरदान मांग लीजिए। जो आप मांगेंगे वह मैं आपको दूंगा।

कृष्ण ने कहा – मुझे तुम्हारा सिर चाहिए।

बब्रुवाहन ने कहा – इतनी सी बात है। मैं सिर दे देता हूं। मगर मैं यह चाहता हूं कि आप इतनी ऊंचाई पर मेरा सिर रखें कि मैं महाभारत युद्ध को देख सकूं। बस इतना ही आपसे चाहता हूं।

उसने अपना सिर काट करके कृष्ण के हाथ में दे दिया और कृष्ण ने कहा – तुम मेरा ही रूप बन करके इस संसार में पूजे जाओगे।

राजस्थान में खाटु एक जगह है। वहां पर कृष्ण की मूर्ति है और वास्तव में वह बब्रुवाहन की मूर्ति है जिसकी कृष्ण के रूप में आज भी पूजा होती है और आज भी वहां हर वर्ष कम से कम ढाई–तीन लाख लोग इक्कठे होते हैं।

यह वीरता का सर्वोच्च उदाहरण है। मनुष्य अपने आपमें इतना वीर बन सकता है, ताकतवान बन सकता है। फिर वह वृद्ध बनता ही नहीं।

वह वास्तविक पौरुष है और अस्सी साल की उम्र में भी एक पौरुषता आ सकती है, ताकत आ सकती है, क्षमता आ सकती है और वह हो सकता है, जब हम पुरुष से महापुरुष, महापुरुष से देवत्व बनें।

और देवत्व बनने की क्रिया इतनी आसान नहीं है। मैं सिर्फ कहूं उससे आप देवता नहीं बन पाएंगे। जब हमारे शरीर के अंदर जो अणु हैं, जब उन अणुओं को परिवर्तित किया जाएगा तब देवत्व स्थापन हो पाएगा और जब देवत्व स्थापन होगा तो साधना हो पाएगी। मनुष्य यों साधना कर ही नहीं सकता, क्योंकि उसका मन उसके कंट्रोल में नहीं आ सकता। आप इतने ऊंचे योगी नहीं हैं और योगियों के मन भी शांत नहीं हैं, योगी होने के बावजूद भी यह कोई जरूरी नहीं कि मन शांत रहे ही। भर्तृहरि ने कहा है घासफूस, पत्ते, हवा और पानी पीकर के भी वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रीं, गर्ग बैठे हैं, उनका मन भी चंचल रहता है तो गुरुदेव मेरा मन स्थिर कैसे हो पाएगा और आप कह रहे हैं कि अपना मन स्थिर करो। मैं यह कैसे करुंगा? उनके ही मन स्थिर नहीं हो पा रहे हैं जो घासफूस खाते हैं। मैं तो अन्न खाता हूं, दूध पीता हूं, घी खाता हूं तो मेरा मन शांत कैसे होगा?

मन शांत हो पाएगा, जब आपके अणु परिवर्तित हो पाएंगे। आपने अखबार में पढ़ा होगा कि भेड़ की अणुकृति लेकर पूरी की पूरी भेड़ बना दी नई, एक अणु को लेकर। उस भेड़ में से एक अणु निकाला, उसको दूसरी जगह बीजारोपण किया और ठीक वैसी की वैसी भेड़ बना दी और पूरे संसार में तहलका है कि पूरी की पूरी अगर एक भेड़ बना दी तो वैसा का वैसा आदमी भी बन जाएगा आपके अंदर से एक अणु निकाल करके। आपकी तरह ही बीस और व्यक्ति खड़े हो जाएंगे और पहचान नहीं सकेंगे कि असली व्यक्ति कौन है। पत्नी भी नहीं पहचान पाएगी कि इनमें से असली कौन है। इतनी क्रांति आ रही है और यह क्रांति इसलिए आ रही है कि अणु को पहचानना प्रारंभ कर दिया विज्ञान ने और हम उससे पहले ही अणु को पहचान गए थे। कणाद ने अणु की पूरी व्याख्या की है। कणाद ने और कुछ लिखा ही नहीं। उन्होंने कहा कि व्यक्ति देवत्व तब स्थापन कर सकता है जब उसके अणु परिवर्तित होंगे और हमारे अणु अगर राक्षसमय ज्यादा हैं तो हम राक्षस वृति के होंगे।

और हम हैं राक्षस वृति के। हमें स्वीकार करना पड़ेगा। हम केवल आलोचना करते हैं, गालियां देते हैं, मन में वितृष्णा रखते हैं, झूठ बोलते हैं, दूसरों के प्रति ईर्ष्या रखते हैं। राक्षस वृति अधिक है, देवत्व वृति बहुत कम है, आती है और मिट जाती है। स्थायी देवत्व वृति तब बन पाएगी जब हमारे अणुओं में परिवर्तन होगा।

यदि आपके अंदर हृदय या नई किडनी लगाएं तो केवल ब्लड टैस्ट ही नहीं होगा। 'ए' ग्रुप है या 'बी' ग्रुप है वह तो देखा ही जाएगा। उसके बाद मांस पिण्ड देखा जाएगा कि आपका मांस और जिसकी किडनी दे रहे हैं वह मांस एक जैसा है या नहीं। फिर
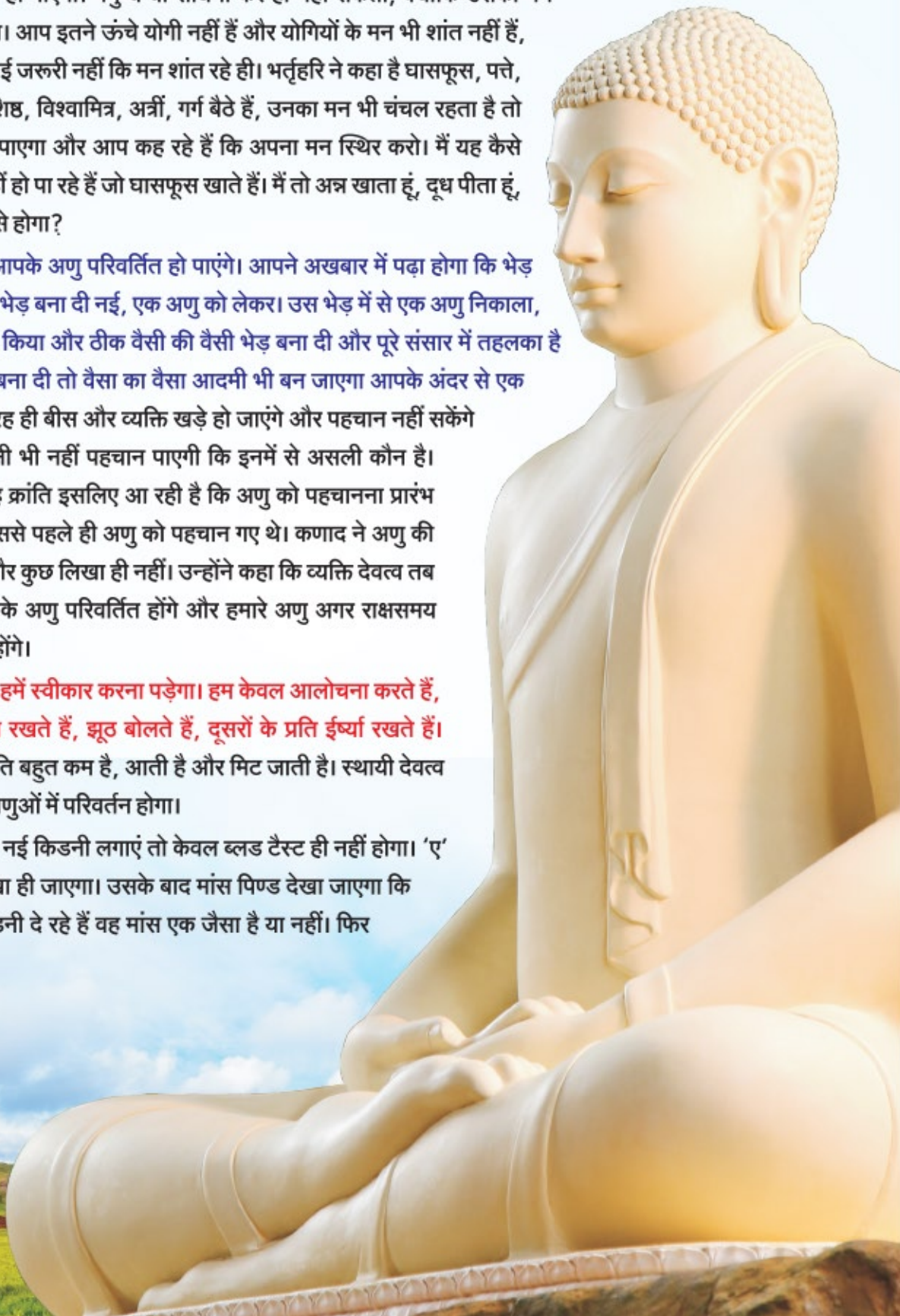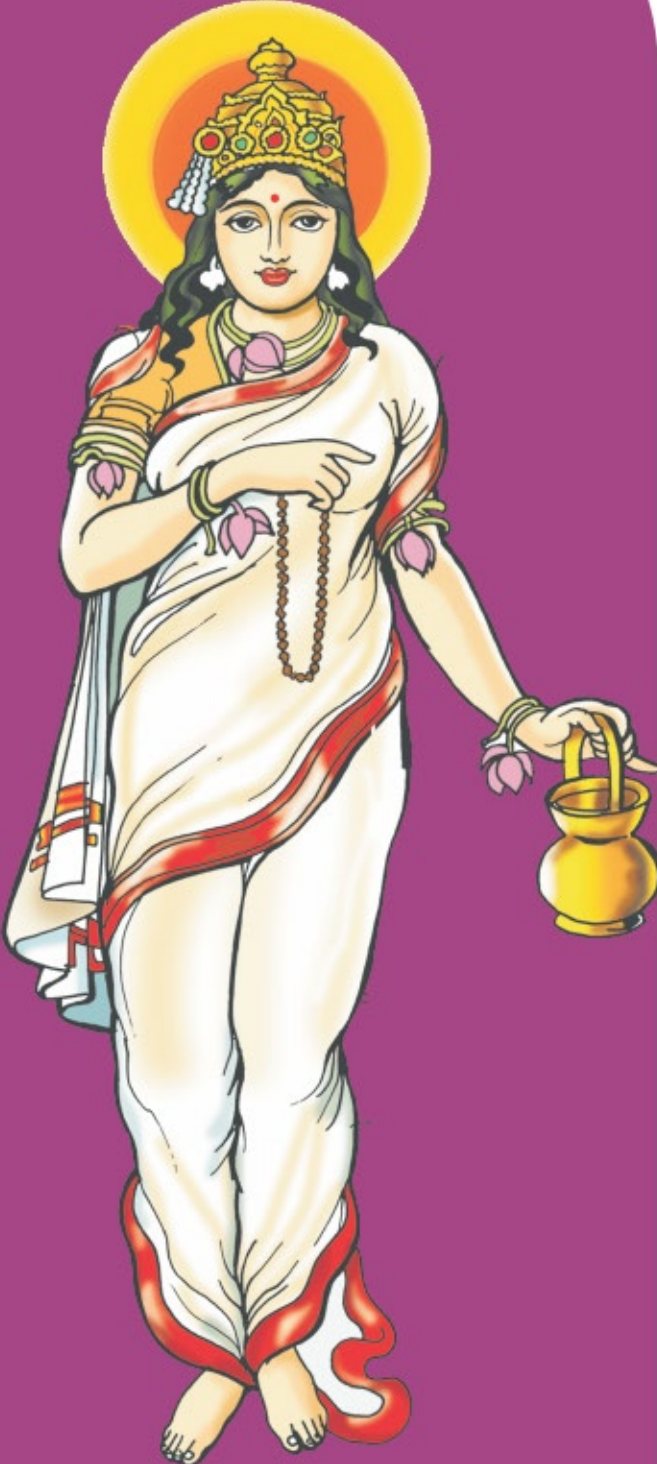
उसके बाद में जो मांस के अंदर अणु हैं वे मिलाएंगे। अणु मिलेंगे तो वह हृदय या किडनी आपमें समाहित हो पाएगी। अणु तक पहुंचना पड़ेगा।

केवल आपको दीक्षा देने से काम नहीं चल पाएगा। आपके अणुओं तक पहुंचने की क्रिया जो देगा तो आपको राक्षस भी बनाया जा सकता है और आपको देवता भी बनाया जा सकता है, पुरुष, महापुरुष और देवता। और देवता इसलिए कि हम वो सारे नक्षत्र देख लें, वह सारे ग्रह देख लें, सारा ब्रह्माण्ड देख लें इस मनुष्य शरीर में रहते हुए कि चंद्रलोक क्या है, शुक्रलोक क्या है, सूर्य लोक क्या है, कैलाश लोक क्या है, रुद्र लोक क्या है, हिमालय क्या है, विष्णु लोक क्या है, क्षीर सागर क्या है। अगर ये सब देखे ही नहीं तो फिर मनुष्य शरीर धारण ही क्यों किया और फायदा भी क्या हुआ।

धनवान कैसे बन सकते हैं, करोड़पति कैसे बन सकते हैं, योग्य संतान कैसे पैदा कर सकते हैं, वह सब क्षमता प्राप्त करना भी अणुओं के माध्यम से हो सकता है। देवताओं के यहां देवता पैदा हो सकते हैं। राक्षसों के यहां राक्षस ही पैदा होंगे। अधिकतर बेटा बाप की तरह ही बनेगा। अधिकतर चेहरा ऐसा ही बनेगा और वृतियां भी ऐसी ही बनेंगी। इसलिए अणुओं को परिवर्तित करने की जरूरत है।

किंतु अणुओं को परिवर्तित आम आदमी, आम गुरु नहीं कर सकता। जिसको ज्ञान ही नहीं है वह ऐसा नहीं कर सकता। अब अणु हैं कहां?

आप अगर मांस निकालें तो मांस तो अणु है नहीं। मांस के टुकड़े-टुकड़े कर दें तो वे भी अणु नहीं है और शरीर के एक एक रोम में अणु हैं। अणु का अर्थ है कि एक सूई की नोंक पर पांच हजार अणु आते हैं। उन अणुओं को परिवर्तित करने पर देवत्व प्राप्त हो सकता है और यदि आपको देवत्व की ओर अग्रसर होना है तो उन पूरे अणुओं को परिवर्तित करना पड़ेगा और वे अणु परिवर्तित होंगे मंत्रों के माध्यम से क्योंकि कहा गया है -

मंत्राधिनाश्च देवता।

ये सारी जो क्रियाएं हैं मंत्रों के अधीन है। मंत्र का अर्थ है मैं बोलूं और आपके कानों में उतरे। मैं बोलूं और उसका प्रभाव हो। मैं अगर आपको मां की गाली दूं तो आप एकदम पत्थर लेकर खड़े हो जाएंगे। ज्योहिं मैं गाली दूंगा आप एकदम क्रोधित हो जाएंगे। मैंने तो आपको हाथ भी नहीं लगाया। मगर शब्द द्वारा आपको क्रोध दिला दिया और आप मारने को तैयार हो गए। आपके और मेरे बीच में क्या था?

शब्द थे ! मैंने शब्द बोला, वह आपके अंदर उतरा और उसका प्रभाव हुआ। अगर आपको शब्द द्वारा क्रोध दिला सकता हूं तो शब्द द्वारा देवत्व भी स्थापित कर सकता हूं। और क्रोध भी वह दिला सकता है गुरु जो खुद क्रोधमय हो। मरा हुआ गुरु तो क्रोध कर ही नहीं

सकता। अगर मैं खुद क्रोधमय बनूंगा तो आपको क्रोधमय बना पाऊंगा। अगर खुद मरा हुआ हूं तो आपको क्या क्रोधमय बना पाऊंगा।

आपके और मेरे बीच में शब्द हैं और शब्दों ने आपको क्रोध दिलाया है। शब्द ही मिलकर मंत्र बनते हैं। गाली एक मंत्र है जिसने आपको क्रोध दिला दिया। एक मंत्र ऐसा भी है जो आपको देवता बना सकता है। शब्दों का संगुफन या शब्दों का जो योग है वह मंत्र कहलाता है, वह चाहे अच्छा है, चाहे बुरा है।

और जब तक हम देवता बनेंगे नहीं तब तक साधनाओं में सफलता मिलेगी नहीं। इसलिए पहले हम पवित्रीकरण करते हैं कि अपवित्रो पवित्रः....... गंगा जल स्नानं कुर्यात.... संकल्प करते हैं, यज्ञोपवीत हाथ में लेते हैं। बाहरी कर्मकाण्ड तो करते हैं पर अंदर कुछ परिवर्तित होता ही नहीं। यह होता नहीं है इसीलिये तो जैसे आप साल भर पहले थे वैसे मेरे सामने आकर खड़े हो जाते हैं।

इसमें आपका दोष है ही नहीं। इसलिए नहीं कि आप उस स्थिति में मेरे सामने आकर खड़े हुए ही नहीं। साधना करते करते आप धीरे-धीरे उस स्थिति पर पहुंच सकते हैं कि फिर गुरु एकदम से अणु परिवर्तित कर सकता है कि अब लड़का एम.ए. पास -हो गया है अब मैं इसे डॉक्ट्रेट करा सकता हूं। पहली क्लास वाले को तो डॉक्ट्रेट करा भी नहीं सकता था। इतने घिसते घिसते पांच साल, दस साल गुरु को विश्वास होता है कि अब वह अणु परिवर्तित करके उन्हें देवता बना सकता है। फिर वह संसार को दिखा सकता है कि ये उसके शिष्य हैं जिन पर उसको गर्व है।

यह जीवन की एक महत्वपूर्ण क्रिया है, अणु परिवर्तन की जो कि ग्रहण काल में ही संपन्न होती है और ग्रहण काल में सफलता मिलती ही है, असफल हो जाएं संभव ही नहीं। गुरु को मालूम है कि ग्रहण के क्षण कितने बहुमूल्य हैं। यह जरूरी नहीं कि आप परिवर्तित हों। आप परिवर्तित होंगे तो एक क्षण के लिए होंगे, वापस वैसे ही बन जाएंगे। मगर आपके अणु परिवर्तित करने पर आपको जो भी इच्छा होगी वह पूरी होगी ही। आप जो भी चाहेंगे वह होगा ही। देवता जो भी चाहता है वह प्राप्त हो जाता है। कल्पवृक्ष के नीचे बैठे व्यक्ति को जो वह चाहे मिल जाता है क्योंकि कल्पवृक्ष अपने आपमें देवतामय है।

मैंने कहा कि आप जैसा मुझे याद करेंगे मैं बन जाऊंगा। आप मुझे समझेंगे कि यह ज्ञानवान है तो आप जो कुछ मेरे पास बैठकर

मांगेंगे वह मैं दूंगा और आपको मिलेगा, हर हालत में मिलेगा। यदि आप उस भावना के साथ मेरे पास बैठेंगे तो ! और वह भावना पैदा होगी जब आपके अणु परिवर्तित होंगे। मन को बदलने से कुछ नहीं होगा। मन तो फिर भटक जाएगा। ज्योंहि आप मुझसे दूर गए और मन भटक जाएगा। आपका मन फिर से बदल जाएगा और जो कुछ आपने किया वह बेकार हो जाएगा।

मगर अणु बदलने पर फिर आपका मन नहीं बदल सकता। फिर आप चाहें कि आप चिर यौवन बनें तो चिर यौवनवान बनेंगे, पुत्रवान बनेंगे, धनवान बनेंगे, लक्ष्मीवान बनेंगे। मैं भी चाहता हूं आप एक बार करोड़पति बनें, देखें कि एक करोड़ रुपये गिनने में क्या आनंद आता है। वह भी करके देखें आप। देखें जंगल में जाकर के कि जमीन पर लेट कर चांद तारों को देखने में मजा क्या है – वह भी आप देखें। पाँच दिन भूखे रहकर भी आप देखें और हलवा पूरी भी खाकर देखें।

सब भोग आपके जीवन में होना चाहिए – यौवन, सौंदर्य, स्वास्थ्य, पौरुष, क्षमता और जीवन के सारे भोग विलास, मैं चाहता हूं मिलें आपको। मैं ऐसा गुरु नहीं हूं कि नहीं यह सब आपको मिलना नहीं चाहिए, आप मेरी सेवा करते रहिए।

आप मेरी सेवा मत करिए। मेरे हाथ हैं दो और एक हजार हाथ हैं जिनके माध्यम से मैं अपनी सेवा कर सकता हूं। कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत उठाया तो अपने साथियों को कहना पड़ा कि अपनी–अपनी लाठियां टेकिए जरा, पर्वत बहुत भारी है।

वे बेचारे ग्वाले लाठी टेककर पर्वत को कैसे उठाएंगे। मगर फिर भी कृष्ण ने उनको श्रेय दिया। मैं भी श्रेय दे रहा हूं कि आप मेरी सेवा करें। आप क्या मेरी सेवा करेंगे?

राम खुद सीता को ढूंढ कर ले आते, लेकिन उन वानरों को श्रेय देना था सुग्रीव को, नल को, हनुमान को। हम कहते हैं कि हनुमान जी ने बहुत बड़ा काम किया और हनुमान भी खुश कि मैंने काम किया प्रभु का।

और आप खुश हो रहे हैं कि मैंने गुरुजी का कार्य किया। आप तो हो सकता है अभी जुड़े हैं, पांच दस साल पहले मेरा कौन काम करता था, बीस साल पहले कौन करता था?

क्योंकि आप मेरे हैं इसलिए आपको सेवा का अवसर मैं दे रहा हूं। बाकी आपसे मुझे कुछ चाहिए नहीं। मैं तो केवल इतना चाहता हूं कि आप देवत्वमय बनें। देवत्वमय बनेंगे तो आगे के जीवन का उपयोग कर पाएंगे। मनुष्य जीवन से आप उपयोग नहीं कर पाएंगे। मानव शरीर तो केवल अस्थि चर्ममय देह है। चमड़ी, मांस, हड्डियां। चौथी चीज कोई है ही नहीं। जिस प्रेमिका को हम बिना देखे एक पल रह नहीं सकते कि तुम्हारे बिना जीवन अंधेरा है, मैं मर जाऊंगा और वह मर जाए तो आप एक क्षण देखना नहीं

चाहेंगे। आप ही कहोगे – जलाओ इसको जल्दी से।

क्या हो गया आपको? एक मिनट पहले तो आप रह नहीं पा रहे थे उसके बिना और अब एक मिनट बाद जलाने की क्रिया शुरु कर दी आपने। इसलिए कि आप अणुओं से नहीं जुड़े हुए थे, शरीर से जुड़े हुए थे। सुंदर शरीर था इसलिए जुड़े हुए थे। शरीर और अणु में यह अंतर है। और अणु परिवर्तित होंगे तो आप देवता बन पाएंगे।

देवता बनेंगे तो आप उनके समकक्ष बन पाएंगे जो कृष्ण हैं, जो इंद्र हैं, जो यम हैं, जो कुबेर हैं, जो रुद्र हैं, जो शिव हैं, जो विष्णु हैं, जो ब्रह्मा हैं। आप उनके लेवल पर खड़े हो पाएंगे। फिर आप जहां चाहे वहां जन्म ले सकेंगे। अगर चाहेंगे तो ही जन्म ले सकेंगे। जिस गर्भ में चाहे उस गर्भ में जन्म ले सकेंगे। ब्रह्माण्ड के जिस लोक में जाना चाहें जा सकेंगे।

और यदि भेड़ के एक अणु से पूरी भेड़ बना सकते हैं, तो आपके तो शरीर में लाखों अणु हैं, लाखों अणुओं से तो असीमित शक्ति प्राप्त हो सकती है। एक अणु बम पूरे हिरोशिमा, नागासाकी को समाप्त कर सकता है। परंतु उस असीमित शक्ति को अणुओं को परिवर्तित करके ही प्राप्त किया जा सका है और यह परिवर्तन की क्रिया ग्रहण काल में ही हो सकती है। ऐसा क्षण आएगा तो पूरे शरीर आलोड़ित होगा, विलोडित होगा। पूरे शरीर में एक भूकंप आएगा, एक भूचाल सा आएगा।

और आज आप देख ही रहे हैं कि विश्व में क्या हो रहा है। बूथ कैपचरिंग हो रही है, गोलियां चल रही हैं, बम फट रहे हैं, इतने लोग मर रहे हैं। हर जगह व्यक्ति असुरक्षित सा हो गया। यह क्या हो गया, पूरा विश्व बदल गया, नेता बदल गए, स्थिति बदल गई, आपका पूरा जीवन ही बदल गया। अब यह रचनात्मक भी हो सकता था। और आगे हो सकता है परंतु मनुष्य शरीर से नहीं हो सकता। सबसे पहले आपके अणुओं को परिवर्तित करने की जरूरत है। अब उसके दो तरीके हैं या तो साधना के माध्यम से या दीक्षा के माध्यम से। तरीके तो दो ही हैं।

या तो कृष्ण अर्जुन को समझाएं कि समझ ले मैं देवता, मैं महापुरुष हूं और या फिर अपना विराट रूप दिखाएं। तीसरी कोई स्थिति थी ही नहीं कृष्ण के पास। समझाते समझाते थक गए तो उन्होंने अपना विराट रूप दिखाया कि मैं तुम्हारा सारथी नहीं हूं। घोड़े चलाने वाला नहीं हूं मैं। पूरा ब्रह्माण्ड मेरे अंदर समाया हुआ है, देख ले अब।

तब जाकर ज्ञान हुआ अर्जुन को। तो या तो मैं आपको साधना कराऊं या आपको दीक्षा दूं। अब मैं आपको मंत्र दूं तो आप मंत्र जप कर नहीं

प्रथम शैलपुत्रीति द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीय चन्द्र घण्टेति कुष्माण्डेति चतुर्थकम्।।
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनी तथा।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीनि चाष्टमम्।।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गा प्रकीर्तिता।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणेन महात्मना।।

पाएंगे। करेंगे भी तो शरीर से करेंगे। कभी करेंगे, कभी नहीं करेंगे। कभी आप खाना खा कर करेंगे, कभी आलस्य में करेंगे, कभी आप सफर में होंगे और आप नहीं कर पाएंगे। नहीं कर पाएंगे तो मेरी मेहनत बेकार हो जाएगी और आप भी कहेंगे कि गुरुजी कुछ हुआ ही नहीं। मैं यह स्थिति टालना चाहता हूं। यह स्थिति टालने के लिए एक तरीका है, ब्रह्माण्ड रूप दिखाना और दूसरा तरीका है दीक्षा देना।

यह साधना के द्वारा भी हो सकता है – पूर्ण अणु परिवर्तित देवत्व सिद्धि, और यह दीक्षा के माध्यम से भी हो सकता है। दीक्षा देना गुरु के लिए कठिन है क्योंकि उसे अपने शरीर का, अपनी तपस्या का अंश देना पड़ता है। पुत्र पैदा करना बहुत कठिन है क्योंकि मां के पूरे शरीर के खून को निचोड़ कर वह पी लेता है। जो कुछ खाती है मां उसका रस पूरा बच्चे के पेट में ही जाता है। मां के शरीर में ताकत धीरे–धीरे कम होती रहती है, वह अशक्त होती रहती है, उठ नहीं पाती है, चल नहीं पाती। क्या हो गया उसको?

सारा रस तो वह बच्चा ले लेता है और यदि मैं दीक्षा दूंगा तो मेरा सारा सत्व तो आप ले लेंगे। इसलिए गुरु सहज ही दीक्षा देते ही नहीं। और दीक्षा मिल जाए, यदि कोई सद्‌गुरु ऐसी दीक्षा दे दे तो पूर्णता का एहसास होता ही है।

जो भी पुरुष है। वे पुरुष तभी पूर्णता प्राप्त करते हैं जब उनमें एक स्त्रीत्व आता है, नारीत्व आता है। कभी आप अपने आपको गुर्जरी या गोपी बनाकर देखें और कृष्ण के भजन को सुनें, फिर आपको एहसास होगा कि चित्त या मन कितना कोमल बन जाता है और हृदय प्रेम से सिक्त हो जाता है। पौरुषता एक अलग चीज है जो आवश्यक है, मगर उस पौरुषता में जब तक एक नारी सुलभ कोमलता नहीं आ पाएगी तब तक सर्वांगीण विकास भी नहीं हो पाएगा। जीवन केवल पुरुष से नहीं बन सकता, जीवन केवल स्त्री से भी नहीं बन सकता। भगवान शिव अपने आपमें अर्द्धनारीश्वर कहलाए। आधा शरीर नारी का था, आधा शरीर पुरुष का था। कृष्ण को भी अर्द्धनटराज कहा गया – आधे एकदम लक्ष्मी स्वरूप थे और आधे नारायण स्वरूप थे।

ऐसा क्यों कहा गया? अर्द्धनारीश्वर कहने के पीछे क्या मतलब था उनका? क्या शिव के त्रिशूल में ताकत नहीं थी? क्या उनके सुदर्शन चक्र में कोई मूढ़ता आ गई थी?

हृदय का जो रस प्रवाह होता है वह दोनों की संयुक्तता से होता है। अगर मैं नारी बन करके कृष्ण के भजन को सुनूं तो एक रस, एक संगीत अलग तरह का आ पाएगा। एक नारी पुरुषत्व को मनन करके, कृष्ण में अपने आपको लीन करती हुई भजन सुनेगी तो उसमें एक

अंतर आता है। जीवन खाली पुरुष बनने से नहीं चलता, जहां पुरुष बनना होता है वहां पुरुष ही बनना पड़ता है और जहां नारी बननी पड़ती है तो नारी ही बनना पड़ता है। सारे भक्त कवियों ने, ऋषियों ने, योगियों ने, मुनियों ने, नारी बनकर के ही भगवान को अपनाया हैं। चाहे वे कृष्ण हों, चाहे शिव हों, एकाकार होने के लिए दोनों का सम्मिलन होना आवश्यक है और इनके सम्मिलन को योग कहते हैं। जहां योग शब्द आया है तो उसका अर्थ है दोनों का संयोजन। हम अपने आप में स्त्रीत्व की भावना को भी सम्मिलित करें। हमारी आंख में भी लज्जा, मुस्कुराहट, आकर्षण, सम्मोहन आए और हममें ताकत और क्षमता भी आए।

और ऐसा होगा तो ही जीवन में आनंद होगा, एक मस्ती होगी। मस्ती आपके अंदर से ही प्रकट होगी, बाहर से मस्ती कहीं से आती ही नहीं। कोई नहीं देगा आपको मस्ती बाहर से। बाहर से तो दुख आएगा, वेदना आएगी, तकलीफ आएगी। चाहे आपका बेटा हो, चाहे पति हो, चाहे पत्नी हो, वहां से आपको प्रसन्नता आ ही नहीं सकती।

आएगी तो केवल आपके भीतर से आएगी। आप अपने मन का आलोड़न विलोड़न करेंगे तभी जीवन में एक आनंद, एक उल्लास, उमंग, जोश और जो आप चाहते हैं वह प्राप्त हो पाएगा। मन के अंदर से वह चिंगारी फूटे इसलिए भजन गाए जाते हैं, सुने जाते हैं। यदि कबीर को सुनें तो उसने कहा – मैं राम की बहुरिया हूँ।

चैतन्य महाप्रभु ने कहा – मैं तो कृष्ण की दासी हूं जो उसमें लीन हूं।

पुरुष होकर भी क्यों उन्होंने नारी सुलभता प्रदर्शित की? और नारी कोई इतनी कमजोर होती तो फिर बगलामुखी नहीं बनती, महाकाली नहीं बनती। उनका भी हमारे जीवन में एक बड़ा रोल है। प्रत्येक व्यक्ति को बिगाड़ने में और प्रत्येक व्यक्ति को ऊंचा उठाने में एक नारी का ही योगदान होता है। उसका सत्यानाश भी कर सकती है, और उसका निर्माण भी कर सकती है तो नारी कर सकती है। महाभारत युद्ध हुआ तो केवल एक द्रौपदी की वजह से हुआ। द्रौपदी ने कहा – तू अंधा है, अंधों के अंधे ही पैदा होते हैं। उस एक वाक्य ने पूरी महाभारत बना दी और करोड़ों लाखों लोग कट गए। एक सीता के कारण पूरी रामायण बन गई, राम-रावण युद्ध हो गया और पूरा रावण कुल समाप्त हो गया। खैर यह

एक अप्रसंगवश बात हो गई पर मूल बात यह थी कि जब पुरुषत्व और स्त्रीत्व दोनों का समावेश होगा तभी पूर्णता आ सकेगी। यह तभी होगा जब अणु परिवर्तन होंगे। तभी आप आनंद और सुख की अनुभूति कर पाएंगे।

और अभी आपके जीवन में आनंद और उल्लास इसलिए नहीं है क्योंकि आप बाहर से सुख प्राप्ति की आशा कर रहे हैं और बाहर से सुख मिल नहीं सकता।

राधा ने एक बार कृष्ण से कहा – मैं निर्लज्ज होकर के आपके साथ क्यों जुड़ी हूं?

कृष्ण ने कहा – राधा। पहली बार नहीं जुड़ी हो। इससे पहले चालीस जीवन तुम्हारे मेरे साथ बीत चुके हैं। तुम चाहो भी तो नहीं टूट सकोगी। यह लोक लज्जा, समाज तो अपने आपमें बहुत ओछी चीज है। ये तो चार दिन कुछ कहेंगे, चार दिन प्रशंसा कर लेंगे। समाज क्या कर लेगा?

और समाज ने किया क्या? क्या बदनामी की? और बदनामी से क्या हो जाता है? और नाम से फिर क्या हो जाता है?

समाज कभी आपको ऊँचा नहीं उठने देगा, समाज बंधन को कहते हैं, समाज मन को घायल करने की अवस्था को कहते हैं। समाज पग पग की रुकावटों को कहते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि आप निर्लज्ज हो जाएं। मगर इसका मतलब यह भी नहीं कि आप भयभीत हो जाएं। जो कुछ करें बिल्कुल स्पष्ट व्यक्तित्व के साथ करें।

बहादुर बनें तो ताकत के साथ प्रहार करें और यह क्षमता, यह ताकत साधनाओं और दीक्षाओं के माध्यम से ही आ पाएगी।

और जो दीक्षाएं मैं दे रहा हूं यह परम्परा आज की ही नहीं है। यह परम्परा पिछले पच्चीस हजार, पचास हजार वर्षों की है। आप इसको समझ नहीं पा रहे हैं और मैं बार–बार कह रहा हूं आप समझ नहीं पा रहे हैं। इसका मतलब नहीं कि आपमें ज्ञान की कमी है। इसका मतलब यह है कि आपका ज्ञान बहुत अधिक ऊंचाई पर उठ गया है जो मेरी छोटी सी बात आपके हृदय में पच नहीं पा रही। क्योंकि आप इतने अधिक होशियार, इतने अधिक चतुर, इतने अधिक चालाक हैं कि जो मैं कह रहा हूं वह बात आपको समझ नहीं आ रही है।

मगर एक क्षण आएगा तब मेरी बात आपके मन में घूमेगी, तब आप एहसास करेंगे कि किसी ने बहुत सही कहा था, हम समझ नहीं पाए उस समय और वह क्षण चला जाएगा। जो जीवन चला गया, जो क्षण चले गए वे वापस नहीं आ सकते। उनकी स्मृतियां आ सकती हैं, उनकी यादें आ सकती हैं।

जो कुछ भी मैं आपके सामने ज्ञान स्पष्ट कर रहा हूं उसके पीछे मेरा तो कोई स्वार्थ है ही नहीं। स्वार्थ यह है कि मैं कुछ निर्माण करूं,

स्वार्थ यह है कि मैं कुछ मंदिर बनाऊं, कुछ देवालय बनाऊं, कुछ ऐसा बनाऊं कि कहते हैं मूर्तियां बोलती नहीं, पहले बोलती थीं तो मैं सिद्ध करके दिखा दूं कि ये मूर्तियां बोलती हैं, ये मंदिर सजीव हैं, सिद्ध हैं, जाग्रत हैं, चैतन्य हैं। उन लोगों की सहायता करुं जो दरिद्र हैं, गरीब हैं, अशक्त हैं और किन वजह से हैं? वे अपने खुद के कर्मों की वजह से हैं।

न मैंने आपको गरीब बनाया, न मैंने आपको अमीर बनाया, गरीब बने आप कोई न कोई पूर्व जन्मों के कारणों से। मगर मेरे पास आए हैं तो मैं वह चैतन्यता दूंगा ही दूंगा कि आपके जीवन के अभाव दूर हो सकें।

आप मुझसे नहीं जुड़ें, एक साल नहीं आएं मेरे पास तो आपको एहसास होगा कि आप खोखले से हैं। आपको लगेगा कि आपके पास कुछ है ही नहीं। आपमें और एक गली के सामान्य मनुष्य में फिर कोई डिफरेंस रहेगा ही नहीं। फिर चेंज क्या होगा आपमें?

आज आप मेरे पास आते हैं तो यह तो एहसास आपमें है कि मेरे पास गुरुजी हैं, मुझे भी यह तो एहसास है कि आप मेरे शिष्य हैं जिनको मैं दूंगा और वे ग्रहण करेंगे। यह छोटी बात नहीं है। यह अपने आपमें एक उपलब्धि है।

गुरु से कुछ प्राप्त करना या नहीं करना यह बहुत बड़ी घटना नहीं है। मेरा और आपका जुड़ना अपने आपमें बहुत बड़ी घटना है। एकाकार हो जाना बहुत बड़ी घटना है। तब मैं आपको वीरोचित बना सकूंगा, पौरुषवान बना सकूंगा, ब्राह्मण बना सकूंगा।

आपको परिवर्तित करने से पहले यह आवश्यक है कि पूर्णता के साथ अणुओं को परिवर्तित कर दूं। अंदर से, जड़ से ही जब परिवर्तित हो जाएंगे तो एक जीवन में क्रांति हो पाएगी। किसी पेड़ पर एक गुलाब की कलम लगाने से गुलाब नहीं पैदा होगा, अंदर से बीजारोपण ही ऐसा कर दिया जाए कि गुलाब ही विकसित हो तब आप समाज में अलग से दिखाई देंगे। तब आंख में चिंगारी होगी। तब आपमें स्नेह होगा, प्यार होगा, एक पागलपन होगा, एक दृढ़ता होगी। एक ऐसा जुनून होगा जो आपके पास ही होगा। तब आप मेरे बिना नहीं रह पाएंगे और जब वह क्षण आए तब आप समझ लीजिए आप मेरे शिष्य हैं। उससे पहले आप शिष्य नहीं है। उससे पहले आप केवल श्रोता हैं, जिज्ञासु हैं, जानना चाहते हैं।

एक जिज्ञासु और शिष्य में हजारों मील का डिफरेंस है। अगर आप गुरु के साथ समीपता नहीं अनुभव करते तो और एक इंच का डिफरेंस है।

अगर आप गुरु से एकाकार होना अनुभव कर लें। जब आपकी आंखों में आंसू छलक जाएं जब आपको एहसास हो जाए कि अंदर कुछ घटना घटित हो रही है तो समझें आप शिष्य हैं।

अंदर जो कुछ घटित होगा वह अणु के परिवर्तन से होगा। अणु परिवर्तन की यह क्रिया एक ऐसी क्रिया है कि हमारे अंदर जितना भी दैन्य है, दुख है, दरिद्रता है, पाप है वे सब जल जाएं, समाप्त हो जाएं। हमारे अंदर जो अविद्या है, हमारे गले में जो संगीत नहीं है, हमारे पैरों में जो थिरकन नहीं है, हमारे चेहरे पर जो उल्लास नहीं है और ये सब माइनस पाइंट हैं ये समाप्त हो जाएं, ऐसी यह क्रिया है।

मैं आपको बताना चाहता हूं कि निर्मुक्त बनिए, स्वच्छंद बनिए, मस्ती के साथ रहिए। जो क्षण मेरे साथ बीत जाएं वे धरोहर होंगे। न जाने कौन सा क्षण ऐसा हो सकता है। कृष्ण ने कहा – मैं जा रहा हूं, मेरा जितना काम था मैं कर चुका हूं।

अब पूरे संसार को सुधारने का ठेका न कृष्ण ने लिया था, न सुधरा, ना सुधरेगा। मुट्ठी भर लोग ही

सुधरेंगे और वे मुट्ठी भर लोग ही संसार में परिवर्तन ला सकते हैं। एक चांद ही पूरे आकाश को रोशनी देगा, हजारों तारे भी मिलकर रोशनी नहीं दे पाएंगे।

कणाद ने पूर्ण रूप से अणु की थ्योरी बताई थी कि आदमी पूर्ण रूप से परिवर्तित होता हुआ जो चीज बनना चाहे वह बन सकता है और गुरु जो चीज बनाना चाहे वह बना सकता है। मैं आपको वैसा ही पूर्ण बनाना चाहता हूं। मगर आपको मेरे प्रत्येक शब्द को रचा पचा लेना पड़ेगा। उतारना पड़ेगा। केवल सुनना नहीं है, आप श्रोता नहीं है। मैं रामायण की कथा नहीं सुना रहा हूं कि रावण सीता को उठा कर ले गया और राम ने उसे तीर मार दिया। मैं कथाएं नहीं सुनाता।

मैं जो कुछ दे रहा हूं बिल्कुल नवीनता के साथ दे रहा हूं, शास्त्रोचित दे रहा हूं, मर्यादानुकूल दे रहा हूं। जो कुछ छिपा हुआ ज्ञान है वह आपको दे रहा हूं जिससे कि यह चीज जीवित रह सके।

यह दीक्षा गुरु से लेने के बाद आप खुद अपने आपमें एक परिवर्तन अनुभव करेंगे, एहसास करेंगे कि हम अपने अंदर से बहुत कुछ परिवर्तित हो रहे हैं। जो हमारे पास नहीं था वह अब मैं प्राप्त कर रहा हूं।

मैं जानता हूं कि लोग टूटेंगे। बिखरते, बिखरते जितने बच जाएंगे वे ही वास्तव में शिष्य कहलाने के योग्य होंगे। क्योंकि हंसों की पंक्तियां नहीं होती। बहुत झुण्ड के झुण्ड हंस नहीं होते। दो चार हंस कहीं-कहीं दिखाई देते हैं। दो चार शेर दिखाई देते हैं। कई सौ वर्षों में जाकर एक व्यक्तित्व पैदा होता है सिर्फ, जो बहुत कुछ करके चला जाता है। राम के बाद कृष्ण आए। पूरा युग बीत गया। इस बीच कोई पैदा ही नहीं हुआ। जो पूरे देश को एक नेतृत्व दे सके, वह पैदा नहीं हुआ। नेताओं की बात नहीं कर रहा हूं। नेता एक अलग चीज है। वह तो आज है, कल नहीं है। कल लोक सभा अध्यक्ष थे आज सड़क पर खड़े हैं।

एक पुरुष, एक युगपुरुष, एक अद्वितीय व्यक्तित्व पांच सौ, छः सौ, हजार वर्षों के बाद पैदा होता है, हर दिन, हर गली में पैदा नहीं हो सकता। उस समय अगर हम उसको नहीं पहचान पाएंगे, उस समय अगर हम उसको आत्मसात नहीं कर पाएंगे तो हम चूक जाएंगे, हम पिछड़ जाएंगे।

कितने बुद्ध पैदा हुए, कितने ईसामसीह पैदा हुए, कितने मोहम्मद साहब पैदा हुए, कितने चैतन्य पैदा हुए, कितनी मीराबाई पैदा हुई। एक व्यक्ति ने पूरे परिवर्तन को ला दिया और हम उसको नहीं समझ पाए तो हमारे जीवन की न्यूनता रही और न्यूनता यह रही कि हमने कणाद को नहीं समझा, अंदर के अणुओं को परिवर्तित नहीं किया। इस बात का आप ध्यान रखें कि कोई एक उम्र का व्यक्ति ही गुरु नहीं होता। आपकी धारणाओं को मैं तोड़ रहा हूं। मैं आपमें उतनी शक्ति दे

दूं तो आप कुछ भी कर लेंगे, अगर मैं कहूं कि जूझ जाओ तो आप जूझ जाएंगे। तुममें ताकत है, बल है, तुममें एहसास है कि पीछे कोई खड़ा है, इसलिए मन का दास बनने की जरूरत नहीं है। मैं साक्षीभूत हूं आपके प्रत्येक शब्द का, प्रत्येक घटना का, जिम्मेवार मैं हूं, जो कुछ प्रदान करना मेरी ड्यूटी है, उसमें न्यूनता होगी तो जिम्मेवारी मेरी होगी।

मैं पीछे हटने की क्रिया नहीं करता हूं। मैं जम करके जूझने की क्रिया करता हूं। मैं जिंदगी भर जूझा हूं। जितना मैं जूझा हूं उतना आप दस हजार जन्म लेकर भी नहीं जूझ सकते। उतना मैं जूझा हूं अपनी जिंदगी से, अपने आपसे। हरदम अपने आपको तोड़ा है और तोड़ने की क्रिया की है। यह मैं ही जानता हूं कि हिमालय कितना ऊबड़ खाबड़ है, यह मैं ही जानता हूं कि हिंसक पशु कैसे होते हैं, यह मैं ही जानता हूं कि गृहस्थ जीवन को संभालना कितना कठिन है, यह मैं ही जानता हूं कि दुष्ट व्यक्तियों के बीच जिंदा रहना, सांस लेना कितना कठिन होता है।

शिव ने अगर जहर पिया होगा तो बहुत कठिनाई के साथ पिया होगा। मगर उन्होंने चेहरे पर उफ नहीं आने दी। और ऐसा कह कर मैं कोई एहसान भी नहीं थोप रहा हूं और जहर मिल जाए कोई बात नहीं। एहसास तो हो जाए कि कितना पी सकता हूं। शायद इससे दस हजार गुना मैं पी सकता हूं। इतनी क्षमता है मुझमें। जूझूंगा और पूरी क्षमता के साथ जूझूंगा।

यह तो एक गुरु शिष्य, पिता-पुत्र के बीच का संवाद है। जहां पुत्र होगा तो पिता कहेगा और डांटेगा भी, पुचकारेगा, सीने से लगाएगा और थप्पड़ भी मारेगा। मगर उसे अपने समान बनाने की क्रिया की कोशिश में लगा रहेगा। इसलिए कि वह गुरु के अंशीभूत बने।

शिष्य को अपने आप में पुत्र कहा गया है, तनय कहा गया है। उसके शरीर के सदृश्य कहा गया है। आप पुत्र हैं मेरे, आप शिष्य नहीं हैं। मेरे शरीर के किसी न किसी भाग के हिस्से हैं आप। आपसे मिलकर के एक चीज बनी है जिसे नारायण दत्त श्रीमाली कहते हैं। ब्रह्मरंध्र जो है उसके माध्यम से हम पूरे शरीर के अणुओं को परिवर्तित कर सकते हैं। पूरे शरीर के अगर अणु एकत्रिभूत हैं तो आज्ञा चक्र में हैं या नाभि में हैं। दो जगह ही हैं।

एक बच्चा अपनी मां से पूरी तरह नाभि से जुड़ा होता है। और किसी जगह से जुड़ा नहीं होता वो और जब जन्म लेता है तो नामी के साथ नाल आती है। उस नाल से ही वह सारा रस ग्रहण करता हुआ जिंदा रहता है। सांस भी उससे ही लेता है। और बड़े होने के बाद आज्ञा चक्र जो है दोनों भौहों के बीच में पूरे शरीर के अणु वहां पूंजीभूत होते हैं। इसलिए औरतें वहां बिंदी लगाती हैं कि वह भाग ठंडा रहे। इसलिए ब्राह्मण यहां चंदन लगाते हैं कि यह भाग ठंडा बना रहे। गर्मी में एकदम विस्फोटक न हो जाए। बिंदी लगाने के पीछे या चंदन लगाने के पीछे तर्क यह है। कोई सुदंरता की बात नहीं है।

और अगर कुछ गुरु से ज्ञान लें या दीक्षा लें इसी आज्ञा चक्र के माध्यम से ले सकते हैं और कहीं से ले भी नहीं सकते। इसी के माध्यम से पूर्ण अणु परिवर्तन भी संभव है। मैं आपको आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूं कि एक सक्षम गुरु आपको मिले, मिले और वह पूर्ण अणु परिवर्तन करता हुआ आपको उस पूर्णता पर ले जाकर खड़ा कर दे जहां जीवन का आनंद है, एक मस्ती है, एक उल्लास है। मैं एक बार फिर आपको हृदय से आशीर्वाद देता हूं।

–सद्‌गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी
(डॉ. नारायण दत्त श्रीमालीजी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

काल भैरव यंत्र एवं माला

काल भैरव भगवान शिव का ही एक स्वरूप है। भगवान भैरव की पूजा प्रत्येक साधना में करने का विधान है, क्योंकि ये हर प्रकार से साधक की रक्षा करते हैं। साधना काल में कई प्रकार के विघ्न उपस्थित होते हैं, इसीलिए साधकों द्वारा भैरव पूजन, साधना का एक आवश्यक अंग माना जाता है। काल भैरव अपने साधक की प्रत्येक प्रकार की तंत्र बाधा इतर योनियों, भूतों-प्रेत आदि योनियों से पहुँचाए जा रहे आघातों से रक्षा करते हैं। कार्यालय द्वारा तंत्र बाधा से रक्षा हेतु विशेष प्राण प्रतिष्ठित 'काल भैरव यंत्र' निर्मित कराए गए हैं, जिनके मात्र स्थापन से ही घर में यदि कोई तंत्र बाधा है, अथवा यह बाधा किसी व्यक्ति को पीड़ित करती है, तो वह बाधा हट जाती है।

यंत्र स्थापन विधि

किसी भी दिन प्रातः दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जायं। सामने बाजोट पर काला कपड़ा बिछा कर स्टील की थाली में कुंकुम से 'ॐ भं भैरवाय नमः' लिखकर उस पर काल भैरव यंत्र स्थापित करें। फिर लाल आसन पर बैठकर फूल, दीप से पूजन कर 3 माला निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

।। ॐ भं भैरवाय नमः ।।

इसे 7 दिन तक करें फिर इसे उसी काले कपड़े में बांधकर घर के किसी कोने में अथवा खूंटी, दरवाजे पर लटका दें। इससे घर में तंत्र बाधा व्याप्त नहीं होती।

405/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

दरिद्रता विनाशक प्रयोग

कार्तिक मास के किसी भी रविवार को

यह यंत्र लक्ष्मी प्रदायक एवम् चमत्कारी है

- जीवन में यदि दुर्भाग्य साथ नहीं छोड़ रहा हो, आर्थिक उन्नति में बराबर बाधाएं आ रही हों
- या दरिद्रता समाप्त नहीं हो रही हो या कर्जा बढ़ रहा हो
- तो इस प्रयोग को अवश्य करना चाहिए

इस यंत्र को किसी भी रविवार को प्रातः 7 बजे से 11 बजे के बीच किसी कागज या भोजपत्र पर केसर या अष्टगंध से बनायें। फिर इस हाथ से बनाये गये यंत्र पर गुरुधाम से प्राप्त ताम्र पत्र के यंत्र को रखें। घी का दीपक जलायें। यंत्र पर तिलक लगाकर फूल, अक्षत से पूजन करें। दूध से बने प्रसाद का भोग लगायें। फिर इसके सामने कमलगट्टा माला से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें।

क्लीं स्वाहा ऊँ स्वाहा ह्रीं

पा	तु	श्रीं	स्वाहा
श्रीं	पा	तु	श्रीं
पा	तु	श्रीं	पा
तु	श्रीं	पा	तु

(बायीं ओर) रक्षा कुरु ऊँ रक्षा कुरु

(दायीं ओर) रक्षा ऊँ कुरु

(नीचे) रक्षा कुरु ऊँ रक्षा कुरु

मंत्र ।। ऊँ क्लीं पातु श्रीं रक्षा कुरु कुरु श्रीं नमः।।

इसके बाद ताम्र पत्र पर अंकित यंत्र को अपने घर के पूजा स्थान में स्थापित कर दें अथवा दुकान पर रख दें। नित्य इसके सामने सम्भव हो तो अगरबत्ती व दीपक लगायें एवं भोजपत्र पर अंकित यंत्र को फ्रेम में मंढाकर पैसे रखने वाली तिजोरी में रख दें। ऐसा करने पर शीघ्र ही वह अनुकूल फल प्राप्त करने लगता है और उसके जीवन में सभी दृष्टियों से निरन्तर विकास होता रहता है।

साधना सामग्री : 450/-

नवमी तिथि - 24.10.2020

समस्त साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करने हेतु

सिद्धिदायिनी दुर्गा

नवरात्रि का अंतिम दिन 'सिद्धिदायिनी दुर्गा' का है।

इस दिन साधक जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करने के लिए सिद्धिदायिनी की साधना करता है। इस दिन साधना करने से समस्त साधनाओं में सफलता प्राप्त होने लग जाती है। इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद साधक वर्ष भर तक जितनी साधनायें करता है, उनमें उसे सफलता प्राप्त होने की सम्भावनाएं अत्यन्त बढ़ जाती हैं। यदि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ साधना सम्पन्न की जाय, तो भगवती जगदम्बा के प्रत्यक्ष बिम्बात्मक दर्शन भी सम्भव होते हैं।

साधना सामग्री

सिद्धिदायिनी दुर्गा यंत्र, सर्व सिद्धि माला

साधना विधान

सफेद रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर 'सिद्धिदायिनी दुर्गा यंत्र' स्थापित करें। दुर्गा का ध्यान करें–

सिद्ध गन्धर्व यक्षाद्यैः असुरैरमरैरपि।
साध्यमाना सदाभूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी।।

यंत्र का पूजन कर, नैवेद्य अर्पित कर 'सर्व सिद्धि माला' से 31 माला मंत्र जप करें–

।।ऊँ शं सिद्धिप्रदायै शं ऊँ।।

प्रयोग समाप्ति पर आरती करें।

साधना सामग्री : 450/-

पापाकुंशा प्रयोग

पापाकुंशा का तात्पर्य है-

इस जीवन के साथ-साथ पूर्वजन्म के पापकर्मों को समाप्त करना, उन पर अंकुश लगा देना, जीवन के अंधकार पूर्ण क्षणों को, दुख और दारिद्र्य की दूषित रेखाओं को सौभाग्य में बदल देना।

और जब ऐसा हो पायेगा तो सफलता स्वयं आपके कदम चूमेगी..... फिर जीवन में अभाव रहेगा ही कैसे........

यह प्रयोग अपने आप में श्रेष्ठ और अद्धितीय है। पापों से मुक्त कर जीवन को प्रभावशाली बनाने का प्रयोग है यह, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति लाभ से वंचित रह ही नहीं सकता।

सामग्री - पाप निवारण यंत्र, पाप मोचिनी माला, पापाकुंशा गुटिका।

पापाकुंशा एकादशी के दिन सायं यह प्रयोग सम्पन्न करें या किसी शनिवार के दिन भी इसे सम्पन्न कर सकते हैं। पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर बैठें सामने चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर किसी प्लेट में यंत्र को स्थापित कर दें।

फिर जल से स्नान कराकर कुंकुम का तिलक लगायें और गुटिका भी साथ में स्थापित कर कुंकुम, अक्षत, पुष्प से पूजन करें। धूप और दीप दिखायें।

फिर एक माला गुरु मंत्र करें और आसन पर खड़े होकर **'ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं'** मंत्र का क्रमशः पश्चिम, उत्तर, पूर्व और दक्षिण चारों दिशाओं में एक-एक माला जप करें। इसके बाद पश्चिम की तरफ मुंह कर 11 माला निम्न मंत्र का जप करें-

मंत्र

।। ॐ सर्व पापनाशाय ह्रां ह्रीं नमः ।।

फिर एक माला गुरु मंत्र करें। जप समाप्ति के बाद समस्त सामग्री दूसरे दिन जल में प्रवाहित कर दें या पीपल के पेड़ के नीचे रख दें। वापिस घर लौटते हुये मुड़कर न देखें और घर आकर हाथ-पैर धोकर तीन बार आचमन करें। यह प्रयोग निश्चय ही फलदायी है।

साधना सामग्री - 510/-

जगदम्बे भगवती शरणाष्टकम्

अशिवस्तुतस्ते शिवनामधेय:
विपरीत कर्माऽधर्माऽतिचारी
त्वमेका गतिस्तस्य भ्रान्तस्य मात:
चरणाम्बुजे ते पाप: नतोऽसौ।।1।।

हे माँ ! तुम्हारा यह अशिव पुत्र विपरीत कर्म करने वाला अधर्मी और अत्याचारी है, इस भूले-भटके की तुम्हीं एकमात्र गति हो, यह पापी आपके चरण कमलों में नमन करता है।

मात: प्रपन्नस्त्वामस्मि जात:
अज्ञ: सुतोऽहं तव पापपीत:
विषयेषु मग्न: खलमोहमूढ:
एकोऽवलम्ब करुणा त्वदीया।।2।।

हे माँ ! तुम्हारा यह पुत्र दुखी है, अज्ञानी है, पापपूर्ण है, विषयों में आसक्त रहता है। खल और मूढ़ है, तुम्हारी एक मात्र करुणा ही मेरा सहारा है।

कृतं न पुण्यं चरितं न धर्म:
दानं न दत्तं न तप्तं तपो वा
न जानामि शास्त्रं जपयोग ध्यानं
माता कृपा ते आशा ममैका।।3।।

हे माँ! मैंने न कोई पुण्य किया, न धर्म किया, न दान दिया, न कोई तप किया और न ही मैं किसी प्रकार के जप, योग, ध्यान व शास्त्र को जानता हूँ, सिर्फ तेरी कृपा ही मेरी एकमात्र आशा है।

भवती हि जननी गरिमा महीयसी
करुणाक्षमा ते सहजस्वभाव:
पापे वरिष्ठ: अधदर्पितोऽहम्
मात:! सुतोऽसौ खलु रक्षणीय:।।4।।

हे माँ! आप बहुत गरिमामयी हैं, करुणा और क्षमा आपका सहज स्वभाव है। मैं अति पापी और अहंकारी हूँ। फिर भी आपका पुत्र हूँ और रक्षा योग्य हूँ।

ममतामयी त्वं माताऽस्मदीया
पुत्रा वयं ते कृतभूरिदोषा:
शरणं न अन्यं क्वचिदस्ति मात:
शरणाश्रयं ते अम्बे भजाम:।।5।।

तुम मेरी ममतामयी माता हो और मैं दोषयुक्त पुत्र हूँ। हे माँ! तुम्हारे अतिरिक्त कोई मेरा सहारा नहीं है, तुम्हारे चरणों का आश्रय लेकर ही मैं तुम्हारा भजन करता हूँ।

भक्तिं प्रयच्द मात: विमलां मतिं च
मदकाममोह रहितं कुरु मानसं मे
सद्असद्विवेकं अमलञ्च ज्ञानम्
प्रयच्छ माता शरणं शरणये।।6।।

हे माँ! मुझे अपनी भक्ति प्रदान करो, निर्मल बुद्धि से युक्त बनाओ, मेरे मन को अहंकार काम, क्रोध और मोह से रहित बनाओ, मुझे सत् और असत् का विवेक करने वाला निर्मल ज्ञान दो। मैं आपकी शरण में हूँ।

एकं वरं त्वामम्बे हि याथे
अचलाऽस्तु निष्ठा गुरुपापदपद्मे
शिवस्वरूपस्य गुरोश्च करुणा
बलमस्तु मे नि:श्रेयस प्राप्तिहेतो:।।7।।

हे माँ! मैं आपसे एक ही वरदान माँगता हूँ कि शिव-स्वरूप, करुणामय, गुरु के प्रति अविचल श्रद्धा और निष्ठा मेरे हृदय में हो, जो मेरे बल और नि:श्रेय प्राप्ति का हेतु है।

चरणौ जनन्या: शरणास्थलौ न:
सुखाकरौ खलु त्रय तापहारकौ
स्त्रोतौ च भक्तया: ज्ञानस्य विमलौ
पोतौ भवाब्धेर्न: तारकौ तौ।।8।।

हे माँ! आपके चरण कमल ही हमारे लिए शरणप्रदाता हैं, सुखकारी हैं, त्रयतापहारी हैं, भक्ति के स्त्रोत हैं, निर्मल ज्ञान दाता हैं तथा भवसागर से पार उतारने के लिए जहाज स्वरूप है।

23.10.2020

सरस्वती सिद्धि प्रयोग

सरस्वती

ज्ञान और बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी है

जिसने अपनी संतान के मन में सरस्वती साधना का बीज डाल दिया उसे भविष्य में

ज्ञान, यश, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य

सभी कुछ स्वतः प्राप्त हो जाता है।

जब बालक अल्प आयु में ही साधना के माध्यम से ज्ञान आत्मसात कर लेता है, जब वह बोलता है तो शब्द स्वतः फूटते हैं और सामने वाला आश्चर्यचकित रह जाता है। यह प्रयोग अत्यन्त प्रभावशाली है अतः इस प्रयोग को माता-पिता स्वयं सम्पन्न करें एवं अपनी संतान को भी सम्पन्न करवायें जिससे भविष्य में वह बालक संस्कारित होकर एक विशिष्ट पद पर पहुंच कर आपके सपने को साकार कर सके एवं समाज में भी प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके।

....और क्या चाहिए उन माता-पिता को, उनके लिए तो इससे ज्यादा प्रसन्नता की और क्या बात हो सकती है। अतः आप इस प्रयोग को सम्पन्न करें और इसका प्रभाव अनुभव करें-

साधना सामग्री सरस्वती यंत्र, मेधिनी गुटिका, सरस्वती माला।

प्रयोग विधि यह प्रयोग 23.10.20 को या अन्य किसी भी सोमवार को सम्पन्न कर सकते हैं। इस प्रयोग को प्रातःकाल में सम्पन्न करना है। पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह करें। अपने सामने चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर एक ताम्र प्लेट में सरस्वती यंत्र एवं साथ ही पीले चावल की ढेरी पर गुटिका स्थापित करें।

फिर पवित्रीकरण करके यंत्र को स्नान करायें एवं गुरु पूजन एवं 1 माला गुरु मंत्र जप करने के बाद सरस्वती माला से निम्न मंत्र की 5 माला मंत्र जप करें।

मंत्र : ।। ऊँ ऐं वाग्वादिन्यै ऐं ऊँ।।

मंत्र जप के बाद उस गुटिका को बालक को लाल धागे में पहना दें। यह एक दिन का ही प्रयोग है। बाद में बच्चे को एक माला मंत्र जप प्रतिदिन करवायें एवं 30 दिन बाद जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री : 450/-

किसी भी बुधवार को

दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग

तंत्र का क्षेत्र इतना अधिक विस्तृत है, कि कई बार तंत्र के छिपे रहस्यों का उद्‌घाटन होने पर उच्च कोटि के तंत्र मर्मज्ञों को भी मानना पड़ जाता है, कि अभी वे तंत्र के क्षेत्र में मात्र कुछ सीढ़ियां चढ़ पाए हैं।

तंत्र में प्रयोग में आने वाली ऐसी कई रहस्यमयी वस्तुएँ हैं, जिनके प्रयोगों व लाभों को कई उच्चकोटि के तंत्र वेत्ता भी नहीं जानते। दक्षिणावर्ती शंख ऐसी ही एक सामग्री है, जिसका कि तंत्र की दृष्टि से बहुत महत्व है। जिस भी व्यक्ति के पास इसका संग्रह होता है, अथवा जिसके घर में इस प्रकार के शंख का स्थापन होता है, वह व्यक्ति ही अपने अपने में अखण्ड सौभाग्य का स्वामी होता है।

लक्ष्मी आकर्षण का अचूक उपाय

यह शंख लक्ष्मी को विशेष प्रिय है। जिसके घर में अथवा पूजा स्थान में इस प्रकार के शंख का स्थापन होता है, उसके यहाँ लक्ष्मी का स्थायी निवास होता है। इस प्रकार के शंख को कारखाने में या फैक्टरी में स्थापित किया जाए, तो स्वतः ही उसकी दरिद्रता समाप्त हो जाती है और आर्थिक उन्नति होने लगती है। इस शंख को विशेष रूप से दारिद्र्य निवारक कहा जाता है तथा इसके स्थापन मात्र से ही व्यापार वृद्धि होती है।

दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग

यह शंख लक्ष्मी प्राप्ति, आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि आदि में भी विशेष रूप से सहायक है। कर्जा उतारने में तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं प्रभावयुक्त है।

पूरे कार्तिक माह में किसी भी दिन से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जा सकता है। यह प्रयोग तीन दिन का है और यदि इस प्रयोग को दीपावली से 3 दिन पूर्व प्रारम्भ कर दीपावली तक किया जाये तो शीघ्र ही इसका प्रभाव अनुभव किया जा सकता है। प्रात:काल शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने इस शंख को लाल वस्त्र पर स्थापित करें। फिर शंख पर कुंकुम से स्वस्तिक का चिह्न अंकित करें। अब दाएं हाथ से अक्षत का एक-एक दाना शंख में अर्पित करते जाएं साथ ही प्रत्येक अक्षत के साथ निम्न मंत्र का उच्चारण करते रहें-

।। ॐ श्रीं ह्रीं दारिद्र्य विनाशिनी धनधान्य समृद्धि देहि देहि कुबेर शंख विध्यै नमः।।

Om Shreem Hreem Daaridray Vinaashinee Dhandhaanya Samridhi Dehi Dehi Kuber Shankh Vidhyei Namah

एक घण्टे तक इस मंत्र का जप करें और एक-एक अक्षत को शंख में अर्पित करते रहें। अगले दिन पुनः इसी मंत्र का जप करें। इस प्रकार तीन दिन तक करें और फिर चावल के दानों के साथ शंख को लाल वस्त्र में बांध कर अपने घर के पूजा स्थान में रख दें या कारखाने, फैक्ट्री अथवा व्यापारिक स्थान पर स्थापित कर दें।

यह सौभाग्यशाली शंख वहां जब तक रहेगा, तब तक इसके प्रभाव से व्यक्ति के जीवन में निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहेगी। यदि साधक पर किसी प्रकार का कोई ऋण है, तो वह भी इस प्रयोग से उतर जाता है एवं साधक सभी दृष्टियों से उन्नति करता हुआ पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता है।

दक्षिणावर्ती शंख 1 नग- 2100/-

जब से मनुष्य ब्रह्म से अलग हुआ है, तब से वह

सांसारिक विषय वासनाओं, भोग-विलास तथा छल प्रपंचों

में इतना अधिक मग्न हो गया है, कि उसे अपने जीवन का, अपने स्वरूप का और परस्पर सम्बन्धों का भी ज्ञान नहीं रहा और उसे इस बात का भी विचार नहीं रहा कि मानव जीवन की पूर्णता खाने-पीने या सन्तान उत्पन्न करने तक ही सीमित नहीं है, अपितु इससे आगे बढ़कर उस पूर्ण पुरुष से साक्षात्कार भी करना है, जिसे वेदों में ब्रह्म कहा है, और उस ब्रह्म में अपने आपको एकाकार कर देना ही जीवन की पूर्णता मानी गई है।

मानव जीवन को दिव्य और श्रेष्ठ बनाने के लिए संसार में कई साधन प्रचलित हैं, जिनमें भक्ति, योग, वैराग्य, प्राणायाम, साधना आदि हैं, परन्तु ये सभी दुरूह और लम्बी प्रक्रियाएं हैं, इसकी अपेक्षा सीधा और सरल मार्ग है-**यज्ञ**

शरीर को बाहर से पवित्र और शुद्ध बनाने के लिए स्वच्छता उपयोगी साधन है, परन्तु शरीर को अन्दर से पवित्र बनाने के लिए यह आवश्यक है, कि हम उस प्रकार के वातावरण में रहें जो कि आंतरिक दृष्टि से मानव को पवित्र और दिव्य बनाता है। शास्त्रों के अनुसार यह यज्ञ के माध्यम से ही सम्भव है, क्योंकि यज्ञ करते समय विशिष्ट मंत्रों के उच्चारण और श्रवण में सुमधुर पवित्र वातावरण की सृष्टि होती है तथा यज्ञ होने से जो धूम प्रवाहित होती है, वह प्राण वायु के साथ शरीर के अन्दर जाकर शरीर के आंतरिक भागों को भी निर्मल और दिव्य बना देती है।

इसीलिए प्राचीनकाल में अग्निहोम करने का विधान था, अर्थात् प्रत्येक गृहस्थ प्रातःकाल उठकर स्नान आदि से पवित्र होकर आंगन में एकत्र हो जाता था, तथा ताम्बे के बने हुए यज्ञ कुण्ड में कुछ आहुतियां विशिष्ट मंत्रों से देता था, इन विशिष्ट मंत्रों में अपने कुल देवता से संबंधित मंत्र होते थे, इन मंत्रों से परिवार का वातावरण पवित्र और दिव्य होता था, तथा यज्ञ करने से जो धूम निकलती थी, वह शरीर के अन्दर श्वास नली के द्वारा जाकर आन्तरिक समस्त अवयवों को दिव्य बना देती थी।

इतिहास साक्षी है, कि जब तक भारत में अग्नि होत्र की परम्परा कायम रही, तब तक व्यक्ति दीर्घायु, स्वस्थ और सुखी बना रहा, उसकी पारिवारिक समस्या कभी भी नहीं उभरी। मानसिक तनाव नहीं रहा और पूरे परिवार में एक ऐसे वातावरण की सृष्टि बनी रही, जिसे आदर्श कहा जा सकता है, उन लोगों की दीर्घायु होती थी, वे स्वस्थ, सबल और सुखी थे, परन्तु इसके विपरीत जब से यज्ञों की महत्ता कम हुई है, तब से संसार में किस प्रकार के वातावरण की सृष्टि हो रही है, यह किसी से छिपा नहीं है। आज जरूरत से ज्यादा स्वार्थ, छल, कपट आदि विस्तार पा रहा है, व्यक्ति एक दूसरे के प्रति सहृदय नहीं रहा, अपितु एक दूसरे को परास्त करने, एक दूसरे को समाप्त करने और एक दूसरे को नीचा दिखाने की हौड़ में लगा हुआ है। उसका शरीर तो अपवित्र भले ही न हो, परन्तु उसका मन और हृदय कलुसित और गंदा हो गया है।

शास्त्रों में स्पष्ट रूप से लिखा है, कि जीवन की समस्याओं का समाधान यज्ञ के द्वारा ही सम्भव है, यज्ञ के माध्यम से ही हम उस वातावरण की सृष्टि कर सकते हैं, जिसे दिव्य कहा जाता है, यज्ञों के द्वारा ही हम अपने जीवन को ऊर्ध्वगामी बना सकते हैं और अपने मन, आत्मा तथा हृदय को ब्रह्मत्व से साक्षात्कार कराने में समर्थ हो सकते हैं।

कई साधक कठिन साधनाएं करने के बावजूद भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाते, इसका कारण यह है, कि जब तक आत्मा के इर्द-गिर्द एकत्र पाप समाप्त नहीं हो जाते, तब तक मन दिव्य नहीं हो सकेगा और बिना दिव्यता के देवी-देवताओं के साक्षात् दर्शन कठिन ही नहीं असम्भव भी है।

इसीलिए किसी भी प्रकार की साधना सम्पन्न करने वाले साधक को चाहिए, कि वह सबसे पहले अपने अंतर को खोले और अपने शरीर को इस योग्य बनावे, कि वह उस परम सत्ता के दर्शन करने में अपने आपको समर्थ कर सके, यह समर्थता तभी आ सकती है जब शरीर के अंदर स्थित सभी विकार समाप्त हो जाते हैं, कलुसिता दूर होकर दिव्यता आ जाती है, ऐसा होने पर ही उसकी आंखों में वह ताकत आ सकती है, जो कि उस विराट स्वरूप के जाज्वल्यमान रूप को अपनी आंखों से देख सकें।

आज आवश्यकता इस बात की है, कि हम पुनः अपने घर में अग्निहोत्र प्रारम्भ करें, यदि नित्य सम्भव न हो तो सप्ताह में एक दिन परिवार के साथ बैठकर ताम्बे के बने पात्र में कुछ आहूतियां गायत्री मंत्र के साथ घी के द्वारा दें, जिससे कि एक सुरम्य वातावरण की सृष्टि हो सके, यदि यह भी सम्भव न हो तो जहां कहीं भी इस प्रकार के यज्ञ सम्पन्न हों, वहां स्वयं जावें, अपने बालकों में भी इस प्रकार के संस्कार विकसित करें कि वे यज्ञ के स्वरूप को और उसके महत्व को समझें तथा यज्ञ में पूर्ण रुचि और सामर्थ्य के अनुसार भाग लें, घर की बहुओं को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि यज्ञों का हमारे जीवन में क्या महत्व है, जिससे कि वे अपने आने वाले बच्चों में ये संस्कार विकसित कर सकें।

वस्तुतः यज्ञ हमारे ऊर्ध्वगामी जीवन का आधार है, यज्ञों के माध्यम से ही हम अपने जीवन को पूर्णता देते हुए ब्रह्मत्व की प्राप्ति कर सकते हैं, जिसके फलस्वरूप हमारा जीवन सभी दृष्टियों से सुखी, सरल, सात्विक और दिव्य बनता है।

अर्थ का स्वरूप
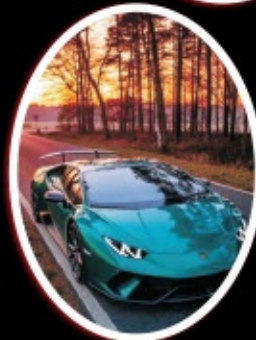
पुरुषार्थ - चतुष्ट्य में अर्थ का द्वितीय स्थान है। अर्थ का संबंध धन-सम्पत्ति से होते हुए, भौतिक उपकरण तथा सुख से भी है। वस्तुतः अर्थ का अभिप्राय उन सभी भौतिक साधनों एवं उपकरणों से है, जो व्यक्ति को सांसारिक सुख उपलब्ध कराते हैं।

व्यवहारिक दृष्टि से देखा जाए, तो मनुष्य की आर्थिक एवं भौतिक आवश्यकतायें अर्थ के माध्यम से ही पूर्ण होती हैं। अतः अर्थ से तात्पर्य उन सभी भौतिक वस्तुओं तथा साधनों से है, जो व्यक्ति की सुख-सुविधा में प्रयुक्त होते हैं। बृहस्पति ने अर्थ को जगत का मूल स्वीकार किया है -

"धनं मूलं जगत्"

धन की तीन प्रधान गतियां हैं -

- **भोग** - जिससे रोग पैदा होता है
- **नाश** - राज्य, चोर या लूटपाट के द्वारा
- **दान** - जिससे जीवन में यश, सम्मान, पुण्य एवं मोक्ष प्राप्त होता है

अर्थशास्त्र में इसे प्रधान तत्त्व निरूपित किया गया है -

अर्थ एव प्रधानः इति कौटिल्यः
अर्थमूलौ हि धर्मकामाविति

नीति शतक के अनुसार धनी व्यक्ति अच्छे कुल तथा उच्च स्थिति का माना जाता है। वह पण्डित, वेदज्ञ, वक्ता, गुणज्ञ तथा दर्शनीय माना जाता है -

यस्याति वित्तं स नरः कुलीनः
स पण्डितः स श्रुतवानगुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वेगुणाः कांचनमाश्रयन्ति।।

मनुष्य को अपने जीवन में अनेक प्रकार के कर्त्तव्य तथा उत्तरदायित्व पूरा करने के लिए अर्थ की आवश्यकता पड़ती है। यह अर्थोपार्जन धर्म के माध्यम से ही होना चाहिए, ऐसे शास्त्रों में कहा गया है। साधारणतः व्यक्ति सुख-सुविधा, धन-ऐश्वर्य का आकांक्षी रहता है। ऋग्वैदिक युग के आर्य भी भौतिक सुख-सुविधाओं के प्रति जागरूक थे, जैसी कि यह भ्रामक धारणा पश्चिमी विद्वानों तथा उनके चाटुकार भारतीय विद्वानों ने फैलायी है, कि 'भारतीय आर्यों को भौतिक सुख सुविधाओं का ज्ञान नहीं था तथा वे मात्र आध्यात्मिक उन्नति के लिए ही प्रयत्नशील रहते थे।'

- यह धारणा पूर्णतः निराधार है। भारतीय आर्य भी धन-सम्पत्ति, गाय-अश्व इत्यादि की वृद्धि के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते थे। इस प्रकार का भौतिक सुख व सुविधा अर्थ से ही संभव है।

अतः अर्थ का अभिप्राय विस्तृत है - यह सुख सुविधा का साधन है, जो व्यक्ति को भौतिक सुख तथा आनन्द प्रदान करने में सहायक होता है। व्यक्ति में प्राप्त करने की प्रवृत्ति की तुष्टि ही अर्थ है। ऐसी स्थिति में जीवन की समस्त सुविधायें, आर्थिक कामनायें तथा भौतिक सुख अर्थ से संबंधित हैं, जिनकी प्राप्ति अर्थ के माध्यम से ही संभव है। परिवार के पोषण एवं उसे समृद्ध तथा उन्नतिशील बनाने में अर्थ का महत्वपूर्ण योगदान है।

गृहस्थ जीवन के विभिन्न धार्मिक कार्यों व कर्त्तव्यों की पूर्ति अर्थ के व्दारा ही संभव हो पाती है। अतः अर्थ के माध्यम से व्यक्ति जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तथा अपने जीवन को सुखमय बनाने की चेष्टा करता है। स्पष्ट है, कि अर्थ सामाजिक लक्ष्य-प्राप्ति का साधन है, जिससे भौतिक सुख की प्राप्ति होती है।

इस संबंध में याज्ञवल्क्य तथा राजा जनक का प्रसंग स्मरणीय हैं -

''एक बार जब याज्ञवल्क्य राजा जनक के यहां पहुँचे तब जनक ने उनसे पूछा - आपको धन और पशु अथवा शास्त्रार्थ और विजय चाहिए?

उन्होंने उत्तर दिया - मुझे दोनों चाहिए।''

निश्चय ही याज्ञवल्क्य की दृष्टि में अर्थ का भी महत्व था।

भारतीय शास्त्रकारों ने अर्थ की महत्ता और आवश्यकता पर समान बल दिया है। महाभारत में कहा गया है - 'अर्थ उच्चतम धर्म है। प्रत्येक वस्तु उस पर निर्भर करती है। अर्थ सम्पन्न लोग सुख से रह सकते हैं। अर्थहीन लोग मृतक समान हैं। किसी एक के धन का क्षय करते हुए, उसके त्रिवर्ग को प्रभावित किया जा सकता है।'

अर्थ को काम तथा धर्म का आधार माना गया है। इससे स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त होता है। धर्म स्थापन के लिए अर्थ अनिवार्य है, क्योंकि इसी से प्राप्त सुविधा के व्दारा धार्मिक कृत्य किये

अर्थ एव प्रधानः इति कौटिल्यः
अर्थमूलो हि धर्मकामाविति।।

-चाणक्य
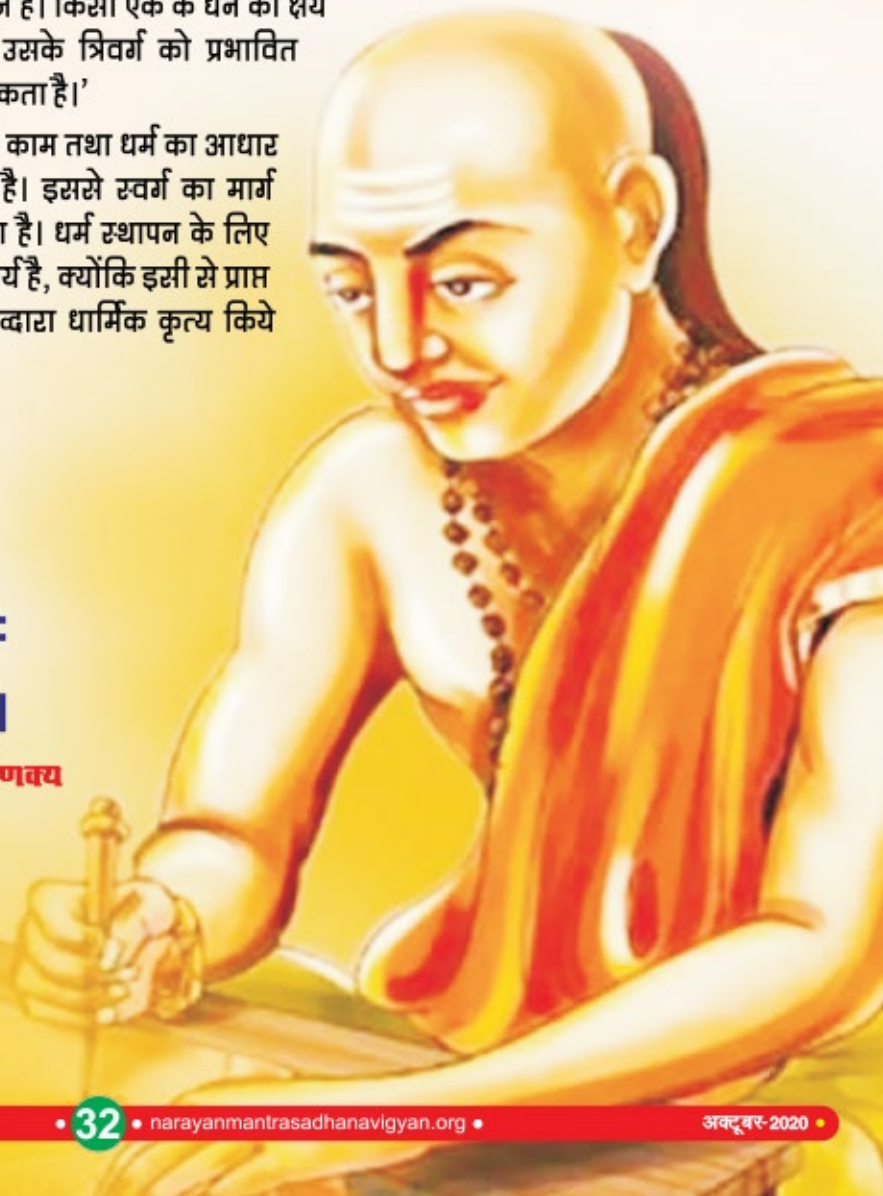
जा सकते हैं -

धनमाहु: परं धर्म धने सर्वप्रतिष्ठितम्।
जीवन्ति धनिनो लोके मृता येत्वधना नरा:।।
ये धनादपकर्षन्ति नरं स्व बलमस्थिता:।
ते धर्मार्थ कामं च प्रविघ्नन्ति नरं च तम्।।

जो धन से अनाव्दत है, वह धर्म से भी, क्योंकि समस्त धार्मिक कार्यों में धन की अपेक्षा की जाती है। अर्थ विहीन व्यक्ति ग्रीष्म की सुखी सरिता के समान माना गया है -

धनात् स्त्रवनि धर्मो हि धारणाद्धेति निश्चय:।
अकर्माणं मनुष्येन्द्र ते सोमान्तकर: स्मृत:।

अर्थ के बिना जीवन-यापन मनुष्य के लिए असंभव है -

प्राणायात्रापि लोकस्य बिना ह्यर्थं न सिध्यति।

बृहस्पति के अनुसार अर्थ सम्पन्न व्यक्ति के पास मित्र, धर्म, विद्या, गुण क्या नहीं होता। दूसरी ओर अर्थहीन व्यक्ति मृतक और चाण्डाल सदृश है। इस प्रकार अर्थ ही जगत का मूल है।

एक बार किसी संन्यासी योगी से एक जिज्ञासु ने प्रश्न किया - ''महाराज! आप तो सर्वथा वीतरागी और निस्पृह हैं, फिर भी आप लक्ष्मी (धन, अर्थ) को इतना अधिक महत्व क्यों देते हैं?''

योगी ने स्नेह से कहा - ''वत्स! तुम्हारी बात सत्य है, कि मैं लक्ष्मी को अधिक महत्व देता हूँ और निश्चय कारण भी है। मेरे इतने गृहस्थ और संन्यासी जो शिष्य हैं, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना भी तो मेरा दायित्व है। बिना लक्ष्मी के यह सब कैसे संभव है? इसलिए संन्यास जीवन में भी लक्ष्मी की पग-पग पर आवश्यकता पड़ती ही है। बिना धन के धर्म की कल्पना ही नहीं की जा सकती है।

इससे स्पष्ट है, कि धन की आवश्यकता जीवन में होती ही है।

कौटिल्य ने भी अर्थ को धर्म जितना ही शक्तिशाली व महत्वपूर्ण बताया है तथा काम और धर्म का आधार बताया है -

अर्थ एवं प्रधान: इति कौटिल्य:
अर्थमूलो हि धर्मकामाविति।।

आप स्तम्ब ने मनुष्य को धर्मानुकूल सभी सुखों का उपभोग करने के लिए निर्दिष्ट किया है। स्पष्ट है, कि व्यक्ति के जीवन में सुख की सर्वोपरि महत्ता है, जिसे प्राचीन विचारकों ने अत्यंत तर्कपूर्ण भाषा में व्यक्त किया है।

मनु के अनुसार त्रिवर्ग ही श्रेय है, जिसमें अर्थ की अपनी विशेष महत्ता है -

धर्मार्थादुच्यते श्रेय: कामार्थौ धर्म एव च।
अर्थ एवेह वा श्रेयस्त्रिवर्ग इति तु स्थिति:।।

स्पष्ट है कि मनुष्य के जीवन में अर्थ का महत्व धर्म से भी अधिक है, यदि व्यक्ति के पास धन है तभी वह धार्मिक कार्य कर सकता है। प्रत्येक व्यक्ति की भौतिक सुख-सुविधाओं व वस्तुओं के प्रति लालसा रहती है, जो धन के माध्यम से ही संभव है, किन्तु व्यक्ति का धन संग्रह धार्मिक रूप से होना चाहिए अधार्मिक रूप से नहीं तथा इसका व्यय भी धर्म सम्मत ढंग से होना चाहिए, न कि अधार्मिक ढंग से।

आधुनिक काल में अर्थ का संचय तथा व्यय दोनों ही अधिकांशत: अधार्मिक ढंग से ही होता है, जो कि पतन की ओर ही ले जाता है। व्यक्ति का अर्थ व्यय भी अधार्मिक कार्यों जैसे - द्यूत क्रीड़ा, मद्यपान, यौनाचार तथा कामाचार में ही होता है। अर्थ का संग्रह भी अधार्मिक कार्यों जैसे - छल, कपट, लूट, अवैधानिक रूप से आवश्यक वस्तुओं के संग्रह, भिन्न-भिन्न वस्तुओं की भिन्न-भिन्न वस्तुओं में मिश्रण के व्दारा होता है। अधार्मिकता तथा अन्याय से अर्जित भौतिक सुख तथा धन - सम्पत्ति का फल दु:खद होता है तथा धर्म विरुद्ध कार्यों में धन व्यय करना भी निन्दनीय माना गया है।

मनु के अनुसार यदि काम तथा अर्थ धर्म विरुद्ध हैं, तो उनका त्याग कर देना चाहिए-

परित्यजेदर्थकामौ यौ स्यातां धर्मवर्जितौ।
धर्मं चाप्यसुखोपेतं लोक विक्रुष्टमेव च।।

अत: अर्थ के निमित किये जाने वाले प्रयास में धर्म की संस्तुति अवश्य ही होनी चाहिए।

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

शिष्य का और गुरु का सम्बन्ध जीवन में सबसे श्रेष्ठतम माना गया है। इन सम्बन्धों को संसार की किसी भी तराजू में तोला नहीं जा सकता। 'शंकरभाष्य' ग्रन्थ में जगद्गुरु शंकराचार्य ने शिष्य की पांच कसौटियां रखीं, पांच पहचान बताई, शिष्य पांच लक्षण बताए जो इस प्रकार से हैं–

1 अगर वह शिष्य है तो फिर उसके हृदय में गुरु ही स्थापित होंगे, चौबीस घंटे, उसके मानस में गुरु शब्द ही होगा, मुंह से कुछ निकलेगा तो केवल गुरु ही निकलेगा और उसका जो भी खाली समय होगा, चाहे एक घंटा हो या दो घंटे हो, वह गुरु के प्रति ही समर्पित होंगे।

2 शिष्य वह है जो कि गुरु की जो इच्छा है उसमें वह सहायक बने। गुरु के कार्य के प्रति उसके जीवन का प्रत्येक क्षण समर्पित हो। जिस कार्य को करने से गुरु को प्रसन्नता होगी, वह कार्य शिष्य करे। उसके मन में तड़प होनी चाहिए कि मैं आगे बढ़कर गुरु सेवा का कार्य मांगू।

3 शिष्य वह है जो कि छाया की तरह गुरु के साथ रहे जैसे छाया, आदमी से अलग नहीं हो सकती, आप दो कदम चलेंगे तो छाया भी साथ चलेगी। शिष्य भी ऐसा ही हो और जब भी गुरु आवाज दे वह सामने खड़ा हो। उसके अंदर हर समय गुरु के पास रहने की तड़प हो। गुरु की रक्षा के लिए, गुरु की सेवा के लिए, गुरु के दर्द को बांटने के लिए वह हर समय तत्पर हो, तैयार हो।

4 शिष्य पूर्ण निष्ठा और विश्वास केवल और केवल अपने गुरु में रखे और उनके लिए अपना सब कुछ न्यौछावर भी कर दे। सब कुछ न्यौछावर करने का अर्थ यह नहीं कि आप अपना मकान गुरु के नाम लिख दें। इसका तो अर्थ यह है कि हर क्षण जीवन का गुरु सेवा में समर्पित कर दे।

5 अगर वह शिष्य है तो पूर्ण रूप से गुरु में समाहित हो जाए। फिर वह गुरु से अलग अपने आपको अनुभव ही न करे। हर क्षण उसे यही लगे कि वह गुरु से एकाकार हो गया है। गुरु और शिष्य में एक इंच का गैप भी दूरी बना देता है, फिर वह शिष्य नहीं कहलाया जा सकता। शिष्य का अर्थ यही है, जो पूर्ण रूप से गुरु में समा गया हो।

- जब गुरु से दीक्षा प्राप्त होती है तब व्यक्ति को ज्ञान होता है कि मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है, मेरे जीवन का कर्तव्य क्या है, उद्देश्य क्या है और मुझे किस जगह पहुंचना है।
- जब तक कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत नहीं हो जाती तब तक व्यक्ति मलमूत्र भरी देह से छूट नहीं सकता। तब तक वह पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता। तब तक वह अपने जीवन को ऊर्ध्वगामी नहीं बना सकता।
- कुण्डलिनी जागरण केवल और केवल एक सद्गुरु के माध्यम से संभव है। गुरु तो एक पूर्ण हंसावतार है। वे एक विशेष उद्देश्य से पृथ्वी लोक में आते हैं और अपना कार्य करके अन्य किसी लोक में विचरण करने के लिए प्रस्थान करते हैं।
- शिष्य माया में बद्ध है और गुरु पूर्ण ब्रह्म है। गुरु के माध्यम से ही शिष्य माया के जाल को तोड़ कर ब्रह्म तक पहुंच सकता है। गुरु के माध्यम से ही वह उस उच्च स्थिति तक पहुंच सकता है, जिसे पूर्णमदः पूर्णमिदं कहा गया है।
- गुरु तो शिष्य के लिए सदैव खुली बाहों से खड़ा रहता है, उसका निमंत्रण हर क्षण बना रहता है और केवल एक क्षण की आवश्यकता होती है, उसकी बांहों में समाने की, उसकी आत्मा में एकाकार होने की। उसकी ओर से कोई विलंब नहीं होता।
- अगर शिष्य प्रयास करने पर भी सफल नहीं हो पाता तो गुरु उस पर प्रहार करता है और यही गुरु का कर्तव्य भी है कि उस पर तीक्ष्ण से तीक्ष्ण प्रहार करे, तब तक जब तक कि उसका अहंकार का किला ढह न जाए। जब यह गिरेगा तभी विशुद्ध प्रेम, चैतन्यता तथा दिव्यता का प्रवाह होगा।
- गुरु के पास अनेक तरीके हैं, प्रहार करने के। कठोर कार्य सौंपना, परीक्षा लेना, साधना कराना और ये जब निष्फल होते दिखे तो विशेष दीक्षा देकर वह ऐसा कर सकता है। परंतु पहले वह सभी प्रक्रियाएं आजमा लेता है, ताकि व्यक्ति तैयार हो जाए, वह इतना सक्षम हो जाए कि विशेष दीक्षा के शक्तिशाली प्रवाह को सहन कर सके।

अटूट धन प्रदायक ऐश्वर्य महालक्ष्मी पूजन विधान

धन की आराध्य देवी लक्ष्मी मानी गई है

जो कि समुद्र से उत्पन्न भगवान विष्णु की प्रियतमा है, इसकी आराधना और पूजन जीवन का शुभ प्रतीक है।

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी ऐश्वर्य महालक्ष्मी सिद्धि पर्व का पावन दिवस दीपमालिकाओं की झिलमिलाहट को समेटे हुए सम्पूर्ण धरा को अपनी जगमगाहट से आलोकित करने आ गया है।

बहुत ही भव्यता और दिव्यता से इसका स्वागत प्रत्येक को प्रति वर्ष अपने घर-आंगन में करना ही चाहिये। इस पर्व को साधक को एक उत्सव के रूप में मनाना ही चाहिये, जिससे कि ऐश्वर्य एक नयी-नवेली दुल्हन की तरह पूर्ण श्रृंगार युक्त हो सदा के लिये उसके घर-आंगन में स्थायित्व प्राप्त कर सके, अतः उसे उस दिन स्वयं नये वस्त्र धारण करने चाहिए, विविध प्रकार के पकवान बनाने चाहिये... साधक के पास आनन्द प्रदर्शन करने का जो भी साधन हो उन सभी का प्रयोग इस पावन पर्व के स्वागत के लिये करना चाहिये। ये सारी क्रियाएं तो भारतीय करता ही है, किन्तु जो साधक है, उनके लिये तो यह 'दीपावली पर्व' एक नूतन रहस्य अपने आपमें समेटे हुए ही आता है।

और जो पूज्यपाद गुरुदेव के शिष्य हैं, वे प्रयास करके गुरुदेव के पास इस पर्व को पूर्णता के साथ सम्पन्न करने के लिए आते ही हैं लेकिन शायद इस वर्ष आप सभी को यह दीपावली पर्व अपने घर पर ही सद्गुरुदेव की सूक्ष्म उपस्थिति में मनाना पड़ेगा। शायद आज यही समय की मांग है। गुरुदेव प्रति वर्ष लक्ष्मी के एक विशिष्ट स्वरूप की साधना पत्रिका के माध्यम से प्रदान करते ही हैं, पूर्ण विधि-विधान के साथ जिस किसी भी साधक ने इसे सम्पन्न किया है, निश्चित रूप से उसने स्थाई सफलता प्राप्त की ही है।

हम सभी साधकों के जीवन में गुरुदेव के द्वारा प्रज्वलित साधना, वह भव्य दीप है, जिसके माध्यम से हमारे जीवन में आह्लाद, उमंग, उत्साह की झिलमिलाहट हर पल बिखरती ही रहती है।

यो यह दीपावली पर्व पूर्ण समृद्धि प्रदायक है ही, क्योंकि इस विशिष्ट पर्व पर भगवती महालक्ष्मी पूर्ण षोडश शृंगार युक्त हो वसुन्धरा पर पदार्पण करती है और उसके पदार्पण से ही यह पृथ्वी पूर्ण समृद्धि शालिनी बन उठती है।

लक्ष्मी के स्वरूप से तो प्रत्येक व्यक्ति परिचित है ही, और ऐसी स्थिति में उसके स्वरूप का वर्णन करना ठीक वैसा ही है, जैसे यह कहना, कि दोपहर में सूर्य का तेजस्वी अस्तित्व होता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि लक्ष्मी जहां निवास करती है, वहां लक्ष गुण रहते ही हैं। लक्ष्मी का प्रभाव क्षेत्र अति विस्तृत है, किसी भी देश के, किसी भी व्यक्ति के जीवन में, किसी भी क्षेत्र को यदि देखा जाए, तो लक्ष्मी का प्रभाव दृष्टिगोचर होता ही है- आवास, भोजन, वस्त्र, वाहन, पत्नी, पुत्र, भूमि, व्यवसाय, दान, पुण्य, यज्ञ, तीर्थ यात्रा, परोपकार या अन्य सामाजिक कृत्य, कार्य कोई भी हो, सबका साधन लक्ष्मी ही है।

कहा भी गया है-

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः,
सः पण्डितः सः श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वेगुणाः कांचनमाश्रयन्ति।।

अर्थात् जिस व्यक्ति के पास वित्त, धन, लक्ष्मी हो, वही मनुष्य कुलीन है, पण्डित है, गुणी है, वक्ता है, दर्शनीय है, कहने का तात्पर्य है, कि जो लक्ष्मी पति है, वह सर्वगुण सम्पन्न है, सभी लोग उसी की पूजा और प्रशंसा करते हैं।'

यों तो लक्ष्मी जगत्जननी है। 'विष्णु पुराण' के अंतर्गत वर्णन आता है, कि इस सृष्टि में जो कुछ भी स्त्रीवाची है, वह सब श्री लक्ष्मी जी ही हैं, इनसे भिन्न कोई वस्तु नहीं है। लक्ष्मी के दो स्वरूप वर्णित है-'श्रीं' रूप और दूसरा 'लक्ष्मी' रूप। प्रथम स्वरूप में ये श्री नारायण के वक्षस्थल में निवास करती हैं तथा दूसरा रूप इनका भौतिक अर्थात् प्राकृतिक सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी के रूप में है।

जो व्यक्ति इनकी साधना उपासना करते हैं, उन्हें निश्चित रूप से लक्ष्मी की प्राप्ति होती ही है फिर उनके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता है, उन्हें सम्पूर्ण ऐश्वर्य की प्राप्ति होती ही है। अतः आपको इस दीपावली पर्व पर एक विशिष्ट साधना विधान से भगवती महालक्ष्मी के इस विशिष्ट स्वरूप की साधना सम्पन्न करनी है, जिससे आपके जीवन के अभाव दूर होकर जीवन ऐश्वर्ययुक्त बन सके।

पूजन सामग्री

कुंकुम, केसर, गुलाल, मौली, चावल, नारियल, लौंग, इलायची, सिन्दूर अगरबत्ती, दीपक, रूई, माचिस, शुद्ध घृत, दूध, दही, घी, शहद, शक्कर, (पंचामृत), यज्ञोपवीत, पंचमेवा, फल, कलश, शुद्ध जल, गंगाजल, चन्दन, पान, पंच पल्लव, कमल पुष्प, पकाई हुई खीर, मिश्री, सरसों, कपूर, पीला वस्त्र, लक्ष्मी को पहिनाने योग्य वस्त्र, इत्र, सुपारी, तुलसी पत्र, काली मिर्च, गुग्गल, दूध का प्रसाद आदि।

साधना सामग्री पैकेट

1. अटूट धनप्रदायक ऐश्वर्य महालक्ष्मी यंत्र, 2. कमलगट्टा माला, 3. ऐश्वर्यप्रदायक लक्ष्मी शंख, 4. शत्रु स्तम्भक भैरव गुटिका, 5. ऋद्धि-सिद्धि गणपति गुटिका, 6. रोगमुक्ति पारद गुटिका, 7. भाग्योदय फल, 8. ऐश्वर्य महालक्ष्मी चित्र।

पवित्रीकरण

सर्वप्रथम अपने बायें हाथ में आचमनी से जल लेकर दाहिने हाथ से ढक लें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

मंत्रोच्चारण के बाद हाथ में लिए जल को अपने ऊपर छिड़क लें।

आचमन

मन, वाणी तथा अन्तरात्मा की शुद्धि के लिए निम्न मंत्र को बोलते हुए तीन बार आचमनी से जल लेकर पीयें-

ॐ केशवाय नमः।
ॐ नारायणाय नमः।
ॐ माधवाय नमः।

आचमनी से जल लेकर हाथ को धो लें।

शिखाबन्धन

अपनी शिखा को गांठ लगायें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें–

चिद्रूपिणि महामाये दिव्य तेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि ! शिखामध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्व मे।।

आसन शुद्धि

ॐ पृथ्वि! त्वया धृतालोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।।

इस मंत्र को बोलकर अपने आसन के दाहिने कोने को उठाकर, भूमि पर श्वेत चन्दन से त्रिकोण बनाकर गन्ध, अक्षत पुष्प अर्पित करते हुए निम्न मंत्र बोलें––

ॐ आधारशक्तये नमः, ॐ कूर्मासनाय नमः
ॐ अनन्तासनाय नमः, ॐ विमलासनाय नमः
ॐ आत्मासनाय नमः।

गुरु पूजन

सामने गुरु यंत्र व गुरु चित्र स्थापित कर लें तथा दोनों हाथ जोड़ कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।
गुरुं आवाहयामि स्थापयामि नमः।

ऐसा बोल कर पाद्य, स्नान, तिलक, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य आदि समर्पित करें। दोनों दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें -

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

भैरव पूजन

अपने दाहिनी ओर काली रंग की भैरव गुटिका स्थापित करें एवं पूजा प्रारम्भ करने से पूर्व भैरव का ध्यान करें तथा हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें––'आप मेरे पूजा क्रम को निर्विघ्न समाप्त होने में सहायक बनें'—

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।
ॐ भं भैरवाय नमः।।

गणपति आह्वान

अपने सामने एक सुपारी स्थापित करें एवं दोनों हाथ जोड़कर गणपति का आह्वान करें-

ॐ श्रीं गणपतये नमः ऋद्धि सिद्धि सहितं मम गृहे महागणपतिं आवाहनं समर्पयामि।

फिर सामने एक चौकी पर पीला वस्त्र बिछाये एवं ताम्रपात्र में ऐश्वर्य महालक्ष्मी यंत्र एवं चित्र की स्थापना करें। यंत्र के साथ ही चावल की ढ़ेरी पर ऐश्वर्य प्रदायक लक्ष्मी शंख, ऋद्धि-सिद्धि गुटिका, रोग मुक्ति पारद गुटिका एवं भाग्योदय फल भी स्थापित करें एवं सभी का कुमकुम, अक्षत, पुष्प से पूजन करें।

भगवती ऐश्वर्य महालक्ष्मी का ध्यान करें–

उद्यदादित्य संकाशां बिल्वकाननमध्यगाम्।
तनुमध्यां श्रियं ध्याये अलक्ष्मी परिहारिणीम्।।

उदित होते हुए सूर्य की कान्ति जैसी प्रभाव वाली, बेल के वन के बीच में रहने वाली, निर्धनता आदि दुःखों को मिटाने वाली भगवती लक्ष्मी का मैं अत्यन्त श्रद्धापूर्वक ध्यान करता हूँ।

ऐश्वर्य महालक्ष्मी आह्वान

तत्पश्चात भगवती लक्ष्मी का आह्वान करें-

कान्त्या कांचन सन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै हस्तोत्क्षिप्त हिरण्मया मृत घटै रासिच्य मानां श्रियम्।। विभ्राणा वर मब्ज युग्म मभयं हस्तैः किरीटोज्वलां क्षौमाबद्ध नितम्ब बिम्ब-लसितां वन्दे रविन्द-स्थिताम्।।

विनियोग

फिर हाथ में जल लेकर विनियोग करें -

ॐ अस्य श्री ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः मम सर्व ऐश्वर्य प्राप्त्यर्थं जपे विनियोगः।

अंगन्यास

ॐ ह्रां - हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं - शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं - शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं - कवचाय हुं।
ॐ ह्रौं - नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रः - अस्त्राय फट्।

करन्यास

ॐ ह्रां - अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रीं - तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्रूं - मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ह्रैं - अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रौं - कनिष्ठीकाभ्यां वौषट्।
ॐ ह्रः - ॐ करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः:।

आवाहन

श्री ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि।
आसन के लिए पुष्प चढ़ावें।

गन्ध

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

दीप

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीं। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो स आवह।। दीपदर्शयामि ॐ ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै नमः।

संकल्प

फिर हाथ में जल लेकर संकल्प करें -

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमदभगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणः द्वितीय परार्द्धे श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे (अमुक) क्षेत्रे, कार्तिक मासे, कृष्ण पक्षे, शनिवासरे, अमुक (अपना गोत्र बोलें) गोत्रोत्पन्नः अमुक नाम (अपना नाम

बोलें) धर्म, अर्थ, काम मोक्ष प्राप्ति निमित्तं श्री ऐश्वर्य महालक्ष्मी पूजनं करिष्ये।

जल भूमि में छोड़ दें।

कलश पूजन

कलश के जल में गन्ध, अक्षत एवं पुष्प डालकर वरुण देवता एवं तीर्थों का आवाहन करें––

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
पुष्पकराद्यानि तीर्थानि गंगाद्यास्सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि पूजाकाले सदा मम।।

कुंकुम से कलश पर पांच बिन्दियाँ लगायें और मंत्रोच्चारण करें-

पूर्वे ऋग्वेदाय नम:। दक्षिणे यजुर्वेदाय नम:। पश्चिमे सामवेदाय नम:। उत्तरे अथर्ववेदाय नम:। कलशमध्ये अपाम्पतये वरुणाय नम:।।

तत्पश्चात् कलश पर पांच पत्ते (आम, पीपल या अशोक वृक्ष के पत्ते प्रयोग कर सकते हैं) रखें। एक कटोरी को अक्षत से अच्छी तरह भर कर, कुंकुम से कटोरी पर 5 बिन्दी लगायें और उसे कलश पर रखें और उस पर नारियल स्थापित कर दें।

पाद्य, अर्घ्य

इसके बाद पाद्य देने हेतु पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें––

श्री ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै नम: पाद्यं,
अर्घ्यं, आचमनीयं समर्पयामि।

स्नान

तत्पश्चात स्नान हेतु निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए यंत्र पर जल चढ़ावें–

पंचामृत समायुक्तं जाह्नवी सलिलं शुभं।
गृहाण विश्व जननि स्नानार्थं भक्त वत्सले।।

पंचामृत से स्नान करायें। फिर जल से धोकर यंत्र को किसी अन्य प्लेट में पुष्प की पंखुड़ियाँ रखकर उसमें स्थापित करें।

मधुपर्क

निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए घी, शहद और दधि मिलाकर समर्पित करें–

कपिलं दधि कुन्देन्दु धवलं मधु संयुतं।
स्वर्ण पात्र स्थितं देवि मधुपर्कं गृहाण मे।।

वस्त्र

स्नान के बाद निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए वस्त्र का जोड़ा समर्पित करना चाहिए या मौली चढ़ायें–

दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वति मनोहरं।
दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके।।

आभूषण

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए आभूषण समर्पित करें–

रत्नकंकणवैदूर्य मुक्ताहारादिकानि च।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व मे।।

चन्दन

निम्न मंत्र बोलते हुए चन्दन समर्पित करें–

श्री खण्डागरु कर्पूर मृगनाभि समन्वितं।
विलेपनं गृहाण त्वं नमोऽसतु भक्तवत्सले।।

कुंकुम

निम्न मंत्र बोलते हुए कुंकुम समर्पित करें–

कुंकुमं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरुपिणं।
अखण्ड काम सौभाग्यं कुंकुमं प्रतिगृह्यताम्।।

अक्षत

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए अक्षत समर्पित करें–

अक्षतान्निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणि समन्वितान्।
गृहाण त्वं महादेवि देहि मे निर्मलां धियम्।।

पुष्पमाला

निम्न मंत्रोच्चारण के साथ पुष्पमाला समर्पित करें–

पद्मशंखजपापुष्पै: शतपत्रैर्विचित्रतां।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि।।

अबीर, गुलाल

निम्न मंत्र बोलते हुए अबीर, गुलाल समर्पित करें–

अबीरं च गुलालं च चोबा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चिता देवि तत: शान्तिं प्रयच्छ च।।

धूप

निम्न मंत्र से धूप समर्पित करें–

वनस्पति रसोद्भूतो गंधाढ्य: गन्ध उत्तम:।
आघ्रेय: सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

नैवेद्य

निम्न मंत्र से नैवेद्य समर्पित करें–

आर्द्रां य: करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।
नैवेद्य निवेदयामि ॐ ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै नम:।

फल

निम्न मंत्र से फल समर्पित करें–

फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरं।
तस्मात् फल प्रदानेन पूर्णा: सन्तु मनोरथा:।।

आचमन

निम्न मंत्र से आचमनार्थ जल का निक्षेप करें–

शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितं।
आचम्यतामिदं देवि प्रसीद त्वं सुरेश्वरि।।

ताम्बूल

निम्न मंत्रोच्चारण के साथ ताम्बूल समर्पित करें–

एला लवंग कर्पूर नागपत्रादिभिर्युत।
पूगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

दक्षिणा

निम्न मंत्र से दक्षिणा के रूप में द्रव्य समर्पित करें–

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो:।
अनन्तपुण्य फलदमत: शांतिं प्रयच्छ मे।।

फिर निम्न मंत्र की पाँच माला कमलगट्टा माला से जप करें। जप करते समय अपने पास कुछ अक्षत रखें। प्रत्येक माला जप के बाद कुछ अक्षत लक्ष्मी शंख में डाल दें। दूसरे दिन ये अक्षत अपने घर के चावलों में मिला दें एवं शंख पूजन स्थल में स्थापित कर दें–

मंत्र

।। ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै पूर्ण सिद्धिं देहि देहि नम: ।।

फिर अंत में हवन कुण्ड में लकड़ी जलाकर कमल बीज (जिस कमलगट्टा माला से मंत्र जप किया है, उन्हीं कमल बीजों से हवन करना है।) शुद्ध घी में मिलाकर उपरोक्त ऐश्वर्य महालक्ष्मी मंत्र से 108 आहुतियाँ प्रदान करें और फिर महालक्ष्मीजी की आरती सम्पन्न करें।

पुष्पाञ्जलि

आरती के पश्चात् खुले पुष्प लेकर निम्न मंत्रोच्चारण के साथ लक्ष्मी के चित्र व यंत्र पर अर्पित करें––

चरणकमलयुग्मं पंकजै: पूजयित्वा।
कनककमलमाला कंठदेशेऽर्पयित्वा।।
शिरसि विनिहितोऽयं मन्त्रपुष्पांजलिस्ते।
हृदयकमलमध्ये देवि हर्ष तनोतु।।
पुष्पांजलिं गृहाणेमां परब्रह्मस्वरूपिणि।
भ्रत्या समर्पितं देवि प्रसन्नो भव सर्वदा।
श्री महालक्ष्म्यै नम: पुष्पांजलिं समर्पयामि।।

क्षमा प्रार्थना

साधक को चाहिये, कि अत्यन्त विनम्रतापूर्वक माँ लक्ष्मी से पूजा में अज्ञानतावश रह गई त्रुटियों के लिए क्षमा-याचना करें–

अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे।
कोऽपर: सहते लोके केवलं मातरं विना।।
भूमौ स्खलित पादानां भूमिरेवावलम्बनम्।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे।।

विशेषार्घ्य

साधक अपने दाहिने हाथ में आचमनी से जल, अक्षत और पुष्प लेकर विशेषार्घ्य प्रदान करें––

गोक्षीरेण युतं देवि गन्धपुष्प समन्वितम्।
अर्घ्यं गृहाण वरदे वरलक्ष्मि नमोऽस्तुते।।
श्री महालक्ष्म्यै नम: विशेषार्घ्यं समर्पयामि।
अनया पूजया श्री वरलक्ष्मी प्रीयन्ताम्।
ॐ ब्रह्मार्पणमस्तु।

प्रसाद वितरण

लक्ष्मी का पूजन पूर्ण करने के पश्चात् नैवेद्य के रूप में अर्पित मिष्ठान्न को पूरे परिवार में, प्रसाद रूप में वितरित कर स्वयं भी ग्रहण करें। दूसरे दिन कलश के जल को पूरे घर में तथा परिवारजनों पर छिड़कें। पूजन में प्रयुक्त पुष्प तथा अक्षत आदि को एक पोटली में बांध कर अगले दिन नदी में विसर्जित कर दें। यंत्र, गुटिका आदि सामग्री पूजन स्थल में स्थापित कर दें। रोग मुक्ति गुटिका घर के प्रमुख व्यक्ति को लाल धागे में धारण करना है। दक्षिणा के रूप में समर्पित द्रव्य को किसी योग्य ब्राह्मण को दान में दे दें। लक्ष्मी को वस्त्र के रूप में अर्पित साड़ी गृहस्वामिनी स्वयं धारण करें। इस प्रकार पूर्ण भक्ति-भाव से सम्पन्न की गई पूजा से साधक के मन की इच्छा अवश्य पूर्ण होती है।

(दीपावली पूजन मुहूर्त एवं लक्ष्मी जी की आरती अगले माह के अंक में प्रकाशित की जा रही है।)

साधना सामग्री पैकेट - 800/-

देवी लक्ष्मी को धन की आराध्या देवी माना गया है। दीपावली एक श्रेष्ठ मुहूर्त है-लक्ष्मी पूजन का। इस अवसर पर तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी श्रद्धा से महालक्ष्मी का पूजन करता ही है। जीवन में पूर्णता प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों दृष्टि से सम्पन्नता आवश्यक है। आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्णता सद्गुरु के निर्देशों के अनुसार चलकर पाई जा सकती है। भौतिक दृष्टि से पूर्णता प्राप्त करने का माध्यम भगवती लक्ष्मी है, जिसकी साधना के माध्यम से अपने जीवन की दरिद्रता, अभाव हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त कर भौतिक पूर्णता प्राप्त की जा सकती है।

इस बार पूज्य गुरुदेव ने एक विशेष अटूट धन प्रदायक ऐश्वर्य महालक्ष्मी पूजन विधान दिया है जो कि प्रत्येक शिष्य को सम्पन्न करना है। इसमें विशेष सामग्री का समावेश है। साथ ही पूज्य गुरुदेव **अटूट धन प्रदायक ऐश्वर्य महालक्ष्मी दीक्षा** भी प्रदान कर रहे हैं, जिसकी न्यौछावर राशि 3100 रुपये है। जो शिष्य यह दीक्षा प्राप्त करेगा, उसे पूज्य गुरुदेव की ओर से आशीर्वाद स्वरूप यह पूजन सामग्री पैकेट (जिसकी न्यौछावर 800 रुपये है) नि:शुल्क भेजा जायेगा। जो साधक दीक्षा न लेकर सिर्फ सामग्री पैकेट प्राप्त करना चाहे, वह 800 रुपये सामग्री का न्यौछावर शुल्क जमा करके पैकेट प्राप्त कर सकते हैं।

रूप चतुर्दशी

14.11.20

या कोई शुक्ल पक्ष की पंचमी

सौन्दर्य पारिजात

रूपं देहि जयं देहि

यौवन एवं सौन्दर्य की साकार साधना

महालक्ष्मी का तो सम्पूर्ण स्वरूप ही सौन्दर्यमय है, फिर उनकी किसी भी रूप में उपासना की जाय, किन्तु जहां बात आती हो यौवन की एवं इस शारीरिक सौन्दर्य की, तब तो उनका एक विशेष रूप - सौन्दर्य लक्ष्मी ही उतारना पड़ता है इस जीवन में।

'सौन्दर्य पारिजात ग्रंथ' से प्राप्त एक व्यवहारिक रूप, साधना सौन्दर्य लक्ष्मी को जीवन में उतारने की...

जीवन का कोई भी मोड़ क्यों न आ गया हो, आयु किसी भी पड़ाव पर पहुंच कर कुछ थक कर और कुछ रुक कर पीछे मुड़ कर देख रही हो, बस अभी-अभी बचपन के दूधिया कोहरे को छांटकर यौवन के सूर्य की ऊष्मा देखनी प्रारंभ की हो या दिन भर की यात्रा के बाद सूरज की ढलती गहरी लाली जैसा यौवन हो गया हो, ऐसा हो ही नहीं सकता कि मन थक गया हो। मन तो खड़ा रहता है, जहां ओस में भीगी घास उन बूँदों के उस पार सूर्य के नवयौवन का प्रकाश निहारती रहती है। मन कभी भी नहीं थकता, यदि थकता भी है तो शरीर पर पड़ गई सलवटों देखकर।

और तब मन स्वयं को समझाने लगता है, कि कि अब हमारे यौवन के दिन लद गए। परंतु सौन्दर्य और यौवन ढलता नहीं है, हमारी धारणा ही उसे ढला मान लेती है। सौन्दर्य तो प्रत्येक स्थिति में सौन्दर्य होता है - उफनती नदी का भी सौन्दर्य होता है, तो झील में रुके जल में भी, तेज झूमते वृक्ष पर भी सौन्दर्य झूम रहा होता है तो नि:स्तब्ध खड़े मौन गगन से बात करते वृक्षों में भी सौन्दर्य ही होता है।

सौन्दर्य का बोध यह नहीं होता कि वह कितना उत्तेजक है, सौन्दर्य का बोध तो इसमें है कि उसमें कितनी तृप्ति है, जहां हम बैठे हैं और मन उस सौन्दर्य की मंद बयार से हल्के-हल्के झूमने लगे, वहीं सौन्दर्य है और जीवन में ऐसा सौन्दर्य उम्र के सत्रहवें वर्ष में भी आ सकता है तो पैंतीसवें वर्ष में भी और पचासवें वर्ष में भी। यही सौन्दर्य की शालीनता है और इस सौन्दर्यता का बोध ही किसी का वास्तविक सौन्दर्य बोध है।

सौन्दर्य निर्भर करता है, आंतरिक सौन्दर्य पर और आंतरिक सौन्दर्य आता है देवत्व पूर्ण चिंतन से, निश्छलता से, और सरलता से। रंग निखारा जा सकता है किसी प्रसाधन का सहारा लेकर, लेकिन भोलापन और मासूमियत निखारने की कोई क्रीम अभी तक नहीं बनी है, अल्हड़पन लाने का कोई फार्मूला भी नहीं बनाया जा सका है, बरबस किसी को अपनी ओर खींच लाने वाली कोशिश पैदा करने की कोई भी औषधि न तो बनी है न बन सकेगी। अपने पास किसी को खींच कर बैठा लेना और उसका उठने का मन न चाहे - ऐसा तो प्राकृतिक रूप से अथवा किसी साधना द्वारा प्राप्त चेहरे पर दौड़ती मुस्कान द्वारा ही संभव है। नयनों और वाणी से कोयल की कुहूक बन कर जीवन की घनी अमराई में फूटता है, ऐसा ही सौन्दर्य मन पर वर्षा की पहली बूँद बन रिमझिम बन कर गिरता है और भर देता है एक सोंधी सी महक . . .

क्या होता है ऐसे सौन्दर्य का रहस्य, क्यों कभी कभी और कहीं-कहीं ही दिखाई पड़ता है यह सौन्दर्य जो बरसों-बरस बीत जाने के बाद भी मन से भुलाए नहीं भूलता और मापदण्ड बन जाता है, जिसको याद कर हम किसी और का सौन्दर्य परखें। किसी भी स्त्री अथवा पुरुष के अन्दर सौन्दर्य का एकमात्र रहस्य उनके अंदर समाई हुई 'सौन्दर्य लक्ष्मी' ही होती है। किसी किसी को यह लक्ष्मी जन्म से और किसी को मिली होती है भाग्य से, जैसे कोई-कोई जन्म लेता है धन लक्ष्मी की गोद में। शेष सभी को यदि इस सौन्दर्य लक्ष्मी को प्राप्त करना है, तो दो उपाय शेष बचते हैं, ये दो उपाय वही हैं जो किसी भी वस्तु को प्राप्त करने के लिए आवश्यक होते हैं - अर्थात् कठोर परिश्रम या फिर साधना का बल। लेकिन सौन्दर्य का जब प्रश्न होता है, तो परिश्रम से प्राप्त करना उतना सहज नहीं होता जितना कि सौन्दर्य लक्ष्मी साधना द्वारा।

पुरुष हो, तो देवत्व पूर्ण मुख मुद्रा लिए बलिष्ठ शरीर। और स्त्री हो तो - सुगठित शरीर, चेहरे पर लावण्य की हल्की पर्त झलकाती हुई, लगे कि हम जिस सौन्दर्य का वर्णन करते रहे वही कई-कई युग बाद आकर सामने खड़ा हो गया है। घुटनों तक लटकते बलिष्ठ लम्बे बाहु, उभरा हुआ सीना, गुलाबी आभा लिए सुगठित चेहरा... फिर इकहरा मांसल बदन, सारे देह से मादक सी लहरें लिए हुए घने बाल और होठों पर सलज्ज मुस्कान यही तो है सौन्दर्य की झलक और यही तो उतर आता है आँखों में सौन्दर्य की बात कहते-सुनते।

जीवन में इसको प्राप्त करने का एक ही उपाय है - 'सौन्दर्य लक्ष्मी'। सौन्दर्य लक्ष्मी किसी देवी विशेष का नाम नहीं, जब हम भगवती महालक्ष्मी की साधना उन्हें सौन्दर्य की प्रदात्री मान कर करते हैं, तब वे ही उतर आती हैं सौन्दर्य लक्ष्मी बनकर और सौन्दर्य धन के रूप में दे जाती हैं उमंग, उल्लास, खिलखिलाहट, आकर्षण, सम्मोहन... और सौन्दर्य भी तो...

सौन्दर्य फिर टिक जाता है ऐसा कि जो न छलके, न बिखरे, बस अपनी ठण्डक से सामने वाले की आँखों में हल्की सी कोई लहर दौड़ा दे... शीतलता की।

देवी का सबसे अधिक मनोहर चित्रण जिस रूप में किया जाता है, वह है उसका महालक्ष्मी स्वरूप। कवियों और रचनाकारों ने देवी के मनोहर स्वरूप को लेकर अनेक सुन्दर कल्पनाएं की हैं, काव्य रचे हैं और उपमाएं दी हैं। बस यहीं तक नहीं उन्होंने और आगे बढ़कर उन्हें ही आधार बनाकर उपाय भी ढूंढ निकाले - यौवन को प्राप्त करने के, असौन्दर्य को सौन्दर्य में परिवर्तित करने के, सौन्दर्य को और भी अधिक

सजा-संवार देने की, यौवन की उछाल में कुछ और भी सूत्र जोड़ देने को। और सौन्दर्य के तो सैकड़ों पक्ष हैं - रूप, रंग, अंगों का कटाव, केशों का घनापन, झुर्रियों का दूर होना, चेहरे पर ओज बढ़ना, कपोलों पर गुलाबी आभा पुष्प-गुच्छ की तरह आ मंडराना, आँखों में गुलाबी रंगत आ जाना या चमक उठना। सौन्दर्य तो अंग अंग की बात है, लेकिन क्या इतना सब कुछ एक साथ संवारा जा सकता है? क्या जीवन में केवल सौन्दर्य को लेकर ही अपने बहुमूल्य समय में से अधिकांश समय व्यतीत किया जा सकता है?

और ऐसे ही प्रश्नों के उत्तर हैं मध्य कालीन ग्रंथ 'सौन्दर्य पारिजात' में। विद्वान, शास्त्रकार अनेक प्रश्नों को लेकर सौन्दर्य के विषय पर सौन्दर्य की विवेचना करते हुए, नख शिख वर्णन करते हुए एक ग्रंथ लिखना प्रारंभ किया, लेकिन अंत तक वह भी इन्हीं प्रश्नों पर पहुंचा कि ऐसा कौन सा उपाय संभव है, ऐसी कौन सी एक क्रिया है, जिसके द्वारा पूरा का पूरा जीवन सौन्दर्यमय बना लिया जाए। अनेक पद्धतियों पर पूरे जीवन भर चोट के बाद जिस पद्धति को सर्वश्रेष्ठ माना वह है - 'सौन्दर्य लक्ष्मी साधना', जो कालान्तर में 'सौन्दर्य पारिजात साधना' के नाम से भी विख्यात हुई।

इसके ग्रंथकार ने ग्रंथ में अत्यंत सुन्दर ढंग से कहा है, कि यौवन तो पारिजात का पुष्प है, जिसकी आयु बहुत कम होती है और जिसका सौन्दर्य अप्रतिम ... लेकिन उसकी आयु स्थायी की जा सकती है, उसकी सुगंध बचाई जा सकती है तो केवल इस सौन्दर्य पारिजात प्रयोग से।

शास्त्रकार ने भगवती लक्ष्मी के स्वरूप का मधुर चित्रण करते हुए स्पष्ट किया है -

किस प्रकार से भगवती लक्ष्मी पूर्ण यौवन और सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है, जो अपने वरदायक प्रभाव से साधक के जीवन को भी सौन्दर्यवान बना सकती है।

भगवती महालक्ष्मी जब अपने 'सौन्दर्य लक्ष्मी' स्वरूप में कृपावान होती है, तो केवल बाह्य सौन्दर्य ही नहीं आंतरिक सौन्दर्य भी प्रदान कर जाती है, क्योंकि यही तो वह उपाय है जिससे पारिजात की सुगंध भर ली जाए अपने अंदर और वह फिर महकता रहता है पूरे जीवन भर, हर पल हर क्षण अपनी आभा और रंग के साथ, जो क्रिया किसी भी उपाय या औषधि या पद्धति से संभव हो ही नहीं सकती, अनेक उपाय कर लेने के बाद, अनेक प्रसाधनों का दुष्प्रभाव देख लेने के बाद यदि जीवन में एक ऐसा साधनात्मक विधान भी अपना कर देख लिया जाए, तो इसमें कोई हानि नहीं है। इस तन की बगिया में कहीं न कहीं से, फूलों भरा पारिजात की सुगंध लिए, कोई नन्हा सा पौधा अवश्य खिल जाता है...

साधना विधि

'सौन्दर्य पारिजात साधना' को 14.11.20 अथवा किसी भी शुक्ल पक्ष की पंचमी से प्रारंभ किया जा सकता है। यह 11 दिन का प्रयोग है। 14.11.2020 को पड़ने वाली रूप चतुर्दशी की प्रात: वेला में इसे प्रारंभ कर दिया जाता है, तो निश्चय ही इस साधना में सफलता मिलती है।

कुछ विद्वानों के अनुसार इस प्रयोग को किसी भी पुष्य नक्षत्र से प्रारंभ कर आगे के पांच दिनों तक किया जाए, तब भी यह पर्याप्त प्रभावकारक होता है। साधक दोनों ही तिथियों में से कोई भी एक अपनी सुविधानुसार अपना सकते हैं, दोनों ही प्रामाणिक हैं।

अपने सामने लकड़ी के बने बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछाकर उस पर सुगंधित पुष्प की पंखुड़ियां के आसन पर ताम्र पत्र से निर्मित 'सौन्दर्य लक्ष्मी यंत्र' को स्थापित करें। यदि कमल का पुष्प उपलब्ध हो, तो सर्वश्रेष्ठ माना गया है। उस पर एक 'सौन्दर्य पारिजात गुटिका' भेंट चढ़ाएं। इसके अतिरिक्त साधना में किसी उपकरण की आवश्यकता नहीं है। यंत्र पर सुगंधित द्रव्य अर्पित करें, साथ ही इत्र को अपने वस्त्रों एवं शरीर के अंगों पर भी लगाएं।

आप अप्सरा माला से 11 माला जप करें-

सौन्दर्य लक्ष्मी मंत्र

।। ॐ ह्रीं सौन्दर्य देहि कामेश्वराय ॐ नमः।।

Om Hreem Soundaryam Dehi Kaameshwaraay Om Namah

इस प्रकार यह ग्यारह दिन तक नित्य करें। मंत्र जप के उपरांत सौन्दर्य लक्ष्मी यंत्र को अपने पूजा स्थान में रख दें, तथा सौन्दर्य पारिजात को किसी डिब्बी अथवा पीले वस्त्र में बाँधकर अपने वस्त्रों के रखने के स्थान पर रख दें।

लक्ष्मी के इस स्वरूप का वर्णन अन्यत्र किसी भी ग्रंथ में इस प्रकार से प्रयोग रूप में प्रकाशित नहीं हुआ है और न ही इसकी पूर्ण व्याख्या की जा सकी है। लेकिन भगवती महालक्ष्मी के ही एक स्वरूप की साधना होने के कारण निश्चित रूप से फलदायक है ही और सही अर्थों में जीवन का ऐसा धन प्राप्त करना है जो फिर आप छुपाना भी चाहें तो छुपेगा नहीं।

साधना सामग्री पैकेट -450/-

पश्चिमोत्तान आसन

आप दैनिक जीवन में प्रात:काल 10-15 मिनिट का समय देकर मजे से योगासन करके शरीर को चुस्त-दुरुस्त और निरोग बनाए रख सकते हैं। इस लेख में भी एक आसन की विधि एवं गुण लाभ से आपको परिचित कराया जाएगा।

शरीर को स्वस्थ और फुर्तीला रखने के लिए ज्यादा नहीं तो सिर्फ 4-5 प्रकार के आसन भी कर लिए जाएं तो ही काफी है। इस स्तंभ में प्रत्येक माह कुछ प्रमुख आसनों की विधि और उनसे होने वाले लाभ का विवरण प्रस्तुत किया जाता है। इसी क्रम में पश्चिमोत्तान आसन का विवरण प्रस्तुत है।

पश्चिमोत्तान आसन

प्राणायाम का अभ्यास करने के बाद 1-2 मिनिट उसी अवस्था में बैठकर धीरे-धीरे सांस लेते रहें और सामाय स्थिति में आने के बाद यह आसन करें।

अभ्यास-अपने दोनों पैर सामने सीधे फैला दें। एड़ियां व अंगूठे मिलाकर रखें। पीठ व गर्दन सीधी रखकर दोनों हाथ दोनों पैरों के ऊपर सामने लम्बे फैलाएं। अब आगे की ओर झुकते हुए हाथों की अंगुलियों से पैर के अंगूठे को छूने या पकड़ने की कोशिश करें। पैर जमीन से सटे हुए रखें याने घुटने उठने न दें। यदि हाथ अंगूठे तक न पहुंच सके तो जोर न लगाएं, जहां तक हाथ आसानी से जा सकें, वहीं तक रहने दें। धीरे-धीरे अभ्यास करके बढ़ाने की कोशिश करते रहें तो कुछ दिनों में पीठ, कमर व पेट में लोच पैदा होने पर अंगूठे पकड़ने लगेंगे।

हाथ लम्बे करके गर्दन झुकाकर सिर दोनों भुजाओं के बीच में करके नाक घुटनों में लगाने का प्रयास करें। इस वक्त सिर झुकाते झुकाते सांस बाहर निकाल दें और कुछ क्षणों तक ठहर कर सांस अन्दर लेते हुए धीरे-धीरे हाथ पीछें खींचते हुए सीधे हो जाएं और हाथ बगल फर्श पर रख लें। यह एक अभ्यास हुआ। थोड़े क्षण रुक कर फिर इस विधि को दोहराएं। प्रतिदिन कम से कम 3 बार और अधिक से अधिक 5 बार यह अभ्यास करना चाहिए।

लाभ : यह आसन भी सभी पाचन अंगों को बल प्रदान करता है, भूख बढ़ाता है और उदर विकार नष्ट करता है। बढ़े हुए पेट और कमर के मोटेपन को कम करता है। मेरुदण्ड, पीठ, कंधे, गर्दन और सीने को बल प्रदान करके स्वस्थ और सुडौल बनाता है। कमर व पीठ दर्द दूर करता है। मेरुदण्ड (रीढ़) के विकार नष्ट करता है। क्लोम (पेन्क्रियाज) को सक्रिय और बलवान बनाकर क्लोम रस (इन्सुलिन) के प्रवाह को ठीक करता है जिससे मधुमेह नहीं होता और जिन्हें मधुमेह रोग होगा उन्हें लाभ पहुंचाएगा।

इस आसन के अभ्यास में भी जल्दबाजी और बलप्रयोग नहीं करना चाहिए। धीरे-धीरे अभ्यास के द्वारा इसे सम्पूर्णता की ओर ले जाना चाहिए। जब यह आसन ठीक से होने लगेगा तब अंगूठे ही नहीं पैर के तलुवे पूरे हाथों की पकड़ में आने लगेंगे और नाक न सिर्फ घुटनों को ही स्पर्श कर सकेगी बल्कि दोनों घुटनों के बीच में फर्श को भी स्पर्श कर सकेगी।

सावधानी - गर्भवती महिलाएं इस आसन को न करें। जिन्हें पीठ में कोई चोट लगी हो, कमर में चोट हो या कभी फ्रेक्चर हुआ हो उन्हें भी बड़ी सावधानी से सरलतापूर्वक धीरे-धीरे इसका अभ्यास करना चाहिए।

अभिन्नता : भक्त और भगवान

स्वनिगममपहायय मत्प्रतिज्ञा
मृतमधिकर्तुमवप्लुतो रथस्य:।।

पितामह भीष्म कहते हैं–''हे नाथ ! आपने जगत में मेरी प्रतिष्ठा कितनी बढा दी। मुझे कितना सम्मान दिया, मेरी प्रतिज्ञा का मान रखने के लिए आपने अपनी प्रतिज्ञा तक तोड़ दी।''

भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत के युद्ध में कोई भी अस्त्र-शस्त्र धारण न करने की प्रतिज्ञा की थी। भीष्म ने भी प्रतिज्ञा की कि–'मैं ऐसा युद्ध करूँगा कि श्रीकृष्ण को अस्त्र-शस्त्र धारण करने ही पड़ेंगे। मैं उन्हें हथियार धारण करवा कर ही रहूँगा और फिर महाभारत के युद्ध में भीष्म ने तो जो अपने बाणों की वर्षा की तो एक क्षण ऐसा आया कि–महारथी अर्जुन की एक न चली और अर्जुन मूर्च्छित हो गये और पितामह भीष्म की बाण वर्षा देखकर श्रीकृष्ण ने सोचा कि यदि भीष्म इसी प्रकार बाण चलाते रहेंगे तो 'मेरा' अर्जुन तो परास्त हो जायेगा और फिर अनर्थ हो जायेगा। असत्य की सत्य पर विजय हो जायेगी। इसकी अपेक्षा मेरी प्रतिज्ञा चाहे टूटती हो तो टूट जाये किन्तु अब मुझे अस्त्र उठाना ही है।'

यह सोचकर भगवान श्रीकृष्ण रथ से कूद पड़े और चक्र लेकर भीष्म की ओर दौड़े। भीष्म ने उसी समय अपने अस्त्र रखकर श्रीकृष्ण को प्रणाम कर भगवान की जय-जयकार की।

ऐसे हैं हमारे भगवान, कि भक्तों की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए वे स्वयं अपनी प्रतिज्ञा तोड़ देते हैं। यह एक लीला है भक्त जब भगवान से अभिन्नता प्राप्त कर लेता है तब भगवान उसे अपने से अलग मानते ही नहीं हैं वे उसकी हर बात का पूरा-पूरा सम्मान करते हैं तब वे मानते हैं कि स्वयं की पराजय भले ही हो जाय पर भक्तों की विजय होनी चाहिए।

तब भीष्म कहते हैं कि मेरी और श्रीकृष्ण की–दोनों की प्रतिज्ञा पूरी हुई। उस समय मैं भगवान के दो रूप एक साथ देख रहा था। एक स्वरूप रथ पर विराजमान था और दूसरा रथ से कूदकर चक्र लेकर मेरी ओर दौड़ रहा था। अर्जुन के मूर्च्छित होने से रथ को कौन संचालित करेगा, ऐसा सोचकर भगवान का एक स्वरूप रथ संभाल रहा था और उस रूप ने कोई अस्त्र-शस्त्र धारण नहीं किया था। हमें यह समझने के लिए लौकिक जगत से ऊपर उठकर पारलौकिक जगत में प्रवेश करना पड़ेगा क्योंकि ऐसा दृश्य देखने और समझने के लिए चाहिए स्वच्छ और निर्मल आँखें और भाव से आपूरित हृदय।

इस समय भीष्म ने भगवान् श्रीकृष्ण की जो स्तुति की वह अनुपम है। ''भक्त मुझे भले ही भूल जाए तो भी मैं उसे नहीं भूलता''–ऐसा स्वयं भगवान ने कहा है।

सद्‌गुरुदेव ने भी यही कहा है– 'गुरु पादुका पूजन कैसेट में' कि तुम मेरे हो, मेरे प्राणों की धड़कन हो।

मैं हमेशा तुम्हें प्यार देता हूं, तुम अपनी तकलीफें देते हो, मैं तुम्हें हंसाता हूं। तुम मुझे दुख देते हो फिर भी मैं मुस्कुराता रहता हूँ। अपनी प्रेम की वाणी से तुम्हें समझाता हूँ। तुम्हें हृदय से लगाता हूँ। फिर तुम भटक जाते हो, मैं फिर तुम्हें आवाज देता हूँ। तुम्हारा मेरा शरीर का सम्बन्ध नहीं, प्राणों का सम्बन्ध है... आत्मा का सम्बन्ध है... मैं हर बार तुम्हें आवाज देता रहूंगा...

इस अद्वितीय कैसेट को सुनकर आप समझ सकते हैं। अवश्य सुने, यह मेरा आपसे विनम्र आग्रह है....गुरु पादुका पूजन।

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष—माह का प्रारम्भ अशुभ सूचना लायेगा। बनाई गई योजना सफल नहीं होगी। शत्रुओं का दबाव रहेगा। कारोबार में नुकसान हो सकता है। बेरोजगारों को रोजगार के उचित अवसर मिलेंगे। कोई पुराना विवाद निपट जायेगा। परिवार में खुशी का माहौल होगा। विद्यार्थी वर्ग अपने परिणाम से प्रसन्न रहेगा। अविवाहितों का विवाह का योग है। नौकरीपेशा लोगों का प्रमोशन का समय है। आप असहाय लोगों की मदद करेंगे। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। कोई अनर्गल कार्य करने से बदनामी हो सकती है। कानूनी दांव-पेचों से दूर रहें। माह का अन्तिम समय भी अनूकूल नहीं है, शत्रु वर्ग प्रसन्न रहेगा। मित्रों का सहयोग आपको राह दिखायेगा। आप इस माह बगलामुखी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-6, 7, 8, 15, 16, 23, 24, 25

वृष—माह का प्रारम्भ शुभ परिणामों से होगा। बेराजेगारों को उचित मौके मिलेंगे। कैरियर हेतु लिए गए निर्णय भविष्य में उचित परिणाम देंगे। शत्रु वर्ग का दबाव रहेगा। वाद-विवाद समाप्त होगा। भाइयों का सहयोग मिलेगा। मित्र वर्ग भी सहयोग करेगा। अधिकारियों से तासमेल रहेगा। दूसरे सप्ताह में कोई अशुभ समाचार मिल सकता है, जिससे मानसिक टेंश्न होगा, कोई भी निर्णय सोच-विचार कर लें। मंजिल तक पहुंच सकेंगे। सोचे गये कार्य पूर्ण होंगे। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। विरोधी भी शांत होंगे। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। अन्तिम सप्ताह में सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। नौकरी भी मिल सकती है। स्थितियां बदलेंगी, ध्यान रखें आवेश में आकर कोई निर्णय न लें नुकसान हो सकता है। आप इस माह भैरव दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-8, 9, 10, 17, 18, 25, 26, 27

मिथुन—माह का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। रुकावटें परिश्रम से दूर हो जायेंगी। यात्रा हो सकती है। कारोबार पर ध्यान दें, लाभ के साथ हानि भी हो सकती है। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। नौकरीपेशा लोगों को लाभ होगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। माह के बीच में कोई योजना निष्फल भी हो सकती है। कोर्ट-कचहरी के मामले में टेंशन रहेगी। घरेलू समस्यायें सुलझ जायेंगी। जमीन-जायदाद के विवाद भी सुलझेंगे। साझेदारी व्यवसाय में सावधानी बरतें। आर्थिक स्थिति इस समय थोड़ी डांवाडोल रहेगी। परिवार में तनाव भी हो सकता है। किसी वजह से अपमानित भी होना पड़ सकता है। माह के अंत में स्वास्थ्य पर ध्यान दें। रुके धन की प्राप्ति होगी। रुके हुये कार्यों को पूरा कर सकेंगे। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। आप भगवान विष्णु की साधना करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 3, 11, 12, 19, 20, 28, 29, 30।

कर्क—प्रथम सप्ताह अनुकूल रहेगा। प्रोपर्टी के कार्य में लाभ होगा। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में सफल होंगे। शत्रु पक्ष पराजित होंगे। परिश्रम कर मंजिल की ओर अग्रसर होंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। दूसरे सप्ताह में समस्यायें आ सकती हैं। रिश्तेदारों से खटपट हो सकती है। यात्रा का सुअवसर मिलेगा। शुभचिंतकों का सहयोग लाभदायक रहेगा, टेंशनें दूर होंगी। रुके कार्य पूरे होंगे। किसी से पैसा उधार लेने से बचें, अन्यथा परेशानी हो सकती है। महत्वपूर्ण कार्यों में प्रगति होगी। इस समय उतार-चढ़ाव की स्थिति बनेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। किसी नये कार्य को शुरू करने से बचें शत्रु वर्ग परेशान करेगा। फालतू के खर्चे बढ़ेंगे। परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा। दूसरों के लिये हित का कार्य करेंगे। इस माह आप भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करें।

शुभ तिथियाँ-3, 4, 5, 13, 14, 21, 22, 30, 31

सिंह—माह का प्रारम्भ असंतोषजनक है। गृहस्थ में तनाव एवं कोई कष्ट भी आ सकता है। नया वाहन खरीदने से बचें। गलत सोहबत से दूर रहें। आप किन्हीं कठिनाइयों में भी हार मानने वाले नहीं हैं, परिश्रम सफल होगा। रुके कार्य पूरे होंगे। जो सपने संजोये थे, पूरे कर सकेंगे। जमीन के केस का निर्णय अनुकूल होगा। माह के मध्य में निर्णय सोच-विचार कर लें। शत्रुओं से सावधान रहें। किसी नये व्यक्ति से मुलाकात यादगार रहेगी। मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें हो सकती हैं। हड़बड़ी में कोई कार्य न करें। मित्रों का सहयोग मिलेगा। कोई खुशखबरी मिल सकती है। जल्दबाजी के निर्णय छवि को नुकसान पहुंचा सकते हैं। आय के स्रोत बढेंगे। आप गणपति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-6, 7, 8, 15, 19, 23, 24, 25

कन्या—माह के प्रारम्भ में सोचा गया कार्य पूर्ण होगा, मेहनत सार्थक होगी। मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। अपनी सूझबूझ से किया गया कार्य सफल होगा। दूसरों के प्रति अच्छा व्यवहार करेंगे। शत्रु से सचेत रहें। वाहन धीमी गति से चलायें। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। दाम्पत्य जीवन में तनाव हो सकता है। कोर्ट के कार्यों में अनुकूलता मिलेगी। यात्रा लाभप्रद रहेगी। विद्यार्थी वर्ग सफलता से प्रसन्न रहेगा। ऑफीसर से मुलाकात

उत्साह बढ़ायेगी। टेंशन के कारण स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। संतान व्यापार में सहायता करेगी। पति-पत्नी में मधुरता का वातावरण हो जायेगा। चलते-फिरते किसी से उलझे नहीं, हानिकारक होगा। जल्दबाजी में निर्णय न लें। आप भाग्योदय दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 3, 11, 12, 19, 20, 28, 29, 30

तुला–माह का प्रारम्भ शुभ कार्यों से होगा। जमीन-जायदाद के मामले अपने पक्ष में होंगे। परिवार में प्रेम का माहौल रहेगा। नये मकान में प्रवेश भी सम्भव है। रुके कार्य पूर्ण होंगे। ऑफिस में किसी से झगड़ा हो सकता है, क्रोध पर नियंत्रण रखें। फिजूल खर्ची से बचें। घर में किसी बात पर अशांति का माहौल हो सकता है। चलते-फिरते किसी से टकराहट हो सकती है। भौतिक सुखों में वृद्धि होगी। भाइयों से सहयोग मिलेगा। माह के मध्य में सावधान रहें, कोई अपना धोखा दे सकता है, महत्वपूर्ण कार्य रुकेंगे। परिवार में मतभेद हो सकते हैं परन्तु जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आखिरी सप्ताह में किसी कार्य में जल्दबाजी न करें। मानसिक चिंताओं से ग्रस्त रहेंगे। कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। आप पारद शिवलिंग स्थापित करके अभिषेक करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 3, 11, 12, 19, 20, 28, 29, 30

वृश्चिक–माह का प्रथम सप्ताह लाभदायक है। परिस्थितियाँ अनुकूल रहेंगी। कमीशन एजेंट के कार्य में लाभ होगा, यात्रा लाभदायक रहेगी। मनोवांछित सफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। रास्ते में किसी से वाद-विवाद न करें। क्रोध पर नियंत्रण रखें। दुविधा में फंस सकते हैं, बदनामी हो सकती है। कार्यों को सोच-समझकर करें। रुके हुये रुपये वसूल होंगे। प्रेम में सफलता मिलेगी। तीसरे सप्ताह में कोई अनहोनी घटना हो सकती है। किसी के बहकावे में न आयें, नुकसान होगा। भाइयों के मध्य जायदाद का बंटवारा शांति के साथ हो जायेगा। बिना वजह फालतू बातों में ध्यान न दें। शत्रु नुकसान पहुंचा सकते हैं, सावधान रहें। बाहरी यात्रा करने पर धन लाभ होगा। इस माह हनुमान दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-3, 4, 5, 13, 14, 22, 30, 31

धनु–माह का प्रारम्भ कष्टकारी है। बाधाएं महसूस करेंगे। वाहन चलाने में सावधानी बरतें। स्वयं सोच-समझकर कार्य करें। विरोधी परेशान करेंगे। बुद्धि एवं विवेक से काम लें। विद्यार्थी वर्ग कम्प्यूटर के क्षेत्र में प्रगति करेंगे। परिवार में अशांति का वातावरण बनेगा। मानसिक चिंताएं बढेंगी। आवश्यक खर्च बढेंगे। माह के मध्य में आर्थिक स्थिति ठीक होगी। नया व्यवसाय शुरु करने से बचें। यात्रा कष्टदायक रहेगी। किसी को रुपये उधार न दें। राह भटक सकती है। सभी पर विश्वास न करें। भाइयों से मतभेद दूर होगा। जीवनसाथी के साथ मधुरता का वातावरण बनेगा। रिश्तेदारों से अनबन हो सकती है। अचानक कोई जिम्मेदारी उठानी पड़ सकती है। आपकी वाणी की मधुरता रुकावटों को दूर कर देगी। आप महालक्ष्मी की कोई भी साधना सम्पन्न करें।

शुभ तिथियाँ-6, 7, 18, 15, 16, 23, 24, 25

मकर–माह का आरम्भ संतोषप्रद है। पुत्र सहयोग करेगा। परेशानियों से मुक्ति मिलेगी। कर्मचारी वर्ग की ऑफिस में नोकझोक हो सकती है। कोई झूठा आरोप भी लगा सकता है। इस समय के निर्णय भविष्य में अच्छा फल देंगे। मन खुश रहेगा, जिम्मेदारियाँ बढेंगी। कोई अप्रिय समाचार मिल सकता है।

सर्वार्थ सिद्धि योग	-	अक्टूबर 2, 4, 6, 7, 11, 19, 24।
रवियोग	-	अक्टूबर 8, 19, 21, 25, 26, 30
रवि पुष्य योग	-	11.10.20 (सूर्योदय से रात्रि 01.19 बजे तक)

आलस्य से दूर रहें। आप का व्यवहार सभी के साथ अच्छा रहेगा। परिवार में सुखमय वातावरण रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को वांछित सफलता मिलेगी। किसी घनिष्ट मित्र से मुलाकात होगी। तीसरे सप्ताह में टेंशन हो सकती है। किसी की साजिश के कारण कानून के दायरे में फंस सकते हैं। आखिरी सप्ताह की अन्तिम तारीखें अनुकूल नहीं हैं। न चाहते हुये भी समस्यायें आयेंगी। आपको झुकना पड़ेगा। मित्र भी साथ नहीं देंगे। किसी के बहकावे में न आयें। आप भैरव दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-8, 9, 10, 17, 18, 25, 26, 27

कुम्भ–माह का प्रारम्भ उत्तम है। सुख के साधनों में वृद्धि होगी। सोचे गये कार्य पूर्ण होंगे, आत्मविश्वास बढ़ेगा। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में रुचि से लगा रहेगा। इस समय किया गया सौदा लाभ देगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें, संतान कहे में नहीं रहेगी। किसी महत्वपूर्ण कागज पर सोच-समझकर ही हस्ताक्षर करें। आर्थिक उन्नति होगी। माह के मध्य में कोई भी कार्य सोच-विचार कर ही करें अन्यथा नुकसान हो सकता है। किसी वाद-विवाद में नहीं पड़ें अन्यथा आप ही दोषी माने जायेंगे। सगे-सम्बन्धियों से तनाव हो सकता है। अपने ही नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। जीवनसाथी का साथ व्यापार में भी मिलेगा। सरकारी कर्मचारियों का मनचाहा ट्रांसफर हो सकता है। आप गणपति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 11, 12, 19, 20, 28, 29, 30

मीन–माह का प्रथम सप्ताह अच्छा है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। खुशी का वातावरण रहेगा। अचानक धन लाभ हो सकता है। परिवार में सभी के साथ मधुर सम्बन्ध रहेंगे। वाहन सावधानीपूर्वक चलायें। किसी घटना को लेकर परेशान होंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। यात्रा हो सकती है। माह के मध्य में विघ्न-बाधाएं दूर होंगी। संतान पक्ष की ओर से प्रसन्नता मिलेगी। विद्यार्थीगण यश अर्जित करेंगे। यह समय थोड़ा अनुकूल नहीं है, दूसरों की परेशानियों से चिंतित होंगे। कोई गलत कदम न उठायें, जिम्मेदारियों का बोझ आयेगा। आमदनी की अपेक्षा खर्च अधिक रहेगा। अन्तिम दिनों में आर्थिक उन्नति होगी शत्रु पक्ष आपकी खुशहाली से ईर्ष्या करेंगे। मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आप कमला महाविद्या दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-3, 4, 5, 13, 14, 21, 22, 30, 31

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

01.10.20	गुरुवार	अश्विन पूर्णिमा-पुरुषोत्तम मास
13.10.20	मंगलवार	पुरुषोत्तमा एकादशी
17.10.20	शनिवार	शरद नवरात्रि प्रा.
21.10.20	बुधवार	सरस्वती आवाहन दिवस
23.10.20	शुक्रवार	दुर्गाष्टमी
25.10.20	रविवार	दशहरा
27.10.20	मंगलवार	पापाकुंशा एकादशी

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

 ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

बार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (अक्टूबर 4,11,18,25)	दिन 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 04.30 तक रात 07.36 से 09.12 तक 11.36 से 02.00 तक
सोमवार (अक्टूबर 5,12,19,26)	दिन 06.00 से 07.30 तक 09.00 से 10.48 तक 01.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
मंगलवार (अक्टूबर 6,13,20,27)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
बुधवार (अक्टूबर 7,14,21,28)	दिन 06.48 से 11.36 तक रात 06.48 से 10.48 तक 02.00 से 04.24 तक
गुरुवार (अक्टूबर 1,8,15,22,29)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.48 से 12.24 तक 03.00 से 06.00 तक रात 10.00 से 12.24 तक
शुक्रवार (अक्टूबर 2,9,16,23,30)	दिन 09.12 से 10.30 तक 12.00 से 12.24 तक 02.00 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 01.12 से 02.00 तक
शनिवार (अक्टूबर 3,10,17,24,31)	दिन 10.48 से 02.00 तक 05.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सङ्क ल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

अक्टूबर 2020

11. आज सूर्योदय से रवि पुष्य योग है। कोई भी साधना सम्पन्न करें या गुरु मंत्र का अधिक से अधिक मंत्र जप करें।
12. आज निखिल स्तवन के प्रथम श्लोक का हिन्दी सहित पाठ करके जाएं।
13. हनुमान चालीसा का एक पाठ करके जाएं।
14. प्रात:काल उठते ही पूर्व की ओर मुंह करके ॐ ऐश्वर्याय: नम: का 11 बार उच्चारण कर भगवती लक्ष्मी का ध्यान करें।
15. आज सद्गुरुदेव के समक्ष घी का दीपक जलाएं।
16. आज तुलसी के पौधे के नीचे घी का दीपक जलायें।
17. पत्रिका में प्रकाशित माँ दुर्गा की साधना करें। आज नवरात्रि का प्रथम दिन है।
18. आज निम्न मंत्र का 1 माला मंत्र जप करके जाएं-'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै।'
19. आज पुन: उपरोक्त मंत्र करने के बाद ताम्र पत्र में रखे जल को पूरे घर में छिड़कें।
20. आज निम्न मंत्र का 51 बार उच्चारण करके जाएं-'ह्रीं'।
21. आज सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर निखिल स्तवन के 1-10 श्लोक का पाठ करें।
22. प्रात: 4 माला गुरु मंत्र करके जाएं।
23. आज पत्रिका में प्रकाशित अष्टमी की साधना करें।
24. प्रात: माँ दुर्गा के समक्ष 'ॐ नम: दुर्गे दुर्गे रक्षणि स्वाहा' बोलते हुए 5 लाल पुष्प चढ़ायें।
25. आज भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें।
26. दो रुद्राक्ष (न्यौछावर 42/-) अपनी किसी मनोकामना के साथ शिव मन्दिर में चढ़ायें।
27. आज किसी असहाय को भोजन करायें।
28. प्रात: 'ॐ ह्री ह्रीं ह्रीं ॐ' का 11 बार उच्चारण करके जाएं।
29. आज सुबह गुरु पादुका पूजन करके जाएं।
30. आज माँ लक्ष्मी के सम्मुख घी का दीपक जलायें।
31. प्रात: निम्न मंत्र का 11 बार जप करके जाएं-ॐ शनिश्चराय नम:।

नवम्बर 2020

1. कार्तिक मास प्रारम्भ, निम्न मंत्र का जप करके जाएं-'ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ'।
2. आज गायत्री मंत्र की 1 माला जप करके भोजन ग्रहण करें।
3. बजरंग गुटिका (न्यौ-120/-) धारण करें। शत्रु बाधा समाप्त होगी।
4. माता पार्वती की आरती करके जाएं।
5. प्रात: गुरु पादुका पूजन सी.डी. का श्रवण करें।
6. बगलामुखी गुटिका (न्यौ. 150/-) धारण करें।
7. आज पक्षियों को दाना डालें।
8. प्रात:कालीन उच्चरित वेद ध्वनि सी.डी. का श्रवण करें।
9. प्रात: स्नान कर गुरु पूजन कर कायाकल्प गुटिका (न्यौ. 210/-) धारण करें।
10. बेसन के लड्डू का भोग हनुमान मन्दिर में लगायें।

जीवन मे हम कई कारणों से व्यथित रहते हैं और धीरे-धीरे यह व्यथा रोग का रूप ले लेती है। यह व्यथा सामाजिक हो या किसी अन्य प्रकार की, हमारे दैनिक जीवन में इनका प्रभाव हमारे शरीर पर भी पड़ता है।

आज के प्रदूषित वातावरण में पूर्ण स्वस्थ रहना तो एक आश्चर्यजनक घटना है, प्रदूषण के कारण विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न होने लग गये हैं, न केवल शारीरिक अपितु मानसिक भी।

इनमें से विभिन्न प्रकार के रोगों का कोई स्थाई इलाज नहीं है, वरन ये रोग दवाओं के माध्यम से दबा दिये जाते हैं या फिर रोग को उत्पन्न करने वाले कीटाणुओं को दवाओं के माध्यम से निक्रिय कर देते हैं, लेकिन पुनः कुछ समय बाद दूषित वातावरण पाकर वह रोग पुनः कुछ समय बाद दूषित वातावरण पाकर वह रोग पुनः उभर आता है या फिर दवाओं के नियमित प्रयोग सेअनेक व्याधियां उत्पन्न हो जाती हैं, जिससे एक प्रकार से रोगों की श्रृंखला निर्मित हो जाती है, एक रोग समाप्त होता है, कि दूसरे रोग के लक्षण दिखने लग जाते हैं। वर्तमान चिकित्सा कुछ इस प्रकार की ही है।

लेकिन हम पूर्वकाल की ओर लौटें, तो हम पायेंगे, कि उस समय लोग वर्तमान समय से ज्यादा स्वस्थ थे, वे न केवल स्वस्थ थे अपितु प्रत्येक व्यक्ति अपनी पूर्ण आयु पूरे हिम्मत, जोश और उमंग के साथ जीता था, लेकिन वर्तमान युग में 40 या 45 वर्ष पूरा करते ही व्यक्ति में धीरे-धीरे जीवन की आशा क्षीण हो जाती है। 60 वर्ष की आयु तक, तो वह स्वयं वृद्ध तथा जर्जर अवस्था में पहुंच जाता है, उसके अन्दर का जोश, उमंग, उल्लास समाप्त हो जाता है, वह सिर्फ देह की समाप्ति की प्रतीक्षा करने लगता है। मानसिक रूप से भी वह स्वयं को अशक्त तथा असहाय अनुभव करने लगता है।

13.11.2020

धन्वन्तरी सिद्धि प्रयोग

एक विलक्षण प्रयोग

धन्वन्तरी

जो देवताओं में भी वैद्य है और प्राणियों के समस्त रोगों को दूर करने में अद्वितीय है, एक गोपनीय दुर्लभ सिद्धिप्रद प्रयोग

जो पहली बार पत्रिका के पन्नों पर अंकित हो रहा है।

आज मानव इस प्रकार जीवन जी रहा है, कि उसे ज्ञात ही नहीं होता है, कब उस पर यौवनकाल आता है, कब उसकी शैशवावस्था समाप्त हो जाती है, कब वह प्रौढ़ बन जाता है। यदि सर्वेक्षण किया जाए तो मानव के अन्दर का उल्लास, जोश मात्र 30 या 35 वर्ष की अवस्था तक ही रहता है।

लेकिन हम यदि अपने पूर्वजों को देखें, तो वे 100 वर्ष की आयु पूर्ण करके भी थके नहीं, जीवन से निरुत्साहित नहीं हुए।

आखिर क्या कारण है, कि हमारे पूर्वज दीर्घायु होते थे, उनकी कार्य क्षमता आज के व्यक्ति से कहीं अधिक थी, क्योंकि उनके पास ऐसी चिकित्सा पद्धति थी, जिसका वे प्रयोग कर अपनी बीमारियां ठीक कर लेते थे। ऐसा तो नहीं है, कि वे रोगग्रस्त नहीं होते थे, रोग तो पहले भी थे। भगवान कृष्ण के दो पुत्रों को कुष्ठ रोग हुआ था, जिसे उन्होंने मंत्रों के माध्यम से समाप्त किया।

आज भी आदिवासी क्षेत्रों में जहां आधुनिक सुविधायें नहीं पहुंच सकी हैं, वहां पर रोगों का इलाज मंत्रों के माध्यम से तथा उनके अपने प्रयोगों के माध्यम से होता है तथा वे प्रयोग पूर्ण रूप से प्रभावी होते हैं।

लेकिन चिकित्सा विज्ञान इसको स्वीकार कर पाने में असमर्थ है। वह मंत्र शक्ति के उपयोग को भली प्रकार से नहीं जान पाया है। मंत्र तथा साधना बल से जर्जर देह ने भी अपने आपको पूर्ण रूप से युवा बना लिया है।

अभी भी कुछ ऐसी साधनाएं हैं, जिनको सम्पन्न कर आज भी संन्यासी जन शून्य कन्दराओं में रहने के बाद भी स्वस्थ रहते हैं। उनके पास ऐसी ही साधनाओं में एक अद्वितीय रोग मुक्ति हेतु साधना है **'धन्वन्तरी सिद्धि प्रयोग'**।

जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति समस्त प्रकार के रोगों से दूर रह सकता है। यह प्रयोग हमारे ऋषियों की ओर से हमें वरदान स्वरूप प्राप्त हुआ है। यह प्रयोग एक अत्यन्त उच्च कोटि के योगी के द्वारा प्राप्त हुआ है। उन्होंने बताया, कि यह प्रयोग अत्यन्त विलक्षण प्रयोग है। धन्वन्तरी अपने काल के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक व आयुर्वेदज्ञ रहे हैं। धन्वन्तरी ने अपने काल में भयानक से भयानक रोगों को समाप्त किया है। उन्होंने यह भी बताया है, कि अनेक ऋषियों, संन्यासियों ने इस साधना को सम्पन्न कर अपने आपको निरोगी रखा।

इस साधना को सम्पन्न करने वाला व्यक्ति सदैव ही प्रसन्न और जोशीला तथा उत्साहित रहता है, उसकी कार्य क्षमता बढ़ जाती है तथा रोग उसके पास नहीं फटकते हैं।

प्रयोग विधि

इस प्रयोग में आवश्यक सामग्री 'धन्वन्तरी यंत्र', 'अश्मिनी' तथा 'धन्वन्तरी माला' है।

यह साधना 13.11.2020 को सम्पन्न की जा सकती है या फिर शुक्ल पक्ष की एकादशी को यह साधना सम्पन्न करें। यह साधना तीन दिनों की है तथा 13.11.20 को इसे आरम्भ करें। यह साधना सम्पन्न करने वाला साधक तीनों दिन एक समय अन्न ग्रहण करे तथा फलाहार लें। साधक यदि साधना सम्पन्न करने के लिये एक बार आसन पर बैठे, तो फिर मंत्र जप पूर्ण करके ही आसन से उठे। यदि बीच में उठे, तो पुनः हाथ-पैर-मुंह धोकर ही आसन पर बैठे। साधना करते समय मन एकाग्रचित्त ही रखो। साधक यथा सम्भव कम बोले।

साधक जिस स्थान पर साधना करे, उस स्थान को साफ, स्वच्छ करे तथा स्वयं भी स्नान कर पीले वस्त्र धारण करे। साधक स्वयं के लिये भी पीले रंग का ऊनी आसन ले।

पीले रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर धन्वन्तरी यंत्र को स्थापित करे, यंत्र का पूजन पंचोपचार विधि से करे।

यंत्र की बायीं ओर कुंकुम से रंग कर चावल की ढेरी बनाकर, उस पर 'अश्मिना' स्थापित करे। 'अश्मिना' का पूजन कर, घी का दीपक लगावे।

धन्वन्तरी का ध्यान करते हुए पुष्प यंत्र पर अर्पित करे-

सत्यं च येन निरतं रोगं विधूतं,
अन्वेषितं च सविधिं आरोग्यमस्य।
गूढं निगूढं औषध्यरूपम,
धन्वन्तरीं च सततं प्रणमामि नित्यं।।

धन्वन्तरी माला से निम्न मंत्र की नित्य 31 माला मंत्र जप करें-

मंत्र

।। ऊँ रं रुद्र रोगनाशाय धन्वन्तर्यै फट्।।

जिस दिन साधना समाप्त हो रही हो, उस दिन ही मिट्टी के पात्र में यंत्र, अश्मिना माला रख कर उसमें दो मुट्ठी चावल रखें और उसे नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री 450/-

भारतीय जन जीवन का आधार

और दिव्य ग्रन्थ है,

विजयदशमी के अवसर पर

रामचरित मानस मन्त्र-सिद्धि

गोस्वामी तुलसीदास कृत यह ग्रन्थ मात्र राम की पुनीत जीवन गाथा ही नहीं है, अपितु इसकी प्रत्येक चौपाई मंत्रमय है, मंत्र स्वरुप है, साक्षात् मंत्र है।

जिस प्रकार मंत्र-साधना से कार्य सिद्धि होती है, उसी प्रकार रामचरित मानस की चौपाइयों के सम्पुट जप एवं स्मरण से कार्य सिद्धि होती है।

यह लेख इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है, प्रातःकाल संबंधित चौपाई के स्मरण से भी कार्य सिद्धि होती देखी गई है।

साधकों एवं रामभक्तों के लिए एक मनन योग्य उत्तम लेख है।

रामचरित मानस पाठ

तुलसीदास कृत रामचरित मानस सम्पूर्ण विश्व में विख्यात और अद्भुत ग्रन्थ है, जिसमें श्री राम की अद्भुत अनुपम और आदर्श लीलाओं का वर्णन होने के साथ-साथ उसमें भक्ति की महिमा को प्रमुखता से वर्णित किया है। इस प्रकार रामचरित मानस में जो भी दोहे, चौपाइयां, सोरठे आदि हैं, वे अपने आप में राममय हैं और इस प्रकार से ये स्वतः ही साक्षात् मंत्र स्वरूप हैं।

रामचरित मानस काव्यमय होने के साथ ही साथ विविध रसोत्पादक है। इस काव्य धारा में गोस्वामी संत तुलसीदास के ह्रदय की अनुपम भक्ति की अजस्र धारा प्रवाहित हुई है, इसी कारण रामचरित मानस की प्रत्येक पंक्ति स्वतः ही प्राणवान, सशक्त और वेगवान है और इसीलिए मानस की कुछ विशिष्ट चौपाइयों और दोहों को वेद मंत्र के समान पवित्र और मंत्र रूप माना है, जिनका उच्चारण, मनन, चिन्तन, सम्पुट आदि से साधकों को आशातीत लाभ होता है।

जब भी कोई पंक्ति ईश्वर के अंश से प्राणवान हो जाती है, तो उसमें एक विशिष्ट चैतन्यता और दिव्यता आ जाती है, रामचरित मानस की प्रत्येक पंक्ति और प्रत्येक शब्द भगवान के गुणानुवाद का साक्षात् रूप है इसीलिए इन शब्दों में दिव्यता का समावेश हुआ है और यह प्राकृत ग्रन्थ से ऊपर उठ कर एक विशेष महिमा मंडित हो सका है। मानस की प्रत्येक चौपाई और प्रत्येक छन्द साधक के लिए मंत्र स्वरूप है अतः साधक को जिस कामना पूर्ति में रुचि हो, उसे मंत्र रूप में उसी चौपाई, दोहे या सोरठे को सम्पुट के समान प्रयोग करना चाहिए, इससे उसे निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है।

यह बात केवल अनुमान पर आधारित नहीं हैं, अपितु वर्तमान समय में भी मानस के कई भक्त और साधक हैं उनको इस प्रकार सम्पुट देकर पाठ करने से विशेष लाभ हुआ है तथा कामना पूर्ति में सफलता प्राप्त हुई है।

रामचरित मानस भक्ति प्रधान ग्रन्थ होने के साथ-साथ साधना प्रधान ग्रन्थ भी है। इसमें लोक कल्याणकारी मंत्र हैं और इन मंत्रों का सकाम और निष्काम दोनों प्रकार से अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है।

साधना सामग्री : राम यंत्र एवं भगवान राम का चित्र

सर्वप्रथम साधक को प्रातःकाल उठकर लगभग नौ बजे स्नान आदि से निवृत्त होकर आसन पर बैठ जाना चाहिए सामने आसन बिछाकर श्री रामजी की मूर्ति या चित्र स्थापित करना चाहिए। यह चित्र राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान युक्त हो। फोटो के सामने पीले वस्त्र पर पुष्प बिछाकर राम यंत्र की स्थापना करें और सामने धूप एवं दीप लगाएं।

इसके सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर पूर्ण विधि-विधान के साथ श्री राम की पूजा करनी चाहिए और अपने सामने रामचरित मानस ग्रन्थ रखकर उसकी भी पूजा करनी चाहिए। इस बात का ध्यान रहे कि ग्रन्थ के पास ही हनुमान जी के लिए लाल वस्त्र का आसन बिछा हो, ऐसा कहा जाता है कि जहां पर भी रामचरित मानस का पाठ होता है, उस पाठ को सुनने के लिए श्री हनुमान जी निश्चित रूप से उपस्थित रहते हैं।

इसके बाद रामचरित मानस का पाठ प्रारम्भ करना चाहिए और दूसरे दिन उसी समय अर्थात् 24 घण्टों में पूरे रामचरित मान का पाठ सम्पन्न हो जाना चाहिए। इस पाठ में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि पाठ का क्रम टूटे नहीं और 24 घण्टे अनवरत रूप से पाठ होता रहे। यह भी ध्यान रखना चाहिए, कि जो प्रधान ग्रन्थ है और प्रधान ग्रन्थ के आगे जो आसन बिछा हुआ है, उस आसन पर कोई न कोई अवश्य बैठा रहे और पाठ करे। यह पाठ सस्वर और उच्चारण युक्त होना चाहिए।

दूसरे दिन लगभग नौ बजे जब पाठ समाप्त हो तो श्री राम और हनुमान की भक्ति भाव से आरती होनी चाहिए।

निष्काम पाठ में मात्र पाठ होता है परन्तु सकाम पाठ में प्रत्येक विश्रान्ति के बाद सम्पुट दिया जाता है। यह सम्पुट एक बार बोला जाता है।

कुछ ग्रन्थों में मानस पाठ समाप्ति के बाद हवन करने का भी विधान है। सम्पूर्ण पाठ होने के बाद 108 आहुतियां सम्पुट मंत्र की दी जाती हैं। इस यज्ञ में अष्टांग हवन किया जाता है। अष्टांग हवन के लिए निम्न बारह पदार्थ प्रयुक्त किये जाते हैं–1. तिल, 2 जौ, 3. चावल, 4. चीनी, 5. श्वेत चन्दन चूर्ण, 6. तगर, 7. अगर, 8. कपूर, 9. केसर, 10, नागर मोथा, 11. पंच मेवा गोला, 12. घृत। इस प्रकार रामचरित मानस मा अखण्ड पाठ निश्चय ही सिद्धि और सफलता देने में सहायक है। मैं नीचे विविध कामनाओं की पूर्ति के लिए कुछ मानस मंत्र दे रहा हूं, जिससे सामान्य साधक लाभ उठा सके। प्रत्येक आहूति लगभग 10 ग्राम वजन की होनी चाहिए। यदि साधक चाहे तो इससे कम वजन की आहूति भी छोड़ सकता है। सम्पुट मंत्र पूरा होने के बाद अन्त में 'स्वाहा' या 'श्री रामाय स्वाहा' शब्द बोलकर आहूति अग्नि में छोड़नी चाहिए। अन्त में पूर्ण आहूति शुद्ध घी में देनी चाहिए।

धन प्राप्ति के लिए

जिमि सरिता सागर महूं जाही,
जद्यपि ताहि कामना नाहीं।
तिमि सुख सम्पत्ति विनहि बोलाए,
धरमशील पहिं जाहिं सुभाए।।

दरिद्रता मिटाने के लिए

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के।
कामद धन दारिद दवारि के।।

वैभव सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए

जै सकाम नर सुनहि जे गावहिं
सुख सम्पत्ति नाना विधि पावहि।।

जीविका प्राप्ति के लिए

बिस्व भरन पोषण कर जोई।
ताकर नाम भरत अस होई।।

विघ्ननाश के लिए

सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही।
राम सुकृपा बिलोकहिं जेही।।

सर्व विपत्ति नाश के लिए

राजिव नयन धरें धनु सायक।
भगत विपत्ति भंजन सुखदायक।।

संकट नाश के लिए

दीन दयाल विरुद सम्भारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी।।

भूत–प्रेत बाधा निवारण के लिए

प्रनवऊ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान धन।
जासु हृदय आगार बसहि राम सर चाप धर।।

अपयश नाश के लिए

रामकृपा अवरेब सुधारी।
विबुध धारि भई गुनद गोहारी।।

शत्रुता नाश के लिए

बैर न कर काहू सन कोई।
रामप्रताप विषमता खोई।।

मुकदमे में विजय प्राप्ति के लिए

पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि विवेक विज्ञान निधाना।।

आकर्षण के लिए

जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलह न कछु संदेहूं।।

विद्या प्राप्ति के लिए

गुरु गृह गए पढन रघुराई।
अलप काल विद्या सब आई।।

यात्रा की सफलता के लिए

प्रविसि नगर कीजै सब काजा।
हृदय राखि कौसलपुर राजा।।

विवाह होने के लिए

तब जनक पाइ वसिष्ठ आयसु ब्याह साजि संवारि के।
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुंअरि लई हंकारि के।।

प्रभु कृपा प्राप्ति के लिए

भगत बछल प्रभु कृपा निधाना।
श्री विश्वास प्रगटे भगवाना।।

मोक्ष प्राप्ति के लिए

सत्य संध छांडे पर लच्छा।
काल सर्प जनु चले सपच्छा।।

ऐश्वर्य एवं राजपद प्राप्ति के लिए

लगे संवारन सकल सुर वाहन विविध विमान।
होइ सगुन मंगल सुभद करहि अपछरा गान।।

भक्ति प्राप्ति के लिए

भगत कल्पतरू प्रनत हित कृपा सिन्धु सुखधाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहू दया करि राम।।

परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी।
कवि उर अजिर नचावहिं बानी।।

मोरि सुधारिहि सो सब भांती।
जासु कृपा नहिं कृपा अघाती।।

मनोरथ प्राप्ति के लिए

मोर मनोरथ जानहु नीके।
बसहु सदा उर पुर सब ही के।।

इच्छित वर प्राप्ति के लिए

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषि न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।।

सर्व मनोरथ प्राप्ति के लिए

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहि जे नर अरु नारी।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहि त्रिसरारि।।

श्रेष्ठ पति प्राप्ति के लिए

गावहि छवि अवलोकि सहेली।
सिय जयमला राम उर मेली।।

पुत्र प्राप्ति के लिए

प्रेम मगन कौसल्या निसिदिन जात न ज्ञान।
सुत सनेह बस माता बाल चरित कर गान।।

सर्व सुख प्राप्ति के लिए

सुनहिं विमुक्त बिरत अरु बिषई।
लहहिं भगति गति संपति नई।।

संशय, शोक, भय नाश के लिए

संसय, शोक निबिड़ तम भनहि।
दनुज गहन घन दहन कृसानुहि।।
जनकसुता समेत रघुवीरहि।
कस न भजहु मंजन भव भीरहि।।

ऋद्धि–सिद्धि प्राप्ति के लिए

साधक नाम जपहिं लय लाएं।
होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएं।।

सर्व रोग निवृत्ति के लिए

रघुपति भगति संजीवन मूरी।
अनुपान श्रद्धा मति पूरी।।

सर्व पीड़ा नाश के लिए

जासु नाम भव भेषज हरन घोर त्रय शूल।
सो कृपालु मोहि तो पर सदा रहउ अनुकूल।।

साधना सामग्री: 240/-

की रात्रि में सम्पन्न किये जाने वाले

कुछ लघु प्रयोग

जो दैनिक जीवन की छोटी-छोटी समस्याओं को सुलझाने में आश्चर्यजनक रूप से सहायक हैं।

अग्र लिखित प्रयोगों को यदि आप दीपावली की रात को सम्पन्न न कर सकें तो कार्तिक मास में 30.11.2020 तक भी सम्पन्न कर सकते हैं।

1. घर के छोटे बच्चे अत्यंत संवेदनशील होने के कारण अनेक दूषित प्रभावों से ग्रस्त होकर कमजोर पड़ते चले जाते हैं और डॉक्टरों को कोई कारण समझ में नहीं आता, ऐसी दशा में दीपावली की रात्रि में एक सिद्ध बजरंग बाहु लेकर उनके सिर पर से सात बार घुमाकर दक्षिण दिशा में फेंक आना चाहिए। साधना सामग्री-90/-

2. बहुधा घर-परिवार का कोई बड़ा सदस्य भी यदि अनायास ज्वर में ग्रस्त रहता है या कोई ऐसा रोग घेर लेता है जिससे उसके चेहरे से मुस्कान चली जाती है, तब दीपावली की रात्रि में एक मंत्र सिद्ध तांत्रोक्त फल निम्न मंत्र का 7 बार उच्चारण कर उसके गले में धारण करा देना लाभदायक रहता है।

   मंत्र : ॐ ऐं सर्व रोगाय निवृतिं ह्री फट्।

   साधना सामग्री- 90/-

3. मूठ प्रयोगों की समाप्ति के लिए दीपावली की रात्रि से अन्य सबल कोई मुहूर्त ही नहीं। साधक को चाहिए कि वह एक मुट्ठी उड़द के दानों पर दस हकीक पत्थर रख निम्न मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करें और दसों हकीक पत्थर सहित उड़द के दानों को घर से कहीं दूर फेंक आए।

   10 हकीक पत्थर-210/-

   मंत्र : ॐ ह्लीं फट्

4. दीपावली की रात्रि में जहाँ व्यवयासी वर्ग के साधक लक्ष्मी-गणेश पूजन आदि सम्पन्न करते हैं, वहीं उन्हें चाहिए कि एक गौरी-शंकर रुद्राक्ष लेकर उसका पूजन निम्न मंत्र से कर अपने व्यवसाय स्थल पर स्थापित कर दें, जिससे पूरे वर्षभर के लिए निरापद हो सकें।

   मंत्र : ॐ क्रीं श्रीं फट्

   अगले वर्ष पुन: यही प्रयोग नए गौरी शंकर रुद्राक्ष के साथ सम्पन्न करें एवं पुराना विसर्जित कर दें।

   -साधना सामग्री- 150/-

5. इसी प्रकार चिरमी के दानों से उत्तर भारत का कौन व्यक्ति परिचित नहीं, किन्तु इसके तांत्रोक्त लाभ भी हैं। यदि चिरमी के सात दाने लेकर और निम्न मंत्र से ग्यारह बार सम्पुरित कर घर या दुकान के आगे दीपावली की रात्रि में बिखेर दें, तो प्रत्येक

प्रकार की आकस्मिक बाधा समाप्त होती ही है।

मंत्र : ॐ ह्लीं फट्

-साधना सामग्री- 70/-

6. यदि भूमि खरीदी हुई है, लेकिन उस पर भवन निर्माण का कार्य हो पाना असम्भव लग रहा है, तो साधक भूमि के मध्य में 'वसुधा लक्ष्मी यंत्र' को एक हाथ भर गड्ढा खोदकर अपने हाथों से दीपावली के दिन स्थापित कर दें तो निर्माण शीघ्र ही प्रारम्भ होता है।

-साधना सामग्री- 240/-

7. चिरमी वशीकरण में भी सहायक पदार्थ है। यदि सात चिरमी के दानों को सामने रख दीपावली की रात्रि में आधे घण्टे निम्न मंत्र द्वारा मंत्र-सिद्ध कर लें और सम्बन्धित व्यक्ति के घर के बाहर बिखेर आएं तो वह अपने अनुकूल होता है।

मंत्र : ॐ ह्लौं नम:

-साधना सामग्री- 70/-

8. वशीकरण के क्षेत्र में पारद की विशेषता भी स्वयं सिद्ध है, यदि कोई साधक पारद मुद्रिका धारण कर लें, तो उससे मिलने वाले स्वत: ही सम्मोहित होने लग जाते हैं। -साधना सामग्री- 210/-

9. यदि किसी स्त्री को गर्भ ठहरता हो किन्तु बार-बार गर्भपात हो जाता हो या आशंका हो कि गर्भ बंधन प्रयोग किसी ने द्वेषवश करवा दिया है, तब कुटिला नामक गुटिका उसकी कमर में काले धागे के साथ बांध देनी चाहिए। -साधना सामग्री- 150/-

10. समस्त प्रकार के स्त्री रोगों की शांति के लिए स्त्री को मूंगा माला धारण करना अनेक प्रकार से लाभदायक रहता है। -साधना सामग्री- 200/-

11. एक मधुरूपेण रुद्राक्ष लेकर, नीले कपड़े पर काजल से शत्रु का नाम लिख, उसके साथ नीले धागे से बांध कर श्मशान में अथवा निर्जन स्थान पर फेंक आने से शत्रु संकट में लाभ मिलता है।

-साधना सामग्री- 150/-

12. मोती शंख अपने-आप में लक्ष्मी का प्रतीक माना गया है। दीपावली की रात्रि में एक मोती शंख लेकर, उसे केसर से रंग कर तिजोरी में रखना शुभ माना गया है। -साधना सामग्री- 120/-

13. कार्यालय में सहयोगियों से न बन रही हो अथवा अधिकारी वर्ग रुष्ट हो तब दीपावली की रात्रि में एक सुमुखी के समक्ष निम्न मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण कर गले में धारण करने से मनोवांछित लाभ मिलता है।

मंत्र : ॐ ग्लौं नम:

-साधना सामग्री- 150/-

14. यदि दीपावली की रात्रि में घी का दीपक जला कर मुख्य द्वार पर स्थापित करें और 1 लक्ष्मी आकर्षण तांत्रोक्त फल उस दीपक के घी में डाल दें तो लक्ष्मी का निश्चित आगमन होता है।

-साधना सामग्री- 60/-

15. मुकदमेबाजी आदि राज्य संकटों में धन का अत्यधिक व्यय होते रहने पर दीपावली की रात्रि में एक धूमावती गुटिका लेकर अपनी समस्या एक कागज पर लिख कर, उसके साथ बांध कर किसी नदी, तालाब या कुएं में डाल देने पर छुटकारा मिलता ही है। -धूमावती गुटिका- 150/-

16. यदि एक धूमावती गुटिका लें और एक कागज पर सिन्दूर से शत्रु या तंत्र प्रयोग करने वाले का नाम लिखकर गुटिका पर लपेट कर दीपावली की रात्रि में किसी निर्जन स्थान पर गाड़ दें तो उसका स्तम्भन हो जाता है। -धूमावती गुटिका- 150/-

17. दीपावली की रात्रि में कुंकुम से पीले कपड़े पर निम्न प्रकार से यंत्र बनाकर प्रत्येक में एक-एक श्री चक्र स्थापित करें तथा घर के प्रत्येक सदस्य को उसका दर्शन करने को कहें, तो आगामी वर्ष मंगलमय होता है।

यंत्र

नि	ह	उ
स	ति	व

-एक श्री चक्र- 31/-

18. एक चीलन लेकर उसे दीपावली की रात्रि में घर की

चौखट के ऊपर बांधना, पूरे वर्षभर के लिए अपने-आप को सुखी कर लेना है।

-साधना सामग्री- 90/-

19. किसी विशेष व्यक्ति या किसी विशेष दशा से मन में भय रहता हो, तो **चीलन** ले कर, उसे काले कपड़े में बांध कर गले में धारण करना पूर्णतया लाभदायक रहता है।

-साधना सामग्री- 90/-

20. कैसी भी लक्ष्मी साधना हो, यदि गले में **शंख माला** धारण कर सम्पन्न की जाए, तो आश्चर्यजनक सफलता मिलती ही है।

-साधना सामग्री- 150/-

22. अक्सर यह सुनने में आता है, कि दुश्मनीवश या स्वार्थ वश लोग एक दूसरे का व्यापार बांध देते हैं, जिसका सामना व्यापारी वर्ग को अक्सर करना पड़ता है। ऐसे टोटकों को समाप्त करने के लिए लाल रंग का वस्त्र बिछाकर हल्दी से त्रिभुज बनाकर उसके प्रत्येक कोण में एक-एक पुष्प रखें। एक प्लेट में स्वस्तिक का निर्माण कर **'बाधा निवारण यंत्र'** उसके ऊपर रखें। 'यंत्र' का संक्षिप्त पूजन कर, त्रिभुज में रखें प्रत्येक पुष्प पर अपना दाहिना हाथ रखते हुए निम्न मंत्र का 21-21 बार जप करें-

।। ॐ ह्रीं व्यापार बाधा निवारणाय फट्।

मंत्र जप पूर्ण होने पर पुष्प तोड़कर पर **बाधा निवारण यंत्र** चढ़ा दें। इस प्रकार जब आखिरी पुष्प भी चढ़ जाए, तो 'यंत्र' तथा समस्त पुष्प की पंखुड़ियों को सावधानी से श्मशान घाट में फेंक दें।

-साधना सामग्री- 240/-

24. लाल रंग के वस्त्र में अष्टगंध से 'श्रीं' लिखें, फिर उसमें **'तांत्रोक्त नारियल'** को बांध कर दुकान के बाहर टांगने से ग्राहक दुकान की ओर आकर्षित होगा। तीन माह बाद **'तांत्रोक्त नारियल'** को नदी में विसर्जित कर दें।

-साधना सामग्री- 150/-

25. यदि शत्रु अत्यधिक हावी हो रहा है, तो साधक यह प्रयोग सम्पन्न करें। यम द्वितीया के दिन, रात्रि को नौ बजे के बाद पांच कोयले रखकर, **'शत्रुनाश गुटिका'** रख दें, तीन दिन तक निम्न मंत्र का जप 101 बार करें-

।। ॐ क्लीं ह्रीं ऐं शत्रुनाशाय फट् ।।

जप के उपरांत रात में ही कोयले सहित 'गुटिका' को निर्जन स्थान में फेंक दें। -साधना सामग्री- 150/-

26. यदि आपका पुत्र गलत कार्यों में फंस कर घर से

विमुख होता जा रहा है, तो उसे गलत कार्यों से उबरने के लिए, मानसिक संबल प्रदान करें, साथ ही प्रयोग भी करें। मिट्टी को गूंथ कर पांच ढेरियों बनाकर मध्य में **'सम्मोहन गुटिका'** रख दें, **गुटिका** का सिन्दूर से पूजन करें, अपने पुत्र का फोटो भी रख दें। बाकी चारों ढेरियों पर क्रमश: प्रत्येक ढेरी पर निम्न मंत्र का 31 बार उच्चारण करते हुए सिन्दूर की बिंदी लगाएं-

।। ॐ ऐं सौ: ह्रीं ॐ ।।

मंत्र जप कर अपने पुत्र का फोटो उठाकर रख दें तथा बाकी चारों ढेरियों व **'सम्मोहन गुटिका'** को निम्न मंत्र का जप करते हुए क्रोधयुक्त हो दक्षिण दिशा में फेंक दें।

-साधना सामग्री- 150/-

27. यदि पति या पत्नी का आकर्षण एक दूसरे से कम होता जा रहा है, तो उनके मध्य आकर्षण बढ़ाने के लिए एक पात्र में कुंकुम से स्वस्तिक का निर्माण कर **'आकर्षिणी'** स्थापित कर दें। उस पर कुंकुम से पति या पत्नी का नाम का प्रथम अक्षर लिखें। उस पर प्रथम दिन लाल रंग के 21 पुष्प चढाते हुए निम्न मंत्र का जप करें, दूसरे दिन पीले रंग के 21 पुष्प चढाते हुए निम्न मंत्र का जप करें तथा तीसरे दिन सफेद रंग के 21 पुष्प चढाते हुए निम्न मंत्र का जप करें-

।। ॐ ह्रीं मोहिते आकर्षय नम: स्वाहा ।।

नित्य पुष्पों को एकत्र कर किसी मन्दिर में चढा दें। तीसरे दिन पुष्पों के साथ ही **'आकर्षिणी'** को मन्दिर में चढा दें।

-साधना सामग्री- 150/-

शतावरी

यूं तो शतावरी स्त्री-पुरुष दोनों के लिए ही उपयोगी व लाभप्रद गुणों से युक्त जड़ी है फिर भी यह स्त्रियों के लिए विशेष रूप से गुणकारी है।

भाव प्रकाश निघण्टु में लिखा है-

शतावरी गुरु:शीता तिक्ता स्वाद्वी रसायनी।
मेधाग्निपुष्टिदास्निग्धानेत्रयागुल्मातिसारजित्।।
शुक्रस्तन्यकरीबल्या वातपित्तास्र शोथ जित्।
महाशतावरी मेध्या हृद्या वृष्या रसायनी।।
शीतवीर्या निहन्त्यर्शो ग्रहणी यनामयान्।
तदंकुरस्त्रि दोषघ्नो लघुरर्श: त्रयापहा।।

भाषा भेद से नाम भेद-सं.-शतावरी। हि.-शतावर। म.-सतावरी। गु.-सेमूखा बं.-शतमूली। ते.-एट्टुमट्टी टेंडा। ता.-सडावरी। कन्न.-मज्जिगे गड्डे।

गुण-यह भारी, शीतल, कड़वी, स्वादिष्ट, रसायन, मधुर रस युक्त, बुद्धिवर्द्धक, अग्निवर्द्धक, पौष्टिक, स्निग्ध, नेत्रों के लिए हितकारी, गुल्म व अतिसार नाशक, स्तनों में दूध बढ़ाने वाली, बलवर्द्धक, वात-पित्त, शोथ और रक्त विकार को नष्ट करने वाली है। यह छोटी और बड़ी दो प्रकार की होती है। बड़ी महाशतावरी कहलाती है। दोनों के गुण लगभग एक समान है। महाशतावरी शीतवीर्य, ग्रहणी, अर्श तथा नेत्र रोग नाशक, मेधा तथा हृदय के लिए हितकारी, वृष्य और रसायन है। दोनों के अंकुर हलके तथा त्रिदोष, अर्श और क्षय रोग को नष्ट करने वाले होते हैं। महर्षि चरक के अनुसार शतावरी वृद्धावस्था से रक्षा करने वाली और वीर्यवर्द्धक होती है।

परिचय-आयुर्वेद ने इसे कई गुणवाचक नामों से पुकारा है जैसे बहुसुता, इन्दीवरी, सहस्रवीर्या, नारायणी, शतवीर्या, शतपदी आदि। यह लता जाति का, कांटेदार पौधा होता है जो जड़ से ही अनेक शाखाओं में फैला हुआ होता है। यूं तो इसकी पैदावार देश के सभी प्रान्तों में होती है पर उत्तर भारत में यह विशेष रूप से पैदा होता है। इसके पत्ते छोटे और सोया जैसे होते हैं। फूल छोटे और सफेद रंग के होते हैं। इसकी शाखाएं तिकोनी, चिकनी और रेखांकित होती हैं। महर्षि चरक ने इसे आयुष्य (आयु देने वाली), वृद्धावस्था दूर रखने वाली, अत्यन्त बलवीर्यवर्द्धक और स्त्रियों के स्तनों में दूध बढ़ाने वाली सर्वोत्तम औषधि बताया है। सुश्रुत के अनुसार इसकी लुगदी, दूध के साथ, सेवन करने से बवासीर नोग नष्ट होता है। इसका पाक अत्यन्त पौष्टिक और स्त्री के शरीर को सुडौल बनाने वाला होता है।

उपयोग-

इसका उपयोग विभिन्न नुस्खों में, व्याधियों को नष्ट कर शरीर को पुष्ट और सुडौल बनाने के लिए किया जाता है। जहाँ इसका उपयोग पुरुष वर्ग के लिए पौष्टिक नुस्खों में गुणकारी सिद्ध होता है वहां स्त्री-वर्ग के लिए स्तनों में दूध बढ़ाने वाली, प्रदर रोग नष्ट करने वाली, गर्भस्थ शिशु को बल पुष्टि देने वाली, फिट्स (चक्कर) आने की शिकायत दूर करने वाली और प्रसव पश्चात प्रसूता के लिए हितकारी सिद्ध होने वाली औषधि है इसीलिए इसका उपयोग गर्भकाल में की जाने वाली 'नव मास चिकित्सा' के कुछ मासों में किया जाता है जिसमें नवम मास में इसके तैल का उपयोग किया जाना सर्वाधिक महत्वपूर्ण और सुखपूर्वक प्रसव कराने में अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है। यहां इसके कुछ घरेलू प्रयोगों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

गर्भकाल-गर्भवती स्त्री के लिए आयुर्वेद ने पूरे 9 मास तक करने योग्य 'नव मास चिकित्सा' का विवरण बताया

है। इस चिकित्सा-विधान के अन्तर्गत शतावरी के चूर्ण का उपयोग दूसरे, छठे और सातवें मास में दूध के साथ और नवम मास में शतावरी साधित तैल का एनीमा लेने तथा इसमें भिगोये हुए रुई के फाहे को सोते समय योनि में रखने को बताया है। गर्भवती स्त्री को 'नव मास चिकित्सा' का सेवन अवश्य ही करना चाहिए। शतावरी साधिततैल का नवम मास में उपयोग करने से योनि-प्रदेश लचीला, पुष्ट और स्निग्ध रहता है जिससे प्रसव के समय प्रसूता को अधिक प्रसव-पीड़ा नहीं होती।

प्रदर रोग–प्रदर रोग से ग्रस्त महिला अन्य उपचार और औषधि सेवन करते हुए प्रतिदिन सुबह शाम शतावरी चूर्ण 5 ग्राम से 10 ग्राम की मात्रा में, थोड़े से शुद्ध घी में मिला कर, चाट लें और ऊपर से कुनकुना गर्म मीठा दूध पिए तो प्रदर रोग से जल्दी छुटकारा मिलने में मदद मिलती है। इसके सेवन से प्रदर रोग के कारण पैदा हुई शारीरिक कृशता (दुबला पतला होना) और निर्बलता दूर होती है तथा शरीर पुष्ट व सुडौल होता है।

स्तनों में दूध–सद्य प्रसूता या शिशू को दूध पिलाने वाली स्त्री के स्तनों में दूध पर्याप्त मात्रा में न आता हो तो शतावरी चूर्ण रात को, 5 से 10 ग्राम मात्रा में फांक कर, ऊपर से दूध पीना और दूध-दलिया खाना चाहिए।

सूखी खांसी–जच्चा-बच्चा (प्रसूता व शिशु) को यदि सूखी खांसी हो तो शतावरी चूर्ण, अडूसा के पत्ते और मिश्री समान मात्रा में लेकर कूट पीस लें और मिला लें। यह चूर्ण 10 ग्राम एक गिलास पानी में डाल कर उबालें। जब आधा गिलास पानी बचे तब छान लें और ठण्डा कर लें। इसे दिन में 3-4 बार 2-2 चम्मच प्रसूता पिए और 5-5 बूंद शिशु को अपने दूध में मिला कर पिलाए। इससे सूखी खांसी में आराम होता है।

स्वर भंग–गला खराब होने, आवाज बैठने या फट जाने पर शतावरी, वच और खिरेंटी की जड़–तीनों समान वजन में ले कर कूट-पीस कर महीन चूर्ण करके मिला लें। 5 ग्राम चूर्ण थोड़े से शहद में मिला कर दिन में 2-3 बार चाटने से लाभ होता है।

वातजन्य व्याधि–वात प्रकोप के कारण उत्पन्न हुई व्याधियों और दर्द की चिकित्सा करते हुए शतावरी साधित तैल की मालिस करने से जल्दी लाभ होता है।

विविध प्रयोग–पित्त प्रकोप और अजीर्ण होने पर इसका 5 ग्राम चूर्ण शहद के साथ सुबह-शाम चाटना चाहिए। घी में चूर्ण मिला कर सुबह शाम चाट कर दूध पीने से शारीरिक थकावट, कमजोरी, अनिद्रा, पेशाब में रुकावट, धातुक्षीणता आदि विकार नष्ट होते हैं। वात प्रकोप होने पर शतावरी चूर्ण और पीपर का चूर्ण सम भाग मिला कर 5 ग्राम मात्रा में, शहद के साथ सुबह शाम चाटने से लाभ होता है। कफ प्रकोप ओर खांसी में शतावरी पाक का सेवन लाभदायक होता है। शतावरी पाक स्त्री-पुरुष दोनों के लिए बलपुष्टिदायक होता है अत: इस पाक का सेवन आवश्यकतानुसार अवधि तक अवश्य करना चाहिए।

वाजीकरण–शतावरी चूर्ण की खीर बनाकर खाने से मनुष्य की कामशक्ति जाग्रत होती है और वीर्यवर्द्धक होती है।

अनिद्रा–दूध में शतावरी के चूर्ण की खीर बनाकर उस खीर में घी मिलाकर खिलाने से अनिद्रा के रोगी को नींद आती है।

दाह और शूल–शतावरी के रस में शहद और दूध मिलाकर प्रात:काल में पिलाने से दाह, शूल और सब प्रकार के पित्त रोग मिटते हैं।

(विशेष–प्रयोग के पूर्व अपने वैद्य की सलाह ले लें।)

ठीक समय पर सोने के लाभ

पुष्टि वर्णबलोत्साहं अग्निदीप्ति अतन्द्रिताम्।
करोति धातु साम्यं च निद्राकाले निषेविता।। –अष्टांग संग्रह सूत्र

ठीक समय पर सोने से शरीर में पुष्टि, कान्ति, बल तथा उत्साह की प्राप्ति होती है, अग्नि प्रदीप्त होती है, तन्द्रा का नाश होता है और शरीर की धातुओं की साम्यता उपलब्ध होने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है और इसकी वृद्धि होती है। समय पर न सोने यानी अधिक जागरण करने से इसके विपरीत परिणाम होता है।

Any Wednesday

Manokamna Siddhi Sadhana

WISHES AND MORE WISHES

Lord Ganpati is a deity who bestows one with the boon of fulfillment of all wishes. This is because the Lord removes all hurdles from one's life. And once this is done then there can remain no doubt that one's wishes would surely be fulfilled.

E

Everyone has wishes in life and while fulfilments of the same makes one feel elated, unfulfilled desires lead to frustration and a sense of defeat in life. It is not wrong to have wishes. Wishes help one determine particular goals in life and thus one's existence gains a definite purpose. It is wishing that makes humans different from other beings. While other living beings just exist, humans by wishing and dreaming can instil desirable changes in life. And when the same dreams come true one feels highly joyous and confident. On the other hand unfulfilled dreams make one feel depressed and low.

Our ancient scriptures have said that one should feel contented with life and have less and less desires. This is because more desires means more problems to be faced. But the same scriptures also state that Pourush or activeness in life is the greatest virtue and that one should strive for high goals. These are not paradoxical ideals. Rather they hint at the golden means in life. Hence the essence is that it is not wrong to have desires. But they should be good wishes and one should not dream of achieving something at the cost of others.

At the same time one should not nurture impossible wishes. The wishes could be hard to achieve and challenging but they should not be impossible. And if you have some such wish then you should pitch in with the best of your efforts in order to fulfill it.

But sometimes even the best of efforts do not seem to prove fruitful. In such cases one could seek the help of some divine power. And the most dynamic deity of the present age is Lord Ganesh.

It is said --

Kalou Chandi Vinaayako

In the present age of Kaliyug, Goddess Kali and Lord Ganpati are most easily pleased by the worship of a Sadhak. Lord Ganpati can help one fulfil all wishes because he is called ***Vighnaharta*** i.e. remover of all obstacles. He is also called ***Siddhi-Riddhi Dayak*** i.e. the bestower of all material and spiritual boons. Hence if you have some unfulfilled wish it would be best to worship Lord Ganpati.

On a **Wednesday** try this ritual between 4:30 and 7 am. Sit facing East having had a bath, wearing white clothes. Sit on a white mat. Cover a wooden seat with white cloth and on it place ***Shwetaark Ganpati*** a special idol of Lord Ganpati obtained from the root of the herb called *Shwet* Aak.

Offer vermilion, rice grains, jaggery and flowers to the Lord. Then offer prayers to the Guru and chant four rounds of Guru Mantra. Next light a ghee lamp and incense. After this chant the following verse praying to the Lord Ganesh for success.

Sumukhashcheik-dantashcha Kapilo Gajkarnnakah. Lambodarashcha Vikto Vighnanaasho Vinaayakah. Dhumraketur-gannaadhyaksho Bhaalchandro Gajaanan. Dwaadasheitaani Naamaani Yah Patthechhrinnuyaadap.

Then chant 21 rounds of the following Mantra with ***Siddhi Dayak rosary***.

Shreem Gam Shreem
Shriyatwam Siddhaye Phat

After this chant one round of Guru Mantra. Next day drop the rosary in a river or pond. Place the Shwetaark Ganpati at home in the worship place and worship it daily. Shwetaark Ganapati is a rare Sadhana article and having it at home means fulfilment of all desires and banishment of problems and hurdles from one's life.

Sadhana articles - 450/-

PAAP MOCHANI DIVAS
27.10.20 or Any Saturday
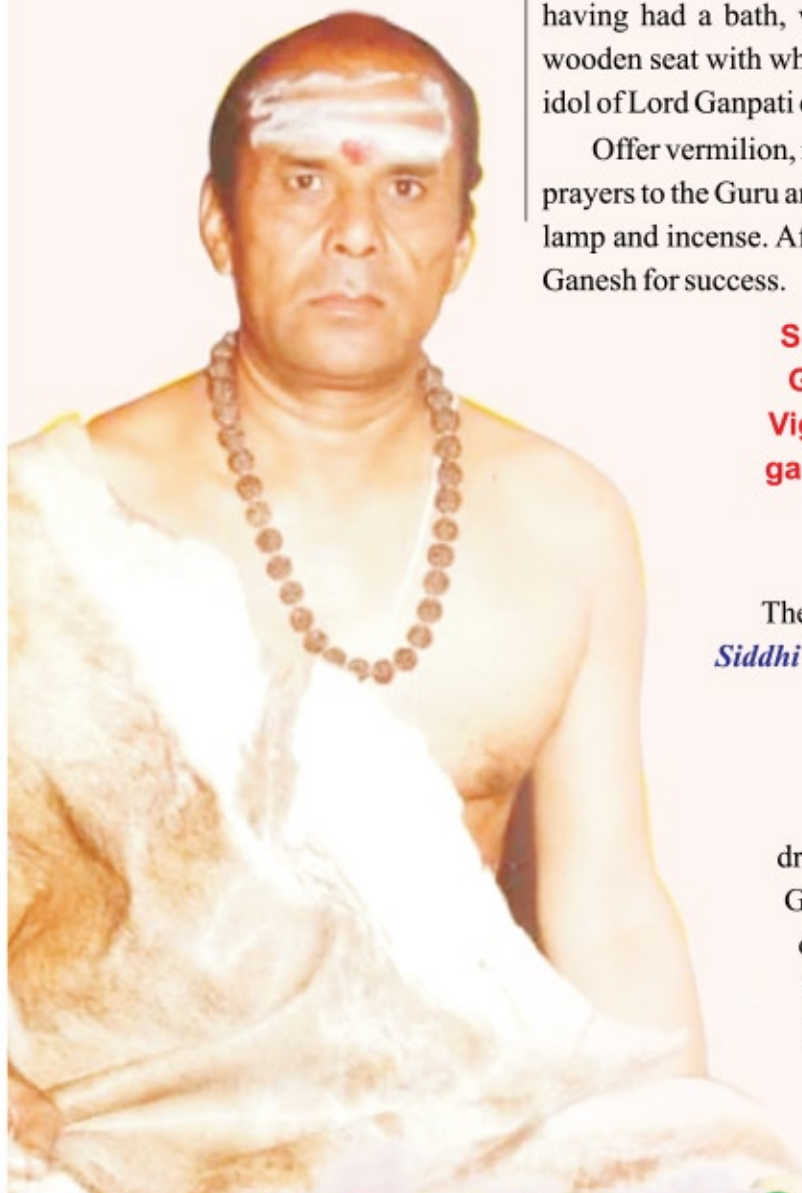
Neutralising bad Karmas!

A truly wondrous ritual that could free you of all effects of bad Karmas of past lives

and any sins that you might have committed in the present life. A sure way to banish all that is negative in you life.

Our Rishis and Yogis performed great penance and came up with the fact that each human life is not independent and it is linked to past lives. The physical body sure dies and ceases to exist, but its actions in that life continue to have an effect on future lives.

Death is not the end of things. Rather death means a new birth, a new existence in which one tries to fulfil the unfulfilled desires of the past life. In fact it is the desires that keep a soul entangled in the seemingly unending cycle of birth and death.

To be born as a human is a great chance and one must not let it go waste. Through Sadhanas and Dikshas one should try to rise spiritually, for it is only humans who can perform rituals and enter into the meditative state. Even the gods take birth as humans in order to progress spiritually through Sadhanas.

But just being born as a human is not enough. One has to endeavour, one has to try and attain the state of divinity. However most of the humans remain entangled in the world of lies, deceit, sins and then they have to suffer in the same life or the next lives due to those bad Karmas.

I have met many people who are very honest and hard working in their present lives. But there seems to be no end to their troubles. They do not even know why they are suffering so. If only they could peer into their past lives they would realise that it is the effect of bad Karmas performed by them in their past existences. If only they could realise that there are powerful Mantras through which bad Karmas can be neutralised. If only they could realise that the only way to totality in life is the path of Sadhanas. Through Mantra chanting and performance of certain rituals one could banish the effect of all past bad Karmas which create a hurdle in one's material and spiritual progress. And there is no better Sadhana for this purpose than *Paapaankush Sadhana*.

Paapaankush means to curb one's sins and their effects. This Sadhana is a potent means of banishing all that is negative in one's life and ensuring success, wealth, fame or spiritual progress that one desires.

This is a truly amazing Sadhana which should be tried on any Saturday. In the night have a bath and wear clean yellow clothes. Make a mark with vermilion on the forehead. Sit on a yellow mat facing west. Cover a wooden seat with yellow cloth, Bathe the ***Paap Nivarann Yantra*** with water and wipe it dry. Make a mark on it with vermilion. Place a copper plate on the wooden seat and in it place the Yantra. Place a ***Paapaankush Gutika*** before the Yantra. Offer flowers, vermilion and rice grains. Light a ghee lamp. Offer vermilion, rice grains, flowers on the picture of the Guru and chant on round of Guru Mantra.

Then stand up and with ***Paapmochini rosary*** chant one round each of the Mantra ***Ayeim Shreem Hreem Kleem*** facing the West, North, East and South. Then sit facing the West and chant eleven rounds of the following Mantra.

Om Sarva Paap Naashaay
Hraam Hreem Namah

After the Sadhana chant one more round of Guru Mantra and pray to the Guru to bless you. After Sadhana drop the Yantra, Gutika and rosary in a river or pond.

Sadhana Articles - 510/-

जीवन जीना कोई बहुत महत्वपूर्ण नहीं है, जीवन तो प्रत्येक मनुष्य जी लेता है। ठीक उसी प्रकार से जिस प्रकार से पशु अपना जीवन जी लेते हैं। अन्तर इतना है कि मनुष्य चाहे तो अपने जीवन की प्लानिंग कर सकता है। अपने जीवन को संतुलित बनाने के लिए योजना बना सकता है। अपने बिगड़ते जीवन को व्यवस्थित करने हेतु दैवीय सहायता प्राप्त कर सकता है और अपने जीवन को उन ऊँचाइयों पर पहुँचा सकता है जहाँ मानव का स्वप्न है। मार्कण्डेय पुराण में ऋषि ने भगवती दुर्गा की साधना करते हुए कहा है कि तुम सही रूप में शाकम्भरी बनकर मेरे जीवन में आओ जिससे कि मैं अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण संतुलन प्राप्त कर सकूं। मेरा जीवन पुत्र-पौत्र, धन-धान्य, यश-समृद्धि से परिपूर्ण हो और किसी प्रकार की न्यूनता न रहे और तुम्हारी कृपा से शत्रु परास्त हों और जीवन शान्तिपूर्ण हो। यह दीक्षा जीवन में वरदानस्वरूप है, जिसमें माँ दुर्गा अपने शाकम्भरी रूप से साधक की रक्षा करती है और जीवन में समृद्धि प्रदान करती है।

उपहारस्वरूप प्राप्त करें

शक्तिपात युक्त दीक्षा

शाकम्भरी दीक्षा

योजना केवल नवरात्रि के नौ दिवसों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- **नारायण मंत्र साधना विज्ञान,** जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 66 पर देखें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)
फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

पूज्य सद्गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

8890543002

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।

परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण साधना
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 37219989876

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/-

काली यंत्र एवं माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

लक्ष्मी यंत्र एवं माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

सूक्तियाँ

- अंधेरे को कोसने की बजाय हम स्वयं एक दीप जलाएं,
- तेज चाल से प्रात: सैर करना सबसे सरल व्यायाम है।
- हर रोग कुदरत के बनाये नियम की अवमानना का परिणाम है।
- यदि प्रार्थना में माँग है तो वह केवल धोखा है, व्यापार है।
- जहाँ समर्पण है वहाँ स्वर्ग है जहाँ कुतर्क है वहाँ नर्क है।
- सोचें हम सदैव उन्हें ही प्रेम करते हैं जो हमारी प्रशंसा करते हैं।
- जो मानसिक शारीरिक रूप से फिट है वही सफल है।
- स्वाभाविक मौत से ज्यादा लोग चिंता में मरते हैं।
- क्रोध पागलपन से प्रारंभ होता है और पश्चाताप पर समाप्त।
- शांति तभी मिल सकती है जब हम जल में कमलवत रहें।
- जिसका स्वभाव ही हमेशा दु:खी रहना है उसे भगवान भी सुखी नहीं कर सकता।
- आज एक परमार्थ रूपी बीज डाल दोगे तो एक वृक्ष उपहार में मिलेगा।
- प्रभु ने जो दिया है उसे पाकर वाह-वाह करे हाय-हाय नहीं।
- पल भर का क्रोध सारा भविष्य बिगाड़ सकता है सावधान रहें।
- अजीब स्थिति है जो व्यस्ततम हैं, वह अच्छे कार्यों हेतु समय निकाल ही लेते हैं
- सभी में प्रभु के दर्शन करें।
- जिन्हें कार्य नहीं करना है तो वे न जाने कितने तरह के बहाने खोज लेते हैं।

दिल्ली कार्यालय – सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 September, 2020
Posting Dadte : 21-22 September, 2020
Posting Office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

आपकी पूज्य गुरूदेव से पिछले कई महीनों से मुलाकात नहीं हो सकी है। हम आशा करते हैं कि नवम्बर मास में पूज्य गुरूदेव से आपकी मुलाकात हो सकेगी, तब तक आप गुरूधाम जोधपुर कार्यालय के फोन नम्बरों पर शाम 4.00 से शाम 5.30 बजे के बीच पूज्य गुरूदेव से वार्तालाप कर आशीर्वाद एवं समस्या का समाधान प्राप्त करते रहें।

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002